हिन्दी : कक्षा-10

मॉडल सेट-01

समय 3 घंटा 15 मिनट **पूर्णांक-100**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देशः-

(क) परीक्षार्थी यथासम्भव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।
(ख) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ग) उत्तर देते समय शब्द-सीमा का ध्यान रखें।
(घ) दाहिनी ओर अंक निर्दिष्ट किये गये हैं।
(च) प्रश्न-पत्र को ध्यान से पढ़ें। इसके लिए 15 मिनट का अतिरिक्त समय दिया जा रहा है।

प्रश्न 1. (अ) निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दें। **6X2=12**

एक गुरुकुल था, विशाल और प्रख्यात। उसके आचार्य भी बहुत विद्वान थे। एक दिन आचार्य ने सभी छात्रों को आँगन में एकत्रित किया और उनके सामने एक समस्या रखी कि उन्हें अपनी कन्या के विवाह के लिए धन की आवश्यकता है। कुछ धनी परिवार के बालकों ने अपने घर से धन लाकर देने की बात कही। किन्तु गुरुजी ने कहा कि इस तरह तो आपके घर वाले मुझे लालची समझेंगे। फिर गुरुजी ने एक उपाय बताया कि सभी विद्यार्थी चुपचाप अपने-अपने घरों से धन लाकर दें तो मेरी समस्या सुलझ जाएगी लेकिन यह बात किसी को पता नहीं चलनी चाहिए। सभी छात्र तैयार हो गये। इस तरह गुरुजी के पास धन आना शुरू हो गया। एक बालक कुछ नहीं लाया। गुरुजी ने उससे पूछा कि क्या उसे गुरु की सेवा नहीं करनी चाहिए? उसने उत्तर दिया, 'ऐसी कोई बात नहीं है, लेकिन मुझे ऐसी कोई जगह नहीं मिलती जहां कोई न देख रहा हो'। गुरुजी ने कहा "कभी तो ऐसा समय आता होगा जहां कोई न देख रहा हो गुरुजी का भी ऐसा आदेश था। तब वह बालक बोला "गुरुदेव ठीक है, पर ऐसे स्थान में कोई रहे-न-रहे मैं तो वहाँ रहता हूँ। कोई दूसरा देखे-न-देखे मैं स्वयं तो अपने कुकर्मों को देखता हूँ। "आचार्य ने गले लगाते हुए कहा तू मेरा सच्चा शिष्य है क्योंकि तूने गुरु के कहने पर भी चोरी नहीं की। यह तेरे सच्चे चरित्र का सबूत है।" तू ही मेरी कन्या का

BiharboardQuestionpaper.com

सच्चा और योग्य वर है। गुरुजी ने अपनी कन्या का विवाह उससे कर दिया। विद्या ऊँचे चरित्र का निर्माण करती है और उन्नति के शिखर पर ले जाती है।

(क) आचार्य ने अपने शिष्यों को बुलाकर क्या कहा?

(ख) कुछ न ला सकने वाले शिष्य पर आचार्य क्यों प्रसन्न हुए?

(ग) आचार्य को किस धन की खोज थी? वह उन्हें किस रूप में मिला?

(घ) गुरुकुल के आचार्य किस प्रकार के व्यक्ति थे?

(च) लोग उन्नति के शिखर पर कैसे पहुँचते हैं?

(छ) इस गद्यांश का उचित शोर्षक दें।

(ब) निम्नलिखित गद्यांश को पढ़ कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दें। 4 X 2=8

मनुष्य उत्सवप्रिय होते हैं। उत्सवों का एकमात्र उद्देश्य आनंद की प्राप्ति है। यह तो सभी जानते हैं कि मनुष्य अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए आजीवन प्रयत्न करता रहता है। आवश्यकता की पूर्ति होने पर सभी को सुख होता है पर उस सुख और उत्सव के आनंद में बड़ा फर्क है। आवश्यकता भाव सूचित करती है। उससे यह प्रकट होता है कि हममें किस बात की कमी है। मनुष्य जीवन ही ऐसा है कि वह किसी भी अवस्था में यह अनुभव नहीं कर सकता कि अब इसके लिए कोइ आवश्यकता नहीं रह गई है। एक के बाद दूसरी वस्तु की चिंता उसे सताती रहती है, इसलिए किसी एक आवश्यकता की पूर्ति से उसे जो सुख होता है, वह अत्यंत क्षणिक होता है क्योंकि तुरंत ही दूसरी आवश्यकता उपस्थित हो जाती है। उत्सव में हम किसी बात की आवश्यकता का अनुभव नहीं करते। यह आनंद जीवन का आनंद है, काम का नहीं।

(क) मनुष्य किसलिए आजीवन प्रयत्न करता रहता है?

(ख) उत्सवों का एकमात्र उद्देश्य क्या है?

(ग) मनुष्य को एक के बाद दूसरी चिंता क्यों सताती रहती है?

(घ) आवश्यकतापूर्ति का सुख क्षणिक क्यों होता है?

प्रश्न-2 दिये गये संकेत बिन्दुओं के आधार पर किसी एक विषय पर लगभग 250 शब्दों में निबंध लिखें। 10

(अ) बिहार तब और अब

(क) भूमिका

(ख) अतीत

BiharboardQuestionpaper.com

(ग) विभाजन

(घ) सामाजिक-आर्थिक एवं शैक्षणिक प्रगति

(च) उपलब्धियाँ।

(ब) कश्मीर समस्या

(क) समस्या का इतिहास

(ख) अलगाववादियों की भूमिका

(ग) लोगों की दशा

(घ) समस्या का निदान

(च) उपसंहार।

(स) खेल का महत्त्व

(क) भूमिका

(ख) खेल के प्रति दृष्टिकोण

(ग) खेल के प्रकार

(घ) महत्त्व

(च) लाभ-हानि, उपसंहार।

प्रश्न-3 अपने मित्र के पास एक पत्र लिखें जिसमें विद्यालय में आयोजित की गई विज्ञान-प्रदर्शनी का वर्णन हो। 5

अथवा

महल्ले में फैले डेंगू के प्रकोप से बचाने के लिए नगर-निगम के मेयर के पास समुचित उपाय हेतु एक आवेदन- पत्र लिखें।

प्रश्न-4 कारक के कितने भेद होते हैं? भेदों का वर्णन पहचान-चिह्नों सहित करें। 5

अथवा

शब्द किसे कहते कहते हैं? उत्पत्ति के विचार से शब्द के भेदों का वर्णन करें।

प्रश्न-5 रिक्त स्थानों की पूर्ति करें। 5x1= 5

(क) किसी भी वर्ण का उच्चारण...............के भिन्न अंगों से होता है।

(ख) मेरी निर्धनता पर दया करो (भाववाचक संज्ञा चुनें)........।

(ग) प्रतिकूल का विलोम.............. होता है।

(घ) 'प' का उच्चारण-स्थान......................होता है।

BiharboardQuestionpaper.com

(च) तेल..........................वाचक संज्ञा है।

प्रश्न-6 निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करें: **5x1= 5**

(क) उसका प्राण सूख गया है।

(ख) सबलोग अपनी राय दें।

(ग) मोहन को काट कर सेब खिलाओ।

(घ) घड़ा पानी से खचाखच है।

(च) राम ने रोटी खाया।

प्रश्न-7 स्तम्भ 'अ' और स्तम्भ 'ब' का सही मिलान सामने-सामने लिखकर करें।

6x1= 6

स्तम्भ-अ	**स्तम्भ-ब**
1. नागरी लिपि	क. जीवनानंद दास
2. स्वदेशी	ख. हजारी प्रसाद द्विवेदी
3. लौट कर फिर आऊँगा	ग. सुजाता
4. नाखून क्यों बढ़ते हैं	घ. राम विलास शर्मा
5. नगर	च. गुणाकर मूले
6. परंपरा का मूल्यांकन	छ. बद्रीनारायण प्रेमधन

निर्देश :- प्रश्न संख्या 8 से 19 तक के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 30 शब्दों में दें।

प्रश्न-8 डुमराँव की महत्ता किस कारण से है? **3**

प्रश्न-9 लेखक द्वारा नाखूनों को अस्त्र के रूप में देखना कहाँ तक संगत है? **3**

प्रश्न-10 सच्चे लोकतंत्र की स्थापना के लिए लेखक ने किन विशेषताओं को आवश्यक माना है? **3**

प्रश्न-11 पाठ में किन प्रमुख पहलुओं स जाति-प्रथा को हानिकारक प्रथा के रूप में दिखाया गया है? **3**

प्रश्न-12 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दें-

मेरे मतानुसार इस प्रकार की शिक्षा-पद्धति में मस्तिष्क और आत्मा का उच्चतम विकास संभव है। इतनी ही बात है कि आजकल की तरह प्रत्येक दस्तकारी केवल यांत्रिक ढंग से न सिखा कर वैज्ञानिक ढंग से सिखानी पढ़ेगी, अर्थात् बच्चे को प्रत्येक प्रक्रिया का कारण जानना चाहिए। मैं चाहता हूँ कि सारी शिक्षा किसी दस्तकारी या उद्योगों के द्वारा दी जाय।

BiharboardQuestionpaper.com

(क) यह गद्यांश किस पाठ से उद्धृत है? 1

(ख) इस पाठ के लेखक कौन हैं? 1

(ग) आज की शिक्षा पद्धति कैसी होनी चाहिए? 3

प्रश्न-13 कृष्ण को चोर क्यों कहा गया है? कवि का अभिप्राय स्पष्ट करें 3

प्रश्न-14 छायाएँ दिशाहीन सब ओर क्यों पड़ती हैं? स्पष्ट करें। 3

प्रश्न-15 वृक्ष और कवि में क्या सम्वाद होता था? 3

प्रश्न-16 शानदार लबादा किसका गिर जाएगा और क्यों? 3

प्रश्न-17 निम्नलिखित पद्य को पढ़ कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दें-

लेकिन होता भूडोल बवण्डर उठते हैं,
जनता जब को पाकुल हो भृकुटी चढ़ाती है:
दो राह समय के रथ का घर्घर नाद सुनो,
सिहांसन खाली करो कि जनता आती है।

हुँकारों से महलों की नींव उखड़ जाती है।
साँसों के बल से ताज हवा में उड़ता है
जनता की रोके राह समय में ताव कहाँ?
वह जिधर चाहती, काल उधर ही मुड़ता है।

(क) कविता और कवि का नाम लिखें। 1

(ख) अबोध जनता जब कुपित होती है तो क्या होता है? 1

(ग) क्या जनता का वेग किसी के रोके रुकता है? 3

प्रश्न-18 सीता अपने ही घर में क्यों घुटन महसूस करती है? 3

प्रश्न-19 पप्पाति कौन थी और वह शहर क्यों लाई गई थी? 3

प्रश्न-20 भारत के संयुक्त परिवार को आप उपयोगी मानते हैं या नहीं तर्कसहित अपने विचार लिखें। 4

BiharboardQuestionpaper.com

उत्तर मॉडल सेट-01

उत्तर 1 (अ)

(क) आचार्य ने अपने शिष्यों को बुलाकर कहा कि मुझे अपनी कन्या के विवाह के लिए धन चाहिए। तुम सभी चुपचाप अपने-अपने घर से धन ला कर दोगे तो मेरी समस्या सुलझ जाएगी।

(ख) कुछ न ला सकने वाले शिष्य पर आचार्य इसलिए प्रसन्न हुए क्योंकि वह आत्मज्ञानी और सच्चरित्र था।

(ग) आचार्य को चरित्रधन की खोज थी। उन्हें यह धन उस शिष्य के रूप में प्राप्त हुआ जिसने अपने आचार्य की बात न मानकर अपनी आत्मा के आदेश का पालन किया।

(घ) गुरुकुल के आचार्य आत्मज्ञानी, सच्चरित्र और विद्वान थे।

(च) लोग (आत्म) विद्या और सात्विक चरित्र के माध्यम से उन्नति के शिखर पर पहुँचते हैं।

(छ) चरित्र-निर्मात्री विद्या-सफलता का आधार।

उत्तर 1. ब

(क) मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आजीवन प्रयत्न करता रहता है।

(ख) उत्सवों का एकमात्र उद्देश्य आनंद-प्राप्ति होता है।

(ग) मनुष्य अभावों में जीता है। एक अभाव की पूर्ति होते ही दूसरा अभाव अपनी पूर्ति की माँग करने लगता है। मनुष्य अपनी एक आवश्यकता की पूर्ति करता है कि दूसरी आवश्यकता आ धमकती है। वह उसकी पूर्ति के लिए चिंतित हो उठता है।

(घ) आवश्यकता-पूर्ति का सुख क्षणिक होता है क्योंकि एक आवश्यकता की पूर्ति से प्राप्त सुख के पश्चात् दूसरी आवश्यकताओं का जन्म होता है और मनुष्य लगातार उनकी श्रृंखला में फँस कर स्थायी सुख से वंचित हो जाता है।

BiharboardQuestionpaper.com

उत्तर 2 (अ)बिहार तब और अब

बिहार भारत का वह भू-भाग है जिसके बिना भारत के इतिहास की कल्पना भी नहीं की जा सकती। राजनीति, धर्म, पांडित्य, साहित्य और अन्यान्य क्षेत्रों में इसकी महती भूमिका है।

बिहार ने ही चाणक्य जैसा अर्थशास्त्री, चंद्रगुप्त और अशोक जैसा राजा, महावीर और बुद्ध जैसा धर्म-प्रवर्तक, आर्यभट्ट जैसा वैज्ञानिक शेरशाह जैसा शासक, जीवक जैसा वैद्यराज, कुँवर सिंह जैसा साहसी वीर दिया है। गाँधी के असहयोग की भूमि भी यही है। कभी यह खनिज-सम्पदा से भी परिपूर्ण थी लेकिन हाल में झारखंड के अलग राज्य बनने से वह सम्पदा कम हो गई है। ऐसे सम्पन्न राज्य में एक समय ऐसा आया कि यहाँ कि ख्याति अपहरण, रंगदारी, बुरी सड़कें, अशिक्षा गरीबी, कुपोषण, बेरोजगारी के समुद्र के रूप में होने लगी। लोग शाम होते हो अपने घरों में दुबक जाते, किसी को पता नहीं रहता था कि कब आकर कोई रंगदारी माँगेगा, सड़कों में गड्ढ, गरीबी का क्या कहना, बेरोजगारों की तो गिनती ही नहीं । लोग दूसरे राज्यों में रोजगार के लिए भागने लगे, उद्योग धंधे बंद हो गये, बिहारी कहलाने में शर्म आती थी।

किन्तु पिछले कुछ दिनों में बदलाव दिखाई देने लगा है। चार-पाँच वर्षों के दौरान जो हुआ, उसकी सराहना सर्वत्र हुई है। पंचायतों और नगर-निकायों में महिलाओं के पचास प्रतिशत आरक्षण से माहौल बदल गया है। नारियाँ सिर उठाकर चलने लगीं हैं । वे पंच, संरपच, मुखिया एवं निगम-पार्षद हैं। लड़कियों को पोशाक और साइकिल देने की सरकार की योजनाओं से स्कूल में छात्राओं की संख्या में वृद्धि हुई है। विद्यालय-भवन बन रहे हैं। सूबे मं सड़कों और पुल-पुलियों का निर्माण हो रहा है।

अब लोग रात में घ्मने, बाजार आदि जाने से परहेज नहीं करते। अपहरण और रंगदारी की घटनाओं में कमी आयी है।

रोजगार के क्षेत्र में भी काम हुआ है। लाखों शिक्षकों की नियुक्ति हुई है। नरेगा के अंतर्गत भी काम मिलने लगा है। स्वरोजगार योजना के अंतर्गत मछलीपालन, मुर्गीपालन का कारोबार शुरू हुआ है। बैंक भी ऋण देने लगे हैं। चिकित्सा के क्षेत्र

BiharboardQuestionpaper.com

में भी सुधार हुआ है। अस्पतालों में जीवन रक्षक औषधियाँ लोगों को उपलब्ध होने लगी हैं। डॉक्टरों की भी अस्थायी बहाली हो रही है।

यह सब हुआ है किन्तु अभी बहुत कुछ नहीं हुआ है। उद्योगों की स्थापना के मामले में हम पिछड़े ही हुए हैं। बिजली उत्पादन आवश्यकता से कम है। डॉक्टरों की कमी है, बेरोजगारी अभी बरकरार है। बिहारी प्रतिभा का लोहा दुनिया मानती है किन्तु इसे सँवारने के लिए उच्च और तकनीकी संस्थाओं की जरूरत है। बाढ़ से निजात अभी तक नहीं मिली है। किन्तु इन सबके बावजूद जो हुआ है, जो हो रहा है उससे उम्मीद बँधती है कि हमारा बिहार एक दिन अवश्य अपने अतीत के गौरव को पुन: प्राप्त करेगा।

उत्तर 2. (ब) कश्मीर समस्या

भारत का ताज कश्मीर आज भारत के गले की हड्डी बन गया है जिसकी आड़ में भारत को तबाह करने का घिनौना खेल चल रहा है।

सन् 1947 में जब देश का विभाजन धर्म के नाम पर हुआ तो कश्मीर का विलय भारत के साथ हो गया। चूँकि कुछ इलाकों में मुसलमानों की संख्या अधिक थी इसलिए पाकिस्तानी सेना ने वहाँ के लोगों की आड़ में भारतीय भू-भाग पर आक्रमण कर दिया। इसके पहले कि भारतीय सेना कारवाई करती कश्मीर का एक भू-भाग दुश्मनों के हाथ आ गया। बाद में युद्ध-विराम हुआ किन्तु तब तक कुछ भू-भाग आक्रामकों के हाथ आ चुका था, अतएव कश्मीर समस्या आ खड़ी हुई जो आज तक नहीं सुलझी।

कश्मीर में कुछ अलगावादो तत्व हैं जो पूरे कश्मीर को भारत से अलग करना चाहते हैं। उनका कहना है कि कश्मीर हमारा है। कट्टरपंथी लोग मजहब के नाम पर इसको हवा देते हैं। और पाकिस्तानी सेना इनकी सहायता करती है। ये लोग भारत की सीमा में आकर तोड़-फोड़, आगजनी और हत्या करते हैं। इनके उत्पात के चलते आज कश्मीर के लाखों हिन्दू बेघर हो कर झुग्गी-झोपड़ियों में नारकीय जीवन बसर करते हैं या राहत शिविरों में किसी तरह जीवन-यापन कर रहे हैं। वहाँ के अलगाववादी तत्वों ने वहाँ एक समुदाय विशेष के लोगों का जीना मुश्किल कर रखा है। कश्मीर जो कभी धरती का स्वर्ग कहा जाता था, आज बदतर हो गया है। कोई

BiharboardQuestionpaper.com

भी नहीं जानता कि वहाँ आंतकवादियों की गोली कब किसके चीथड़े उड़ा देगी। वे आये दिन हमारे सुरक्षाबलों पर भी निशाना बनाते रहते हैं। आम नागरिकों और सैनिकों की हत्या आम बात हो गई है।

इस आंतकवाद का असर यह पड़ा है कि वहाँ का जन-जीवन बुरी तरह हिल गया है। उद्योग-धंधे चौपट हो गये हैं और पर्यटन-उद्योग सबसे अधिक प्रभावित हुआ है। ऐसा नहीं है कि सभी लोग उन तत्वों के साथ हैं परन्तु उनकी कमजोरी है कि वे खुलकर सामने नहीं आते।

कश्मीर-समस्या का कारण हमारी राजनीतिक इच्छाशक्ति का अभाव भी है जिसके कारण कठोर कार्रवाई नहीं होती। वोट की राजनीति के कारण कठोर कदम नहीं उठाये जाते।

किन्तु अब समय आ गया है कि कश्मीर में घुसे आतंकवादियों और पाकिस्तानियों से इतनी सख्ती से निपटा जाय कि उनकी पीढ़ियाँ भी इधर रुख करने का नाम न लें। अगर तत्काल ऐसा नहीं हुआ तो राजनेताओं को देश कभी क्षमा नहीं करेगा।

उत्तर 2. (स) खेल का महत्त्व

खेल प्राय: सभी जीवों को प्रिय है। कहा भी गया है कि ईश्वर ने लीला के लिए ही सृष्टि का निर्माण किया। यह लीला क्या है? खेल ही तो है।

प्राचीन ग्रंथों में अवतारी पुरुषों को भी बचपन में 'खेलत खात' दिखाया गया है, चाहे राम हों या कृष्ण। बाद में जब जीवन-संघर्ष कठिन हो गया तो लोगों ने अपने बच्चों को बताना शुरू किया कि 'खेलोगो कूदोगे होगे खराब, पढ़ोगे लिखोगे होगे नवाब'। नतीजतन लोग किताबी कीड़ा बनते गये और स्वास्थ्य चौपट कर लिया लेकिन अब समय बदल रहा है। पहले हुई गलती को लोगों ने सुधार लिया है और खेल-खेल में शिक्षा देने की व्यवस्था की गई है। प्रारंभिक कक्षाओं में यही विधि अपनाई गई है और इसके अच्छे परिणाम निकले हैं।

खेल अनेक प्रकार के होते हैं। कुछ खेल मैदान में खेले जाते हैं, कुछ घरों में और कुछ पानी में। क्रिकेट, वॉलीबॉल, फुटबॉल, कबड्डी, पोलो, हॉकी आदि खेल मैदान में खेले जाते हैं, और कैरम, शतरंज लूडो आदि प्राय: घरों में खेले जाते हैं।

BiharboardQuestionpaper.com

बैडमिंटन, टेनिस, बास्केटबॉल आदि मैदान में भी खेले जाते हैं और डनडोर स्टेडियम में भी।

खेल का महत्त्व अनेक दृष्टियों से है। पहली बात तो यह है कि इसमें भाग-दौड़ करने से शरीर चुस्त-दुरुस्त होता है और स्फूर्ति आती है जो स्वस्थ रहने के लिए आवश्यक है। दूसरी बात यह है कि खेल से प्रतियोगिता की भावना पैदा होती है जो जीवन में जरूरी है। तीसरी बात यह है कि इससे परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होती है और त्याग की भावना का भी विकास होता है क्योंकि खिलाड़ी अपने लिए ही नहीं पूरी टीम के लिए खेलता है और कभी अपने विद्यालय, नगर, राज्य और देश के लिए भी। उसका सम्मान, स्थान या देश से भी जुड़ जाता है। सबसे बड़ी बात यह है कि खेल से समय और आत्म-नियंत्रण का भाव उत्पन्न होता है।

स्पष्ट है कि खेल का हमारे जीवन में व्यक्तित्व एवं सर्वांगीण विकास के लिए महत्त्वपूर्ण स्थान है। यही कारण है कि राज्य सरकारें इस पर ध्यान देने लगीं हैं। राष्ट्रीय स्तर पर खेलनीति बनने लगी है। इसके फलस्वरूप खेल धीरे-धीरे व्यवसाय का रूप लेने लगे हैं। क्रिकेट, टेनिस और फुटबॉल के खिलाड़ी करोड़ों का वारा न्यारा करने लगे हैं। क्रिकेट, टेनिस में जीत-हार पर जुआबाजी होने लगी है। और खिलाड़ी जीत हार के लिए पैसे लेने लगे हैं कुछ खिलाड़ी तो जीत के लिए नशीली दवाएँ भी लेते हैं। यह दुखद स्थिति है और खेल-भावना के विपरीत और शर्मनाक है।

वस्तुतः खेलों को खेल के रूप में स्वास्थ्य एवं जीवन-विकास को सीढ़ी के रूप में ही लेना चाहिए। इसी में खेल की सार्थकता है।

उत्तर 3-

प्रिय रमेश **बिक्रम, पटना**

नमस्ते । **28-01-2016**

आशा करता हूँ तुम स्वस्थ एवं सानंद होगे। तुमने मेरे विद्यालय में आयोजित विज्ञान-प्रदर्शनी के संबंध में जानकारी लेनी चाही है। मैं इस पत्र में संक्षेप में तुम्हें यह जानकारी दे रहा हूँ।

मेरे विद्यालय में 22 जनवरी 2016 से 24 जनवरी 2016 तक विज्ञान-प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस आयोजन में विद्यालय के संस्थापक और शिक्षकों ने अपनी-अपनी

BiharboardQuestionpaper.com

भूमिका का निर्वाह किया। इसमें छात्रों ने भी बढ–चढ़कर हिस्सा लिया। तुम्हें मालूम ही है कि मेरे विद्यालय के प्रधानाचार्य ने 22 जनवरी को विज्ञान–प्रदर्शनी के शुभारंभ का प्रस्ताव विद्यालय विकास समिति के सम्मुख रखा जिसे सर्वसम्पति से स्वीकार किया गया।

22 जनवरी 2016 को जिलाधिकारी ने प्रदर्शनी का उद्‌घाटन किया और विज्ञान–प्रदर्शनी की उपयोगिता पर संक्षिप्त भाषण किया। प्रदर्शनी देखने काफी लोग आये थे। इनमें निकटवर्ती गाँवों के किसानों तथा आसपास के विद्यालयों के शिक्षकों–छात्रों की संख्या काफी थी। विभिन्न कमरों में तरह–तरह के वैज्ञानिक उपकरण लगाये गये थे जिनके संबंध में वहाँ उपस्थित प्रशिक्षित छात्र लोगों को जानकारी दे रहे थे। वातावरण में अभूतपूर्व उत्साह था। मेरे विद्यालय में इस तरह के आयोजन का यह पहला मौका था। यह लगातार तीन दिनों तक चला।

24 जनवरी को इस प्रदर्शनी का समापन हुआ। इसकी सफलता पर प्रधानाचार्य ने सबको धन्यवाद दिया। उन्होंने समापन दिवस पर यह संकल्प लिया कि अगले वर्ष 2017 में इसका आयोजन और विस्तार से किया जाएगा।

शेष कुशल है। आदरणीया चाचीजी एवं चाचाजी को मेरा सादर प्रणाम कहना। पत्रोत्तर अवश्य देना।

पता– रमेश सिन्हा
कंपनीबाग, मुजफ्फरपुर (बिहार)

तुम्हारा अभिन्न मित्र
किशोर

उत्तर 3 अथवा

सेवामें,

नगर प्रमुख (मेयर)

पटना नगर–निगम, पटना।

विषय: कंकड़बाग महल्ला में फैले डेंगू के संबंध में।

महाशय,

हम कंकड़बाग महल्ला के नागरिक आपका ध्यान महल्ले में फैले डेंगू के प्रकोप की ओर आकृष्ट करना चाहते हैं। विगत एक सप्ताह से महल्ले में फैले डेंगू के प्रकोप से हम

BiharboardQuestionpaper.com

सभी महल्लावासी त्रस्त हैं। इस बीमारी से बचाव तथा निवारण की कोई समुचित व्यवस्था नहीं होने के कारण हम सभी किसी बड़े अनिष्ट की आशंका से भयभीत हैं।

हमारा आग्रह ह कि डेंगू के प्रकोप ले लोगों को बचाने के लिए महल्ले में सफाई की समुचित व्यवस्था कराई जाय और नगर स्थित सरकारी अस्पताल को यह आदेश दिया जाय कि वहाँ बीमारी का इलाज करा रहे लोगों पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाय। इसके लिए हम सदैव आपके आभारी रहेंगे।

धन्यवाद सहित। प्रार्थी

दिनांक –25–01–2017 कंकड़बाग महल्ला के निवासी ।

उत्तर–4 कारक के आठ भेद हैं। कर्ता कारक, कर्म कारक, करण कारक, सम्प्रदान कारक, अपादान कारक, संबंध कारक, अधिकरण कारक, संबोधन कारक।

उदाहरण–	कर्ताकारक	–	ने
	कर्मकारक	–	को
	करणकारक	–	से
	संप्रदान कारक	–	को, के लिए
	अपादान कारक	–	से (अलगाव के लिए)
	संबंध कारक	–	का, के, की, रा, रे, री, ना, ने, नी।
	अधिकारण कारक		में, पर
	सम्बोधन कारक		हे, अजी, अहो, अरे।

उत्तर 4. अथवा

भाषा की लघुतम सार्थक इकाई को 'शब्द' कहते हैं, जैसे घर, वन आदि। उत्पत्ति या उद्गम के आधार पर शब्दों के छः भेद माने गये हैं:

(क)	तत्सम	–	उदाहरण	–	क्षेत्र, मयर्
(ख)	अर्द्धतत्सम	–	उदाहरण	–	करम (संस्कृत के कर्म से विकसित)
(ग)	तद्भव	–	उदाहरण	–	खेत, मोर
(घ)	देशज	–	उदाहरण	–	लोटा, कटोरा

BiharboardQuestionpaper.com

(च) विदेशज	–	उदाहरण	–	कोट, ट्रेन, स्कूल
(छ) मिश्रित शब्द	–	उदाहरण	–	रेलगाड़ी (अंग्रेजी+हिन्दी)

उत्तर–5

क. – मुख

ख. – निर्धनता

ग. – अनुकूल

घ. – ओष्ठ

च. – द्रव्य

उत्तर–6 **शुद्ध वाक्यः-**

(क) उसके प्राण सूख गये।

(ख) सभी अपनी राय दें।

(ग) सेब काट कर माहन को खिलाओ।

(घ) घड़ा पानी से लबालब है।

(च) राम ने रोटी खायी।

उत्तर–7 (क) जीवनानंद दास

(ख) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(ग) सुजाता

(घ) रामविलास शर्मा

(च) गुणाकर मूले

(छ) बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमधन'

उत्तर–8 डुमराँव की महत्ता विश्वविख्यात शहनाईवादक बिस्मिल्ला खाँ के कारण है। इनका जन्म बिहार राज्य के इसी गाँव (डुमराँव) में एक संगीतप्रेमी परिवार में हुआ था।

BiharboardQuestionpaper.com

उत्तर-9 जब मनुष्य जंगली था, बनमानुष जैसा तब उसे अपनी रक्षा के लिए नाखूनों की जरूरत थी। वास्तव में नाखून ही उसके लिए अस्त्र (हथियार) थे। वह अपने प्रतिद्वंदियों से जूझने और उन्हें परास्त करने में अपने नाखूनों की मदद लिया करता था। अत: लेखक द्वारा नाखूनों को अस्त्र के रूप में देखना सर्वथा संगत है।

उत्तर-10 सच्चे लोकतंत्र की स्थापना के लिए लेखक ने भाईचारा, सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति तथा समाज क सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान को आवश्यक माना है। समाज में सब भाई-बहन की तरह रहें और सबमें एक-दूसरे के प्रति श्रद्धा और सम्मान का भाव रहे।

उत्तर-11 लेखक ने 'श्रम विभाजन और जातिप्रथा' पाठ में सामाजिक और आर्थिक पहलुओं से जाति-प्रथा को हानिकारक पथा के रूप में दिखाया है। यह प्रथा सामाजिक एकता एवं स्वाभाविक प्रेरणा-रुचि को समाप्त करती है।

उत्तर-12 (क) यह गद्यांश शिक्षा और संस्कृति पाठ से उद्धृत है।

(ख) इस पाठ के लेखक महात्मा गाँधी हैं।

(ग) आज की शिक्षा-पद्धति में व्यावहारिकता का महत्त्व अपेक्षित है। सारो शिक्षा किसी दस्तकारी या उद्योगों के माध्यम से दी जानी चाहिए।

उत्तर-13 कवि ने कृष्ण को 'चोर' कहा है क्योंकि कृष्ण अपने अपरूप सौन्दर्य में बाँधकर गोपियों के चित्त का हरण कर लेते हैं। दूसरों के मित्त (मन) को अपने वश में कर लेने के कारण ही कवि ने कृष्ण को चोर कहा है।

उत्तर-14. छाया, प्रकाश की दिशा की विपरीत दिशा में बनती है। उगते हुए सूर्य के प्रकाश में छायाएँ पश्चिम दिशा की बनेंगी परन्तु परमाणु बम के विस्फोट से निकली सूरज की रोशनी में मानवजन की छायाएँ दिशाहीन स्थिति में सब ओर पड़ीं। उस विस्फोट स एक ही साथ विभिन्न दिशाओं से अनेक सूरज उत्पन्न हुए जिनकी रोशनी में मानवजन की छायाओं का एक निश्चित दिशा में बनना संभव नहीं था। अत: मानवजन की छायाएँ दिशाहीन हो कर सर्वत्र पड़ीं।

उत्तर-15 बूढ़ा चौकीदार वृक्ष हमारी बूढ़ो अनुभवी पीढ़ी के साथ-साथ सतक बुद्धिजीवी वर्ग का प्रतीक है जो अच्छे-बुरे को दूर से ही पहचान लेता है। बूढ़ा

BiharboardQuestionpaper.com

चौकीदार वृक्ष कवि को आते देख दूर से ललकार कर पूछता था, "कौन"? कवि जवाब देता था, 'दोस्त' जिसे सुनकर चौकीदार वृक्ष दोस्ती के आगे नतमस्तक हो जाता था। यह संवाद दर्शाता है कि अनुभवी बुद्धिजीवी आनेवाले हर खतरे को भाँप सकते हैं जिसे आज अनदेखा किया जा रहा है।

उत्तर-16 भक्त का अस्तित्व अगर भगवान से है तो भगवान की सत्ता भक्त द्वारा शोभायमान है। ईश्वरीय महिमा रूपी शानदार आवरण जो ईश्वर से लिपटा हुआ है, भक्त द्वारा महिमा स्वीकारने उसमें भक्ति रूपी प्राण देने से ही बना है। अतः भक्त के बिना प्रभु भक्ति रूपी लबादा से विहीन हो जाएँगे।

उत्तर-17 क- कविता-जनतंत्र का जन्म कवि-रामधारी सिंह दिनकर

ख- जनता जब कूपित होती है तो समाज में उथल-पुथल मच जाता है क्रांति होती हैं फलस्वरूप सत्ता के प्रतिष्ठान ढह जाते हैं। जो लोग सत्ता में होते हैं उनकी सत्ता छिन जाती है और कभी-कभी तो उन्हें सत्ता के साथ-साथ जान से भी हाथ धोना पड़ता है।

ग- जनता की राह रोकना बहुत कठिन है। जनता किसी के रोके नहीं रुकती। जनता समय की धारा बदल देती है। वह (जनता) अपना लक्ष्य पाकर ही रहती है।

उत्तर-18 सीता के तीन बेटे, बहुएँ और पोते-पोतियाँ हैं। मात्र बच्चों को छोड़कर किसी को उससे लगाव नहीं है। बच्चे भी जब उसके पास आ कर खेलते-कूदते हैं तो बहुएँ चीखती-चिल्लाती हैं। कोई बेटा पास आकर उसका हालचाल नहीं पूछता, न कभी कोइ आकर बैठता है। बहुएँ अक्सर जली-कटी सुनाती हैं। तीनों बेटों ने तय कर लिया है कि सीता बारी-बारी ही हरेक के यहाँ रहेगी और उसके यहाँ से खाएगी। इसी कारण सीता को अपने ही घर में घुटन महसूस होती है।

उत्तर-19 पप्पाति तमिलनाडु के एक गाँव की महिला वल्लि अम्माल की बेटी थी। उसे बुखार आ गया। जब वल्लि अम्माल उसे लेकर गाँव के प्राइमरी हेल्थ सेंटर में दिखाने गई तो वहाँ के डॉक्टर ने अगले दिन सुबह ही जाकर नगर के बड़े अस्पताल में दिखाने को कहा। बस वह पप्पाति को लेकर सुबह की बस से नगर के बड़े अस्पताल में दिखाने पहुँच गई।

BiharboardQuestionpaper.com

उत्तर-20 पहले भारत में संयुक्त परिवार-प्रथा का प्रचलन था। संयुक्त परिवार का अर्थ है, एक परिवार में दादा-दादी, माता-पिता उनके पुत्र-पुत्री और नजदीकी परिवार के बेसहारा लोगों का सामूहिक जीवन। परिवार के मुखिया और अन्य समर्थ लोग काम-धाम करते आर परिवार का भरण-पोषण होता। दादा-दादी बच्चों की देख-रेख करते, माँ-बहनें घर के अंदरुनी काम या खेती में हाथ बँटातीं। परिवार का मुखिया सबके साथ समान व्यवहार करता, सबकी जरूरतं पूरी करता और तब परिवार सुचारू रूप से चलता। बूढ़े माँ-बाप की सेवा की जातो थी। कोई अपने को उपेक्षित नहीं समझता था। न खेत बँटते थे न आमदनी। लेकिन आज पश्चिम से आई हवा से सबकुछ उलट पुलट गया है। आज परिवार का अर्थ है मियाँ-बीबी और बच्चे। माँ-बाप कहाँ हैं? कैसी हालत में हैं? इसकी किसी को कोई चिंता नहीं हैं। खेती बँट गए, घरों में दीवार खिंच गई वृद्धों के आश्रम खुलने लगे। शादी-व्याह में एक-दूसरे के यहाँ जाना भी जंजाल मानने लगे हैं किन्तु इसी बीच कोई अनहोनी हो जाने पर एकल परिवार की क्या दुर्वस्था होती है, यह किसी से छिपा नहीं है।

संयुक्त परिवार में यह समस्या नहीं होती थी। अन्य सभी, मुसीबत में एक साथ खड़े होते थे। हर मुकाबला सभी मिलजुल कर करते थे। इस प्रकार मेरी दृष्टि में भारत की संयुक्त परिवार-प्रथा सर्वाधिक उपयुक्त थी।

BiharboardQuestionpaper.com

मॉडल सेट-02

समय 3 घंटा 15 मिनट **पूर्णांक-100**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश:-

(क) परीक्षार्थी यथासम्भव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

(ख) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(ग) उत्तर देते समय शब्द-सीमा का ध्यान रखें।

(घ) दाहिनी ओर अंक निर्दिष्ट किये गये हैं।

(च) प्रश्न-पत्र को ध्यान से पढ़ें। इसके लिए 15 मिनट का अतिरिक्त समय दिया जा रहा है।

प्रश्न 1. (अ) निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दें। 6X2=12

अपने जीवन के अंतिम वर्षों में डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा की उत्कट अभिलाषा थी कि 'सिन्हा लाइब्रेरी' के प्रबंध की उपयुक्त व्यवस्था हो जाए। ट्रस्ट पहले से मौजूद था लेकिन आवश्यकता यह थी कि सरकारी उत्तरदायित्व भी स्थिर हो जाय। ऐसा मसविदा तैयार करना कि जिसमें ट्रस्ट का अस्तित्व भी न टूटे और सरकार द्वारा संस्था की देखभाल और पोषण की भी गारंटी मिल जाय, जरा टेढ़ी खीर थी। एक दिन एक चाय पार्टी के दौरान सिन्हा साहब मेरे (जगदीशचन्द्र माथुर) पास चुपके से आकर बैठ गए। सन् 1949 की बात है। मैं एक नया शिक्षा-सचिव हुआ था लेकिन सिन्हा साहब की मौजूदगी में मेरी क्या हस्ती? इसलिए जब मेरे पास बैठे और जरा विनीत स्वर में उन्होंने सिन्हा लाइब्रेरी की दास्तान कहनी शुरू की तो मैं जरा सकपका गया। मन में सोचने लगा कि जो सिन्हा साहब मुख्यमंत्री, शिक्षामंत्री और गवर्नर तक से आदेश के स्वर में सिन्हा लाइब्रेरी जैसी उपयोगी संस्था के बारे में बातचीत कर सकते हैं, वह मुझ जैसे कल के छोकरे को क्यों सर चढ़ा रहे हैं। उस वक्त तो नहीं, किन्तु बाद में गौर करने पर दो बातें स्पष्ट हुइं। एक तो यह कि मैं भले ही समझता रहा हूँ कि मेरी लल्लो-चप्पो हो रही है, किन्तु वस्तुतः उनका विनीत स्वर उनके व्यक्तित्व के उस साधारण तथा अलक्षित और आर्द्र पहलू की आवाज थी, जो पुस्तकों तथा शसिन्हा लाइब्रेरीश के प्रति उनको भावुकता के उमड़ने पर ही मुखारित होता था।

(क) सिन्हा साहब लाइब्रेरी के लिए कैसा मसविदा तैयार करना चाहते थे?

(ख) माथुर साहब क्यों सकपका गये?

BiharboardQuestionpaper.com

(ग) सिन्हा साहब किनके साथ और किस लिए आदेशात्मक स्वर में बात कर सकते थे?

(घ) माथुर साहब जिसे लल्ला-चप्पा समझते थे वह वास्तव में क्या था?

(च) कब और कौन नया-नया शिक्षा-सचिव हुआ था?

(छ) सिन्हा साहब की कब और क्या उत्कट अभिलाषा थी?

ब. निम्नांकित गद्यांश को पढ़ कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दें। 4 X 2=8

साम्प्रदायिक दंगों में भगतजी सड़क पर नाच-नाच कर हिन्दू-मुस्लिम एकता के पद गाते थे। दानों तरफ के गुंडों को अपनी चिलम पिलाते थे। उनके मन की भड़ास सुनते और उनको भक्ति-शैली में उपदेश देते। एक बार भगतजी कहीं गायब हो गए। किसी मुसीबत में फँसे मुसलमान परिवार को किसी सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने गये थे। हिन्दुओं ने मुसलमानों और मुसलमानों ने हिन्दुओं पर आशंका की। बड़ी भीषण तैयारियाँ हुई। तभी भगतजी प्रकट हो गये और गलियों में फूटा कनस्तर बजा-बजाकर गाते फिर "या जग अंधा मैं केहि समुझावौं।"

क. भगतजी किस प्रकार के उपदेश गुंडों को देते थे?

ख. भगतजी के गायब हो जाने का क्या कारण था?

ग. भगतजी के गायब हो जाने से समाज में क्या प्रतिक्रिया हुई?

घ. 'या जग अंधा मैं कैहि समझावौं' का तात्पर्य क्या है?

प्रश्न-2 दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 250 शब्दों में किसी एक विषय पर निबंध लिखें। 10

(अ) राजनीति और भ्रष्टाचार

संकेत बिन्दु- (क) प्राचीन स्वरूप
(ख) वर्तमान स्थिति
(ग) सत्ता लोलुपता
(घ) भ्रष्ट आचरण का बोलबाला
(च) समाधान के उपाय

(ब) मेरे प्रिय कवि

संकेत बिन्दु- (क) भूमिका
(ख) उनकी रचना का आधार
(ग) उपादेयता

BiharboardQuestionpaper.com

(घ)उपसंहार

(स) छात्र और अनुशासन

संकेत बिन्दु- (क) भूमिका

(ख) अनुशासन का महत्त्व

(ग) अनुशासन के अभाव में उच्छृंखलता

(घ) अनुशासन का मार्गदर्शन

(च) उपसंहार

प्रश्न-3 अपने पिता के पास एक पत्र लिखिए जिसमें आपके विद्यालय में होने वाले साइकिल-वितरण समारोह का उल्लेख हो। 5

अथवा

आय प्रमाण-पत्र बनवाने के लिए अंचलाधिकारी को एक आवेदन पत्र लिखें।

प्रश्न-4 सर्वनाम के भेद सोदाहरण बताएँ । 5

अथवा

व्युत्पत्ति के आधार पर शब्दों के भेद सोदाहरण लिखें

प्रश्न-5 निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखें: 5x1=5

(1) कमल (2) आकाश(3) आँख (4)सूरज पुत्र।

प्रश्न-6 निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करें: 5x1=5

(1) चरखा काटना चाहिए।

(2) कमरा लबालब भरा था।

(3) हम चाय पिये हं।

(4) वह सारी पुस्तक पढ़ डाला।

(5) भाई-बहन आती है।

प्रश्न-7स्तम्भ 'अ' और ब का सही मिलान सामने-सामने लिखकर करें। 6x1=6

	स्तम्भ अ		**स्तम्भ ब**
क.	कहानी	1.	अम्बेदकर
ख.	निबंध	2.	नलिन विलोचन शर्मा
ग.	एक वृक्ष की हत्या	3.	महात्मा गाँधी
घ.	सात कोड़ी होता	4.	रसखान

BiharboardQuestionpaper.com

च	प्रेम अयनि श्री राधिका	5.	कुँवर नारायण
छ	शिक्षा और संस्कृति	6.	ढहते विश्वास

निर्देशः- प्रश्न संख्या 8 से 17 तक के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 30 शब्दों में दें।

प्रश्न-8 लेखक क्यों पूछता है कि मनुष्य किस ओर बढ़ रहा ह। पशुता की ओर या मनुष्यता की ओर? स्पष्ट करें। 3

प्रश्न-9 बहादुर के आने से लेखक के घर और परिवार के सदस्यों पर कैसा प्रभाव पड़ा? 3

प्रश्न-10 राजनीतिक मूल्यों से साहित्य के मूल्य अधिक स्थायी कैस होते ह? 3

प्रश्न-11 बिरजू महाराज के जीवन में सबसे दुखद समय कब आया? 3

प्रश्न-12 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दें।

मेरे सभी भाई और रिश्तदार अच्छे ओहदों पर थे और उन सभी के यहाँ नौकर थे। मैं जब बहन की शादी में घर गया तो वहाँ नौकरों का सुख देखा। मेरी दोनों भाभियाँ रानी की तरह बैठकर चारपाइयाँ तोड़ती थीं, जबकि निर्मला को सेबेरे से लेकर रात तक खटना पड़ता था। मैं ईर्ष्या से जल गया। इसके बाद नौकरी पर वापस आया तो निर्मला दोनों जून 'नौकर-चाकर' की माला जपने लगी। उसकी तरह अभागिन और दुखिया स्त्री और भी कोई इस दुनिया में होगी? वे लोग दूसरे होते हैं, जिनके भाग्य में नौकर का सुख होता ह...।

(क) पाठ और लेखक के नाम लिखें 1

(ख) बहन की शादी में लेखक ने क्या देखा? इसका क्या प्रभाव पड़ा 1

(ग) इस अवतरण में किस प्रकार की भावना की अभिव्यक्ति है? 3

प्रश्न13. भारत माता अपने ही घर में प्रवासिनी क्यों बनी हुई हैं? 3

प्रश्न 14. 'हमारी नींद' कविता का संदेश क्या है।? 3

प्रश्न 15. कवि अपने को जलपात्र और मदिरा क्यों कहता ह? 3

प्रश्न 16. 'अक्षर ज्ञान' कविता किस तरह सांत्वना देती और आशा जगाती है? 3

प्रश्न 17. निम्नलिखित पद्य को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दें।

सफल आज उसका तप-संयम,
पिला अहिंसा स्तन्य सुधोपम,
हराती जन मन भय, भव तम-भ्रम,

BiharboardQuestionpaper.com

जग–जगनी जीवन विकासिनी।

क. कविता और कवि का नाम लिखें। 1

ख. कविता में किसके तप संयम के सफल होने की बात कही गई है? 1

ग. पदावतरण का भावार्थ लिखें। 3

प्रश्न 18. **'ढहत विश्वास' शीर्षक कहानी की सार्थकता पर विचार करें।** 3

प्रश्न 19. **गुणनिधि का संक्षिप्त परिचय दीजिए।** 3

प्रश्न 20. **नंजम्मा के बारे में आप क्या सोचते हैं?** 4

या

नंजम्मा का चरित्र चित्रण कीजिए।

BiharboardQuestionpaper.com

BiharboardQuestionpaper.com

उत्तर मॉडल सेट-02

उत्तर -(अ)

(क) सिन्हा साहब लाइब्रेरी के लिए ऐसा मसविदा तैयार करना चाहते थे जिसमें ट्रस्ट का अस्तित्व भी मौजूद रहे और सरकार द्वारा संस्था की देखभाल तथा पोषण की गारंटी भी मिल जाए।

(ख) एक दिन एक चाय-पार्टी के दौरान सच्चिदानंद सिन्हा माथुर साहब के पास चुपके से आकर बैठ गए। सिन्हा साहब जैसे महान व्यक्ति को अपने पास बठा देखकर तथा उनसे लाइब्रेरी की दास्तान सुनकर माथुर साहब सकपका गये।

(ग) सिन्हा साहब मुख्यमंत्री, शिक्षा मंत्री ओर गवर्नर तक से आदेशात्मक स्वर में "सिन्हा लाइब्रेरी" जैसी उपयोगी संस्था के बारे में बातचोत कर सकते थे।

(घ) माथुर साहब जिसे लल्लो-चप्पो समझते थे, वास्तव में वह उनके व्यक्तित्व के अलक्षित आद पहलू का सूचक था जो लाइब्रेरी के प्रति उनकी भावुकता के कारण यदा-कदा मुखरित हो उठता था।

(च) जगदीशचन्द्र माथुर 1949 में नये शिक्षा-सचिव हुए थे।

(छ) सिन्हा साहब की अपने जीवन के अंतिम वर्षों में यही उत्कट अभिलाषा थी कि सिन्हा लाइब्रेरी के प्रबंध की कोई उपयुक्त व्यवस्था हो जाए।

उत्तर (ब)क. भगतजी हिन्दू-मुसलमान के उन गुडों को अपनी सूक्ति-शैली में उपदेश देते थे जो सांप्रदायिकता के नश में अपना विवक खो कर एक-दूसरे पर घातक आक्रमण करते थे।

ख. भगतजी के गायब होने का कारण यह था कि वे मुसीबत में फँसे किसी मुसलमान परिवार को किसी सुरिक्षत स्थान पर पहुँचाने गये थे।

ग. भगतजी के गायब हो जाने से हिन्दू और मुसलमान एक-दूसरे को आशंका की दृष्टि से देखने लगे। दानों समुदाय एक-दूसरे की जान के दुश्मन हो गए। भीषण संघर्ष की तैयारियाँ शुरू हो गई।

घ. भगतजी इस गीत के माध्यम से यह कहते हैं कि यह संसार विवेक-शून्य है। उसको आँखं नहीं है। मैं किस-किस को समझाऊँ? समझाया तो उन्हें ही जाता है जिनके पास विवेक है।

BiharboardQuestionpaper.com

उत्तर-3 पूज्य पिताजी,

नालंदा

13 अप्रैल-2016

सादर प्रमाण।

आपका स्नेह भरा पत्र मिला। आपकी चिंता सता रही थी। जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि अब आप पूर्णत: स्वस्थ हैं।

पिताजी आपका यह जानकर प्रसन्नता होगी की सरकार की साइकिल और पोशाक वितरण याजना का लाभ अब हमारी कक्षा को भी मिलने लगा है। परसों ही हमारे विद्यालय में यह समारोह पूर्वक वितरित किया गया।

समारोह के लिए उस दिन जब मैं विद्यालय पहुँचा तो यह देखकर दंग रह गया कि चमकती हुई साइकिलें तैयार थीं। ठीक समय पर शिक्षा अधिकारी आये।

प्रधानाध्यापक महोदय ने उनका स्वागत किया। शिक्षा अधिकारी ने सरकार की योजना की जानकारी दी और एक-एक कर छात्रों के नाम पुकारे जाने लगे। छात्र जाते, पोशाक की राशि और साइकिल लेते। मेरी बारी आई तो रोमांच हो गया। अत: में हम छात्रों ने यह प्रतीज्ञा की कि पढेंगे, बढेंगे और अशिक्षा से लड़ेंगे। अब हम सब एक साथ पोशाक पहन कर स्कूल स्कूल जाते हैं। बड़ा मजा आता है। जब आऊँगा तब विस्तार से बताऊँगा।

सभी बड़ों को प्रणाम।

आपका प्यारा बेटा

आलोक

पता -

उत्तर -3 अथवा

सेवामें,

अंचलाधिकारी महोदय

पटना अंचल, पटना।

विषय :- आय प्रमाण-पत्र निर्गत करने के संबंध में।

महाशय,

मैं आपके अंचल के खाजपुरा, बैंक कॉलोनी का निवासी हूँ। मैं एक प्रतियोगी परीक्षा का प्रपत्र भरना चाहता हूँ जिसमें आय प्रमाण-पत्र को भी प्रपत्र के साथ संलग्न करना है।

BiharboardQuestionpaper.com

अत: सविनय निवेदन है कि मुझे आय प्रमाण-पत्र देने की कृपा की जाय जिसके लिए मैं आपका आभारी रहूँगा।

सधन्यवाद। प्रार्थी

दिनांक-12-01-2017 आलोक कुमार

बैंक कॉलोनी, खाजपुरा

पटना

उत्तर-2 (अ) राजनीति और भ्रष्टाचार

राजनीति के प्राचीन और आधुनिक स्वरूप में आकाश-पाताल का अंतर है। प्राचीन काल में 'राजनीति' प्रजा के मौलिक अभ्युदय का मार्ग प्रशस्त कर सांस्कृतिक उत्कर्ष की पीठिका तैयार करती थी। वस्तुत: राजनीति में जो नीति है उससे शासनतंत्र के उच्च आचरण का द्योतन होता है। प्राचीन काल में 'राजनीति' अपने नीति धर्म का पालन करती थी परन्तु आधुनिक काल में राजनीति में केवल 'राज' रह गया है और नीति का सर्वथा लोप हो गया है। यह सही कहा गया है कि राजनीति यदि अपने नीति-धर्म को रक्षा करती है तो समझ लीजिए कि किसी देश का कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

आज की राजनीति नीति से रहित है। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'वाणभट्ट की आत्मकथा' में लिखा है, ऐसी राजनीति भुजंग से भी अधिक कुटिल है, अधिसार से भी अधिक कुटिल है अधिसार से भी अधिक प्रखर है और विद्युत-शिखा से भी अधिक चंचल है। आधुनिक राजनीति के संबंध में महात्मा गाँधी की यह टिप्पणी सार्थक है कि "हमारे देश में राजनीति का उपयोग या तो अपने को आगे बढ़ाने की सीढ़ी के तौर पर किया जाता है और नही तो वह अवकाश के समय हमारे विनोद का साधन होती है।"

आधुनिक भारतीय राजनीति स्वार्थ वृत्ति पर अवलम्बित है। ऐसी राजनीति देश के विकास को अवरुद्ध करती है तथा जनता के सपनों की हत्या करती है। सचमुच ऐसी राजनीति राष्ट्रद्रोह से कम नहीं है। सत्तालोलुपता ने भारतीय राजनीति को विद्रूप और अस्वस्थ किया है। आदर्शों को ताक पर रख कर राजनेताओं ने राजनीति का जो स्वरूप गढ़ा है वह अत्यंत भयावह है।

राजनीति, भ्रष्टाचार का अड्डा बन गई है। आज की राजनीति में छल-कपट, धोखा, रिश्वतखोरी जमाखोरी, स्वार्थ, पक्षपात, भाई-भतीजावाद, क्षेत्रवाद, जातीयता, धनलोलुपता आदि का बोलबाला है।

BiharboardQuestionpaper.com

राजनीतिक भ्रष्टाचार का उन्मूलन नैतिक गुणों के विकास से ही संभव है। राजनेताओं को स्वार्थपरता और संकीर्ण मानसिकता से उबरना होगा। दृढ़, इच्छाशक्ति से अवगुणों को दूर किया जा सकता है। राष्ट्रहित को लक्ष्य बनाकर राजनीति के क्षेत्र मं आने वाले सचरित्र व्यक्तियों से ही आज की विभत्स राजनीति परिवर्तित होगी। राजनीतिक भ्रष्टाचार कानूनों से नहीं आत्मा के आदेशों से ही दूर होगा।

उत्तर-2 (ब) मेरे प्रिय कवि

मेरे प्रिय कवि जयशंकर प्रसाद का जन्म 1890 में काशी के एक सम्पन्न घराने में हुआ था। उन्होंने आठवीं कक्षा तक शिक्षा पाने के बाद घर पर ही संस्कृत, उर्दू और अँगरेजी सीखी। प्रारंभ में उन्होंने ब्रजभाषा में कविताएँ लिखीं परन्तु बाद में वे खड़ी बोली में काव्य रचना करने लगे। प्रसाद 'कवि' होने के साथ-साथ गंभीर 'चिंतक' भी थे। आधुनिक होते हुए भी प्रसाद प्राचीन गौरवशाली परम्परा से जुड़े थे।

'प्रसाद' की आरंभिक रचनाएं संस्कृतिगर्भित शैली में हैं। वे प्राय: स्थूल और बर्हिमुखी हैं। पहले पहल 'झरना' में ही छायावादी काव्य प्रवृत्तियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। अपनी अनेक कविताओं में कवि ने अंतर्मुखी कल्पना द्वारा अपनी सूक्ष्म भावनाओं को व्यक्त करने का प्रयास किया है। 'आँसू' प्रसाद की प्रसिद्ध कृति है। इसके आरम्भिक छंद व्यक्तिगत वेदना से ओत-पोत हैं पर अंत के छंदों में विश्व-कल्याण की भावना व्यक्त हुई है। 'लहर' में प्रसाद की गीत-कला का उत्कृष्ट रूप दिखाई पड़ता है। इनके गीतों में वैयक्तिक भावावेश निर्वैयक्तिक होकर हृदय के तार को झंकृत कर देता है। शेरसिंह का शस्त्र समर्पण पेशोला की प्रतिध्वनि और 'प्रलय की छाया' में ऐतिहासिक प्रसंगों को मुक्त छंद में प्रस्तुत किया गया है।

'लहर' के गीतों में कल्पना की मनोरमता, भावुकता और भाषा का प्रौढ़ परिमार्जित रूप सर्वत्र देखा जा सकता है। 'कामायनी' (1935) इनकी अंतिम शिखर कृति है। प्रसाद को शिखर कवि के रूप में प्रतिष्ठित करने का श्रेय कामायनी को जाता है। इस महाकाव्य में कवि ने मनु, श्रद्धा और इड़ा के माध्यम से बुद्धिवाद के विरोध में हृदय-तत्व की प्रतिष्ठा की है।

प्रसाद की भाषा में लाक्षणिकता, विशेषणविपर्यय, पतीकत्व अलंकरण, प्रसाद माधुर्य गुणों का समन्वित संगीत और अनुराग के गुण हैं जिनके चलते उनकी कविताएँ मर्म पर दीर्घकालिक प्रभाव डालती हैं। भाव और भाषा के उदात्त समन्वय ने प्रसाद को महाकवि बना दिया। मुझे कवि 'प्रसाद' इसोलिए अत्यंत प्रिय हैं।

BiharboardQuestionpaper.com

उत्तर-2 (स) छात्र और अनुशासन

अनुशासित छात्र अपने जीवन के उद्देश्य में सफत होत हैं। अनुशासित छात्र अपना हितैषी तो होता ही है, वह अपने समाज और देश का भी हितैषी होता है।

अनुशासन के अभाव में छात्र अपने उद्देश्य से भटक जाता है और अपने परिवार, समाज तथा देश के लिए शत्रु का पर्याय बन जाता है। जीवन के हर क्षेत्र में अनुशासन आवश्यक है, पर छात्र- जीवन में तो इसका महत्त्व और भी बढ़ जाता है क्योंकि पूर्ण जीवन की सफल समृद्धि छात्र-जीवन की सफलता पर ही निर्भर है। अतः यह आवश्यक है कि छात्रों को अनुशासन के प्रति शुरू से ही जागृत किया जाए। अनुशासन के संबंध में कहा गया है कि यह परिवार की अग्नि है जिसमें तप कर प्रतिभा योग्यता बन जाती है। अनुशासन, व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र का प्राण है। अनुशासन को प्रकृति कठोर दिखाई पड़ती है पर वास्तविकता यह है कि उसकी कठोरता शिष्ट-स्वीकार से दयालुता में परिवर्तित हो जाती है और उससे व्यक्ति धन्य हो जाता है।

आज के छात्र ही कल के राष्ट्र-निर्माता हैं अतएव छात्रों में अनुशासन का होना आवश्यक है। समाज को बचाए रखने के लिए जरूरी है कि छात्रों को शिष्टाचार की पूर्णरूप शिक्षा दी जाय ताकि भारत का सही अर्थों में नव-निर्माण हो सके।

उत्तर-4

सर्वनाम के छः भेद हैं- (1) पुरुषवाचक (2)निश्चयवाचक (3)अनिश्चयवाचक (4) प्रश्नवाचक (5) संबंधवाचक (6) निजवाचक

(1) पुरुषवाचक सर्वनाम- (क) उत्तम पुरुष- मैं, हम, हम सब।
(ख) मध्यमपुरुष- तू, तुम, आप, आपसब।
(ग) अन्य पुरुष- वह, वे, यह, ये, आप।

(2) निश्चयवाचक सर्वनाम - यह, वह।

(3) अनिश्चयवाचक सर्वनाम- कोई, कुछ, किसी आदि।

(4) प्रश्नवाचक सर्वनाम - कौन, क्या, किसने, किसे आदि।

(5) संबंधवाचक सर्वनाम - जो वह जिसे, उसे, जो सो आदि।

(6) निजवाचक सर्वनाम - अपने आप, आप ही आप, स्वयं।

उत्तर 4 अथवा

व्युत्पत्ति के आधार पर शब्दों के तीन भेद हैं-

(1) रूढ़ (2) यौगिक (3) योगरूढ़

BiharboardQuestionpaper.com

उदाहरण–1 रूढ़ शब्द– हाथ, कान, नाक

2. यौगिक शब्द– विद्यालय, स्मृति भवन

3. योग रूढ़ शब्द– लम्बोदर, दशानन, चतुरानन।

उत्तर–5 (1) जलज, नीरज

(2) अंबर, गगन

(3) दृग, नयन

(4) दिनकर, आदित्य

(5) बेटा, सुत।

उत्तर–6

(1) चरखा चलाना चाहिए।

(2) कमरा खचाखच भरा था।

(3) हमने चाय पी है।

(4) उसने सारी पुस्तक पढ़ डाली।

(5) भाई–बहन आते हैं।

उत्तर–7

क.	2
ख.	1
ग.	5
घ.	6
च	4
छ	3

उत्तर–8 इस प्रश्न का उत्तर इस प्रकार दिया जा सकता है कि मनुष्य किस ओर बढ़ रहा है? अस्त्र बढ़ाने की ओर या अस्त्र काटने की ओर? सच पूछा जाय तो मनुष्य अस्त्र बढ़ाने की ओर बढ़ रहा है, यानी वह पशुता की ओर बढ़ रहा है। उसने ऐसे संहारक अस्त्रों का निर्माण किया है कि सारी दुनिया पल भर में राख का ढेर में बदल सकती है। संहारक अस्त्रों का निर्माण हमारी विनाशक प्रवृत्ति पशु की स्वाभाविक प्रवृत्ति का द्योतक है और विनाशक प्रवृत्ति है। अतः मनुष्य मनुष्यता की ओर न बढ़कर पशुता की ओर बढ़ रहा है। आज मनुष्य प्रेम के, अहिंसा के मार्ग पर नहीं चल कर हिंसा, क्रोध, द्वेष पर चल रहा है। हिंसा क्रोध द्वेष और ईर्ष्या पशुवृत्ति हैं।

BiharboardQuestionpaper.com

उत्तर-9 बहादुर के आने से परिवार के सारे सदस्यों को खूब आराम मिल रहा था। घर भी साफ-सुथरा रहता था। प्रतिदिन पोंछा लगाने के कारण कमरे खूब साफ और चिकने रहत थे। नियम से बहादुर सबके कपड़े धोता। सभी चमाचम कपड़े पहनते। सारे काम बहादुर करता था। कोई एक खर भी न टसकाता था। किसी को मामूली -से-मामली काम करना होता, बहादुर को ही याद करता। बहादुर भी ऐसा बहादुर था कि सबकी फरमाइशें पूरी करता था। सभी रात में पहले ही सो जाते और सुबह आठ बजे के पहले नहीं उठते। बहादुर के आने से परिवार के सारे सदस्यों को गर्व की अनुभूति होती थी।

उत्तर-10 राजनीतिक मूल्य तात्कालिक और अस्थाई होते हैं क्योंकि राजनीति का ताल्लुक भौतिक जगत से होता है। परिस्थितियों के साथ इसके मूल्य में बदलाव आता है जबकि साहित्य का संबंध मनुष्य की भावनाओं से होता है और भावनाएँ सदैव तरोताजा होती हैं। यही कारण है कि राजनीतिक मूल्यों से साहित्य के मूल्य अधिक स्थाई होते हैं। आज ब्रिटिश साम्राज्य का कोई नामलेवा नहीं है। किन्तु शेक्सपीयर, मिल्टन और शेली संसार के जगमगाते सितारे हैं।

उत्तर 11 बिरजू महाराज के जीवन का सबसे दुखद प्रसंग था उनके पिता की मृत्यु। तब बिरजू महाराज नौ साल के थे। घर की हालत खस्ता थी। इतने भी पैसे नहीं थे कि उनका दसवाँ हो सके। इसके लिए बिरजू महाराज ने दो कार्यक्रम करके 500 रुपये इकट्ठे किए तब तेरहवीं हुई। पिता की मृत्यु और वैसी हालत में नाचना बिरजू महाराज के लिए एक अकल्पनीय दुखद प्रसंग था।

उत्तर 12.

क. पाठ-बहादुर लेखक- अमरकांत।

ख. अपनी बहन की शादी में जब लेखक घर गया तो वहाँ उसने नौकरों का सुख देखा। भाभियाँ बैठी रहती थीं और उनके सारे कार्य नौकर निपटाते थे जबकि लेखक की पत्नी खुद रात-दिन खटती थीं फलस्वरूप लेखक ईर्ष्या से जल उठा।

ग. प्रस्तुत अवतरण में निम्नमध्य वर्ग की हीनभावना की अभिव्यक्ति है जिससे दिखावे की भावना का उदय होता है।

उत्तर 13. प्रवासी वह होता है जो परदेश में जा कर बसता है। वहाँ उसे बहुत से अधिकार नहीं होते जो वहाँ के मूल निवासियों के होते हैं। आमतौर पर वह मान-सम्मान भी पाप्त

BiharboardQuestionpaper.com

नहीं होता परतंत्रता के समय (जब हम अँगरेजों के गुलाम थे) यहाँ के लोगों के अधिकार भी छिन गए। विदेशी शासकों के आगे मान-सम्मान भी जाता रहा। विदेशी ही अधिक प्रभावशाली बन गये। इस प्रकार भारतमाता अपने घर में ही प्रवासिनी बन गई।

उत्तर 14. 'हमारी नोंद' कविता के माध्यम से कवि हमें बताता है कि सृष्टि अपना संघर्ष उस समय भी जारी रखती है, जब हम सोते रहते हैं। सुविधावादी अपनी सुविधा के लिए नाना प्रकार के कार्य करते हैं, यहाँ तक कि मानव को हानि पहुँचाने से, नरसंहार करने से भी बाज नहीं आते। भाग्य के नाम पर वे अपना धंधा चलाते हैं। धर्म के नाम पर संघर्ष कर लोगों को विरक्त करते हैं लेकिन कुछ लोग हैं जो नहीं झुकते। यही जीवन का विकास-सूत्र है। संघर्ष ही जीवन है।

उत्तर 15. जलपात्र में जल होता है और जल ही जीवन का आधार है। मदिरा से नशा होता है। कवि अपने को जलपात्र इसलिए कहता है कि ईश्वर की सत्ता का आधार मनुष्य ही है। अगर मनुष्य न होगा तो ईश्वर भी न होगा क्योंकि मनुष्य को ही ईश्वर की जरूरत होती है। मनुष्य ही ईश्वर को गढ़ता है। कवि अपने को ईश्वर का मदिरा इसलिए कहता है कि ईश्वर को सत्ता का आधार भी मनुष्य ही है और सत्ता एक नशा है जिसमें अपने आपको सर्वोपरि मानने का भाव आता है। यही कारण है कि मनुष्य अपने को ईश्वर का जलपात्र और मदिरा कहता है।

उत्तर 16. कवयित्री अनामिका का 'अक्षरज्ञान' कविता समसामयिक मानवबोध का संक्षिप्त मगर प्रभावशाली दस्तावेज है। कवयित्री न अक्षरज्ञान के आरंभ के बिम्ब से आरंभ कर सृष्टि विकास की कथा के आरंभ से इसे जोड़ दिया है।

कवयित्री का कथन है कि मानव-जीवन की कथा अक्षर ज्ञान की तरह शनै-शनैः स्लेट लिखने की तरह ही है। मनुष्य संसार में धीरे-धीरे अपने परिवेश से जूझता हुआ ही आगे बढ़ता ह। इसी क्रम में एक पड़ाव ऐसा आता है जहाँ उसे आगे बढ़ने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। असफलता से आनेवाले आँसू उस संघर्ष करने के लिए प्रेरित करते हैं और संघर्ष करने की यही जिद्द उसे सृष्टि-विकास की ओर बढ़ाता है। मानव-जीवन की यही प्रवृत्ति उसे आगे बढ़ाती है।

BiharboardQuestionpaper.com

उत्तर 17. क. कविता–भारत माता।　　　　कवि– सुमित्रानंद पंत।

ख. सफल आज उसका तप संयम के द्वारा कवि बताता है कि भारत माता ने इतने दिनों जो कष्ट सहन किया (अँगरेजों की गुलामी) है, चुपचाप रहकर जो तपस्या की है उसका परिणाम आज (आजादो) निकल आया है।

ग. कविता के इस अंतिम चरण में कवि कहता है कि इतने दिनों तक पराधीनता की पीड़ा सहने, तपस्या करने के बाद भारत माता की साधना सफल हो गई है। आज अहिंसा रूपी अमृत से इसने अपने जन–मन का डर, अंधकार और भ्रम दूर कर दिया है। संसार में ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाला यह देश फिर से जीवन का विकास–संदेश देने को प्रस्तुत हो गया है।

उत्तर 18. कहानी का शीर्षक 'ढहते विश्वास' अत्यंत सार्थक है। कहानी का प्रतिपाद्य विश्वास और कर्म के द्वंद के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। जनता को विश्वास है कि जब–जब उसपर विपत्ति आती है, तब–तब उसके आराध्य देवता उसकी मदद करते हैं। परम्परा से आते हुए इस विश्वास को जनता ने स्वीकार किया है। उसने अपने विवेक से इस विश्वास की परीक्षा नहीं की है। आज जब इस भीषण बाढ़ में इस विश्वास की परीक्षा शुरू की है। तब उसे ऐसा प्रतीत हुआ है कि उसका विश्वास निरर्थक एवं जड है। माँ चण्डेश्वरी उसकी मदद नहीं करती। वे तो स्वयं आँधी और वर्षा के थपेड़ों से आक्रांत हं। जनता का यह जड़ विश्वास ढहने लगता है और वह अपने हाथों में बाँध के निर्माण के लिए कुदाल और फावड़े थाम लेती है। निष्क्रिय विश्वास के देवता से मुक्त हो कर वह अपने लिए कर्म के देवता की आराधना करती है।

उत्तर 19. गुणनिधि गाँव का नौजवान है। कटक में पढ़ता है। वह साहसी है। उसे अपने सामाजिक दायित्व का बोध है। और वह नेतृत्वगुण सम्पन्न है वह जब गाँव आता है और बाढ़ का खतरा देखता है तो स्वयंसेवक दल का गठन करता है। स्वयं सदा उनके साथ रहकर उनका उत्साह बढ़ाता है। "निठल्लों के लिए जगह भी नहीं है दुनिया में। जिस मनुष्य ने काठ–थोड़ी का पत्थर बाँधा है, वह मनुष्य अभी मरा थोड़े ही है।" खुद पैंट–शर्ट उतारकर, काँछ लगाकार, कमर कसकर, काम पर जुटा रहता है रात–दिन।

उत्तर 20. नंजम्मा कथानायिका मंगम्मा की बहू है। वह बहुत तेज–तर्रार है। अपने काम में किसी प्रकार की दखलंदाजी सहन नहीं करती। बेटे की किसी गलती पर जब उसे पीटती और सास मंगम्मा उस वक्त जब मना करती है तो वह उस पर चढ़ बैठती है।

BiharboardQuestionpaper.com

कहती है बेटे की माँ हूँ जैसे चाहूँगी रखूँगी। वह अपने पति पर भी काबू रखती है और तर्क में सबको हराती भी है। मंगम्मा जब मखमल का जाकिट पहनती है तो व्यंग्य भी करती है और लेन-देन की बात उठने पर मंगमा के दिए गहने-जेवर ले लेने को भी कह देती है। नंजम्मा तेज-तर्रार होने के साथ-साथ लोगों की कमजोरी जानने वाली अत्यंत चतुर भी है। जब उसे मंगम्मा द्वारा रुपया-पैसा किसी ओर को दिए जाने की आशंका होती है तो अपने बेटे को मंगम्पा के पास रहने के लिए भेज देती है तथा मौका देखकर पति के साथ जाकर माफी माँग लेती है और अपने यहाँ ले आजी है। इतना ही नहीं वही धीरे-धीरे मंगम्मा का दही बेचने का धंधा भी खुद शुरू कर देती है। इस प्रकार मंगम्मा तेज तर्रार, दूरदर्शी और व्यवहारकुशल नारी है।

Biharboard Questionpaper.com

BiharboardQuestionpaper.com

मॉडल सेट-03

समय 3 घंटा 15 मिनट **पूर्णांक-100**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देशः-

(क) परीक्षार्थी यथासम्भव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

(ख) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(ग) उत्तर देते समय शब्द-सीमा का ध्यान रखें।

(घ) दाहिनी ओर अंक निर्दिष्ट किये गये हैं।

(च) प्रश्न-पत्र को ध्यान से पढ़ें। इसके लिए 15 मिनट का अतिरिक्त समय दिया जा रहा है।

प्रश्न 1. (अ) निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दें। 6X2=12

संघर्ष का अर्थ है-संकटों, बाधाओं और मुसीबतों से मुकाबला करना। मानव-जीवन में संघर्ष सभी को करना पड़ता है। यह अलग बात है कि किसी को संघर्ष अधिक करना पड़ता है और किसी को कम। जा व्यक्ति संघर्ष से मुँह मोड़ता है, वह कभी जीवन में सफल नहीं हो पाता क्योंकि संघर्ष ही सफलता का पर्याय है। आपकी लक्ष्य-प्राप्ति के मार्ग मं चाहे जितनी विघ्न-बाधाएँ, कष्ट-दु:ख आएँ लेकिन आपको अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए साहस के साथ टकराना ही होगा और उन पर विजय प्राप्त करनी ही होगी तभी आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होंगे। आपका जीवन तभी तक सार्थक है जब तक आप संघर्ष करते हैं। व्यक्ति को चाहे जैसी परिस्थितियाँ मिलें, काँटे चुभें, 'हारे नहीं इंसान', जीवन का यही संदेश है। एक कवि के शब्दों में 'सच हम नही सच तुम नहीं, सच ही महज संघर्ष है, संघर्ष से हटकर जीना भी कोई जीना है!'

(क) संघर्ष का अर्थ क्या है?

(ख) जो व्यक्ति संघर्ष से मुँह मोड़ता है उसका क्या होता है?

(ग) सफलता का पर्याय क्या ह?

(घ) आप लक्ष्य को प्राप्त करने में कैसे सफल होंगे?

(च) जीवन का संदेश क्या है?

(छ) इस गद्यांश का उचित शीषक दें।

BiharboardQuestionpaper.com

ब. निम्नांकित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर दें। **4 x2=8**

त्योहार चाहे धार्मिक दृष्टि से मनाए जाते हों, चाहे महापुरुषों की याद में मनाए जाते हों किसी ऐतिहासिक पौराणिक घटना-प्रसंग को स्मरण करने अथवा उससे प्ररणा लेने के लिए मनाए जाते हों चाहे फसल की कटाई एवं खलिहानों के भरने की खुशी में मनाए जाते हों। वे देश की एकता एवं अखंडता को मजबूत करते हैं। ये त्योहार जनमानस में नया उल्लास जगाते हैं। ऋतु-परिवर्तन के रूप में मनाए जाने वाले त्योहार हमें प्रकति के निकट ले जाते हैं तथा राष्ट्रीय पर्व हमारे मन में देशभक्ति एवं त्याग-बलिदान की भावना जगाते हैं। पंद्रह अगस्त आर छब्बीस जनवरी हमारे राष्ट्रीय पर्व माने जाते हैं।

(क) देश की एकता एवं अखंडता को कौन मजबूत करते ह?

(ख) त्योहार जनमानस में क्या जगाते हैं?

(ग) राष्ट्रीय पर्व मन में कैसी भावना को जगाते हैं?

(घ) हमारे राष्ट्रीय पर्व कौन-कौन-से हैं?

प्रश्न-2 दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर किसी एक विषय पर लगभग 250 शब्दों में निबंध लिखें। **10**

(अ) भ्रष्टाचार

क. भूमिका

ख. वर्तमान स्थिति

ग. भ्रष्टाचार के कारण

घ. रोकथाम के उपाय

च उपसंहार

(ब) व्यायाम के लाभ

क. भूमिका

ख. व्यायाम का महत्त्व

ग. व्यायाम से शरीर तथा मन पर नियंत्रण

घ. व्यायाम के प्रकार एवं लाभ

च उपसंहार

BiharboardQuestionpaper.com

(स) समय की महत्ता

क. भूमिका

ख. समय रहते सचेत होना

ग. दुरुपयोग की हानि

घ. सदुपयोग का लाभ

च. उपसंहार

प्रश्न-3 अपने जीवन के उद्देश्य के विषय में बड़े भाई को पत्र लिखें। **5**

अथवा

विद्यालय में साइकिल-स्टैंड बनवाने हेतु शिक्षा मंत्री को आवेदन-पत्र लिखें।

प्रश्न-4 संज्ञा के भेदों को उदाहरण सहित बताएँ। **5**

अथवा

क्रिया एवं अव्यय को उदाहरण सहित परिभाषित करें।

प्रश्न-5 रिक्त स्थानों की पूति करें। **5x1= 5**

क. अध्यापक का स्त्रीलिंग.....................होगा।

ख. 'ट' का उच्चारण स्थान..................होगा।

ग. 'अभियान' में..............उपसर्ग है।

घ. 'अंधेरा छाना' मुहावरा का अर्थ..................होगा।

च 'अग्रज' का विलोम पद........................होगा।

प्रश्न-6 निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करें: **5x1= 5**

क. विद्या विनय देता है।

ख. वह सभी पुस्तक पढ़ डाला।

ग. मैं किताब पढ़ा हूँ।

घ. प्राण निकल गया।

च उसने पुस्तक पढ़ रहा था।

BiharboardQuestionpaper.com

प्रश्न-7स्तम्भ 'अ' और स्तम्भ ब का सही मिलान आमने-सामने लिखकर करें।

6x1= 6

स्तम्भ (अ)		स्तम्भ (ब)	
1.	महात्मा गाँधी	क.	अक्षर ज्ञान
2.	यतीन्द्र मिश्र	ख.	लौटकर आऊँगा फिर
3.	विनोद कुमार शुक्ल	ग.	मेरे बिना तुम प्रभु
4.	अनामिका	घ.	शिक्षा और संस्कृति
5.	जीवनानंद दास	च.	नौबत खाने में इबादत
6.	रेनर मारिया रिल्के	छ.	मच्छली

निर्देश-प्रश्न 8 से 20 तक के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 30 शब्दों में दें।

प्रश्न-8मनुष्य बार-बार नाखनों को क्यों काटता है? 3

प्रश्न-9 'नंदिनागरी' किसे कहते हैं? किस प्रसंग में लेखक ने उसका उल्लेख किया है? 3

प्रश्न-10 बहादुर रात को कहाँ सोता था? 3

प्रश्न-11 नृत्य की शिक्षा के लिए पहले-पहले बिरजू महाराज किस संस्था से जुड़े और वहाँ किसके सम्पर्क में आए? 3

प्रश्न-12 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दें।

जाति-प्रथा को यदि श्रम-विभाजन मान लिया जाय तो यह स्वाभाविक विभाजन नहीं है क्योंकि यह मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है। कुशल व्यक्ति या सक्षम श्रमिक-समाज का निर्माण करने के लिए यह आवश्यक है कि हम व्यक्तियों की क्षमता इस सीमा तक विकसित करें, जिससे वह अपने पेशा या कार्य का चुनाव स्वयं कर सके।

क. प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से लिया गया है? 1

ख. इस पाठ के लेखक का नाम क्या है? 1

ग. इस गद्यांश का भावार्थ अपने शब्दों में लिखें 3

BiharboardQuestionpaper.com

प्रश्न-13 कवि के अनुसार भारत माता अपने ही घर में प्रवासिनी क्यों बनी हुई ह? 3

प्रश्न-14 छायाएँ दिशाहीन सब ओर क्यों पड़ती ह? स्पष्ट करें। 3

प्रश्न-15 मक्खी के जीवनचक्र का कवि द्वारा उल्लेख किए जाने का क्या आशय है? 3

प्रश्न-16 कवि अगले जन्म में क्या-क्या बनने की संभावना व्यक्त करता है और क्यों? 3

प्रश्न-17 निम्नांकित पद्यांश को पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दें:

मैं तुम्हारा वेश हूँ, तुम्हारी वृत्ति हूँ
मुझे खोकर तुम अपना अर्थ खो बैठोग?

क. प्रस्तुत पद्यांश किस पाठ से लिया गया है? 1

ख. इस पाठ के रचनाकार कौन ह? 1

ग. इस पद्यांश का भाव अपने शब्दों में व्यक्त करें। 3

प्रश्न-18 मेट्रन ने माँ को कैसा आश्वासन दिया? 3

प्रश्न-19 बल्लि अम्माल ने अपनी बेटी के साथ घर लौटने का निर्णय क्यों लिया? 3

प्रश्न-20 रंगप्पा कौन था वह मंगम्मा से क्या चाहता था? 4

Biharboardquestionpaper.com

BiharboardQuestionpaper.com

उत्तर मॉडल सेट-03

उत्तर-1(अ)

क. संघर्ष का अर्थ है-संकटों ,बाधाओं और मुसीबतों से मुकाबला करना।

ख. वह कभी जीवन में सफल नहीं हो पाता।

ग. संघर्ष

घ. लक्ष्य-प्राप्ति के लिए विघ्न-बाधाओं से साहस के साथ टकराना ही होगा, उन पर विजय प्राप्त कर ही लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होंगे।

च. व्यक्ति को चाहे जैसी परिस्थितियाँ मिलें, काँटे चुभें, हारे नहीं इंसान, जीवन का यही संदेश है।

छ. संदर्भ

उत्तर-1(ब)

क. त्योहार।

ख. नया उल्लास।

ग. देश-भक्ति एवं त्याग-बलिदान की भावना का जगाते हैं।

घ. 15 अगस्त एवं 26 जनवरी।

उत्तर-2

(अ) - भ्रष्टाचार

क. मानव का अपने आचार-व्यवहार से भ्रष्ट (गिर जाना) हो जाना ही भ्रष्टाचार है और ऐसा आचरण करने वाला भ्रष्टाचारी है। रिश्वत लेना, भाई-भतीजावाद, मिलावट, मुनाफाखोरी, कालाबाजारी, जमाखोरी, कर्तव्य-पालन में विमुखता, सरकारी पद एवं साधन का दुरुपयोग,आयकर चोरी, सादों में कमीशनखोरी आदि सभी कुछ तो भ्रष्टाचार ह।

ख. भारत में आज सर्वत्र भ्रष्टाचार का बोलबाला है। जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं रह गया है जहाँ ईमानदारी से कार्य होता हो। यहाँ के लोग जन्म से मृत्यु तक कितने बार न जाने कहाँ-कहाँ (अस्पताल, विद्यालय, कार्यालय इत्यादि में) इसका शिकार बनते हैं।

ग. भ्रष्टाचार के ऐसे विकराल रूप धारण करने का सबसे बड़ा कारण इस अर्थप्रधान युग में प्रत्येक व्यक्ति का धन-प्राप्ति में लगा होना है। मनुष्य अपनी असीमित आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु मनचाहे उपायों को अपना रहा है। हमारा नेतृत्व करने वाले

BiharboardQuestionpaper.com

भी अपने उद्देश्य एवं जिम्मेदारियों को भूल गये हैं। इसी के परिणामस्वरूप यह ऊपर–नीचे सभी जगह व्याप्त हो गया है।

घ. हमें समाज में इस समस्या का समाधान करने के लिए सबसे पहले आवश्यक यह है कि प्रत्येक व्यक्ति के मनोबल को ऊँचा उठाना। शिक्षा में नैतिकता के अंश को हर स्तर पर जोड़ना होगा जिससे की हमारी नई पीढ़ी में नैतिक प्रतिमानों का विकास हो। न्याय एवं दंड–व्यवस्था को दुरुस्त करना होगा जिससे कि बड़ा–से–बड़ा एवं छोटा–से–छोटा व्यक्ति को समान न्याय मिल सके। समाज में ईमानदार व्यक्ति को सम्मान देन की एवं भ्रष्टाचारियों को दंडित करने की व्यवस्था भी हो।

च. इस प्रकार आज दिनांदिन जिस प्रकार भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है उसे अगर कठोरता से नहीं रोका गया तो निश्चय ही यह महामारी का रूप ले लेगा। हमें ऐसी व्यवस्था विकसित करनी होगी जिससे न केवल भ्रष्टाचार से मुक्ति मिले अपितु इसका नामोनिशान ही मिट जाये तभी हम 'रामराज्य' की कल्पना कर सकते हैं।

(ब) व्यायाम के लाभ

(क) लोक में उक्ति प्रचलित है–'पहला सुख निरोगी काया'। स्वस्थ शरीर मानव के लिए अत्यावश्यक है जो बिना व्यायाम के नहीं हो सकता। आज की भागदौड़ से भड़ी जिन्दगी ने मनुष्य को इतना व्यस्त कर दिया है कि वह यह भी भूल गया है कि जो व्यक्ति अपने शरीर की उपेक्षा करता है, समझ लीजिए वह अपने लिए रोग, बुढापा और मृत्यु के दरवाजे खोलता है।

(ख) हमारे लिए भोजन, पानी एवं हवा की तरह व्यायाम भी अत्यावश्यक ह। इससे मांसपेशियाँ मजबूत होती हैं। रक्त–प्रवाह तेज होता है, पाचन–शक्ति बढ़ती है अस्थियाँ मजबूत होती हं शरीर का अनावश्यक पदार्थ पसीना बनकर बाहर निकल जाता है, त्वचा स्वस्थ बनती है, भूख बढ़ती है तथा शरीर सुडौल ओर सुगठित बन जाता है।

(ग) नियमित व्यायाम करने वाले व्यक्ति में एक ऐसी अद्भुत शक्ति आ जाती है कि सारा शरीर स्फूर्त हो जाता है। इसी के फलस्वरूप वह व्यक्ति अपने मन की भावनाओं पर भी नियंत्रण रख सकता है। यदि शरीर स्वस्थ रहेगा तो मन भी प्रसन्न रहेगा और हम हर काम आनंद एवं स्फूर्ति से कर सकेंगे।

(घ) व्यायाम के अंतर्गत अनेक प्रकार के क्रियाकलाप शामिल होते हैं। सबसे प्रमुख कार्य है प्रातः काल जल्दी उठकर घूमने जाना। प्रातः घूमने से एक ओर तो हमारे प्राणों में स्वच्छ वायु का संचार होता है, दूसरी ओर शरीर के सभी स्नायुओं में रक्त–संचार

BiharboardQuestionpaper.com

होता है। इसके अलावा लोग तरह-तरह की कसरतें भी कर सकते हैं। खेल भी व्यायाम के ही अंतर्गत आता है। खेलों से न केवल व्यायाम होता है अपितु यह मनोरंजन का भी सशक्त साधन है। नगरों एवं महानगरों में जिम भी खुल गये है। जिनके पास समय का अभाव होता है। उनके लिए यह बहत उपयोगी होता है।

(च) इस प्रकार नियमित व्यायाम अच्छे स्वास्थ्य के लिए उपयोगी औषधि है। मनुष्य मात्र को इसके लिए कुछ समय निश्चय निकाल लेना चाहिए। क्योंकि स्वस्थ्य शरीर में ही स्वस्थ मन का वास होता है।

(स)समय का महत्त्व

(क) प्राणिमात्र को इस संसार में आना एक निश्चित समयावधि के लिए ही होता ह। क्षणों से निर्मित यह हमारा जीवन क्षण-प्रतिक्षण बीतता जाता है और जीवन-लीला भी समाप्त हो जाती है। अतः हमारे लिए एक-एक पल महत्त्वपूर्ण है। हम इन पलों का सदुपयोग करते हुए जीवन का सफल एवं सार्थक बना सकते ह।

(ख) जो समय का मूल्य नहीं आँकता एवं व्यर्थ ही नष्ट करता है वह जीवन में न कुछ बन पाता है और न ही कुछ कर पाता है। खोया धन पुनः अर्जित हो सकता है, खोई प्रतिष्ठा पुनः मिल सकती है, बिगड़ा स्वास्थ्य उपचार से सुधर-सँवर सकता है, पर गया वक्त फिर हाथ नहीं आता है। अतः समय को पहचानने वाला सफलता के सोपानों पर चढ़ते हुए ऊँचाई को प्राप्त कर लेता है।

(ग) समय के सदुपयोग का अर्थ है-उचित अवसर पर उचित कार्य पूरा कर लेना। जो व्यक्ति, समाज, समुदाय, राष्ट्र, समय का सम्मान करना जानते हैं वे शीर्षस्थ होते ह। वे अपनी-अपनी शक्ति को कई गुणा बढ़ा लेते हैं। जीवन का एक-एक क्षण उपयोगी है। उसके प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करते हुए अपने जीवन-लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। जीवन तो क्षणभंगुर है। हो सकता है, वह अगले क्षण ही धोखा दे जाए। इतिहास गवाह है जो समाज, राष्ट्र, समय का सम्मान किया उसका आज भी है, जिसने तिरस्कार किया वे विलुप्त हो गये।

(घ) जो समय का मूल्य नहीं आँकता तथा उसे व्यर्थ नष्ट करता है, वह जीवन में कुछ नहीं बन पाता है। नीतिकारों का कहना है कि समय पर काम नहीं करने वाला स्वयं नाश को प्राप्त होता है। जो व्यक्ति आलस्य के वशीभूत होकर समय पर कार्य नहीं करते, समय उन्हें नष्ट कर देता है।

BiharboardQuestionpaper.com

(च) अतः मानवमात्र को समय की आगवानी करनी चाहिए न कि उसकी उपेक्षा। जिसे उसका सदुपयोग करना है उसे तैयार होकर उसके आने की अग्रिम प्रतीक्षा करनी चाहिए। जो समय क निकल जाने पर उसके पीछे दौड़ते हैं, वे जिन्दगी में सदा पिछड़ते रहते हैं।

उत्तर-3 परमादरणीय भैया, पटना

सादर प्रणाम। दिनांक 13-12-2016

मैं कुशल हूँ, आशा है कि आप भी कुशल होंगे। मैं इस बार मैट्रिक की परीक्षा में सम्मिलित हो रहा हूँ। इसको उत्तीण करने के बाद मैं महाविद्यालय में हिन्दी का प्राध्यापक बनना चाहता हूँ। मेरी जिन्दगी का यही एकमात्र उद्देश्य है। इस उद्देश्य की प्राप्ति में अधिक समय भी लग सकता है। आपसे यही अपेक्षा है कि आप हमें उद्देश्य की प्राप्ति में मेरे मनोबल को बढ़ाते रहें। यहाँ सभी लोग ठीक हं। भाभी को चरण-स्पर्श एवं गोलू, भोलू को मेरा आर्शीवाद।

आपका प्रिय अनुज

प्रभाकर

कक्षा-10 (ब)

पता

उत्तर-3 अथवा

सेवामें,

माननीय शिक्षामंत्री

बिहार सरकार,पटना।

विषयः- विद्यालय में साइकिल-स्टैंड बनवाने के संबंध में।

महाशय,

निवेदन है कि मैं पभाकर कुमार, उ0 वि0 रायपुर में कक्षा-10 का छात्र हूँ। मेरे विद्यालय में छात्रों की संख्या 2000 के आसपास है। साइकिल-स्टैंड नहीं होने के कारण छात्र इधर-उधर साइकिल रख देते हैं। विद्यालय में छुट्टी के समय अव्यवस्था बन जाती है। साइकिल की सुरक्षा एवं रखरखाव के लिए साईकिल-स्टैंड की बड़ी जरूरत है।

अतः आपसे सादर अनुरोध है कि मेरे विद्यालय में साइकिल का स्टैंड बनवाने की स्वीकृति प्रदान करने की कृपा की जाए। इसके लिए सम्पूर्ण विद्यालय-परिवार आपका आभारी रहेगा।

BiharboardQuestionpaper.com

आपका विश्वासभाजन

दिनांक –13–12–2016 प्रभाकर कुमार,

उ0 वि0, रायपुर

उत्तर–4

संज्ञा के भेद– अर्थ के आधार पर संज्ञा के मुख्यत: पाँच भेद हं।

1.	व्यक्तिवाचक	–	राम, रहीम, पद्माकर
2.	जातिवाचक	–	गाय, मनुष्य, वृक्ष
3.	समूहवाचक	–	मेला, सभा, सेना, वर्ग
4.	द्रव्यवाचक	–	सोना, घी, तेल, चावल
5.	भाववाचक	–	बचपन, मिठास, बुढापा

उत्तर–4अथवा

क्रिया– जिस शब्द से किसी काम के करने या होने का बोध हो उसे क्रिया कहते हैं– जैसे–खाना,पीना,उठना,बैठना इत्यादि।

अव्यय– अव्यय उन शब्दों को कहते हैं जिनमें लिंग, वचन, पुरुष आदि के कारण कभी कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे–बहुत, भारी, यहाँ, वहाँ इत्यादि।

उत्तर–05

क. अध्यापिका

ख. मूर्धा।

ग. अभि।

घ. गम से भर जाना।

च अनुज।

उत्तर–6

क. विद्या विनय देती है।

ख. उसने सभी पुस्तकें पढ़ डाली।

ग. मंने किताब पढ़ी है।

घ. प्राण निकल गये।

च. वह पुस्तक पढ़ रहा था।

उत्तर–7

1. घ
2. च
3. छ

BiharboardQuestionpaper.com

4. क.
5. ख
6. ग

उत्तर-8 नाखून पशुता के प्रतीक हैं। मनुष्य की पशुता को जितनी बार काटा जाता है वह उतनी ही बार जन्म ले लेती है। मनुष्य अपने से पशुता को निकाल कर सच्चे अर्थों में मनुष्य बना रहना चाहता है। अत: पशुता के प्रतीक नाखून जब भी बढ़त हं। तब ही मनुष्य उन्हें काट डालता है।

उत्तर-9 दक्षिण भारत की नागरी लिपि को 'नंदिनागरी' कहते है। लेखक ने नागरी लिपि के विकास के प्रसंग में उसका उल्लेख किया है।

उत्तर-10 सभी कायां को करने के बाद बहादुर भीतर के बरामदे में एक टूटी हुई बसखट पर सोता था।

उत्तर-11 नृत्य की शिक्षा के लिए पहले-पहले बिरजू महाराज निर्मला-जोशीजी की संस्था, 'हिन्दूस्तानी डांस म्यूजिक अकाडेमी' दिल्ली से जुड़े वहाँ वे कपिलाजी, लीला कृपलानी आदि के सम्पर्क में आए।

उत्तर-12 क. श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा

ख. भीवराम अम्बेदकर

ग. प्रस्तुत गद्यांश के माध्यम से लेखक कहना चाहता है कि जाति-प्रथा के आधार पर श्रम-विभाजन अस्वाभाविक है क्योंकि इसमें मनुष्य की रुचि का महत्त्व नहीं रहता है। अत: व्यक्तियों की क्षमता तथा कार्यकुशलता को इस क्षमता तक विकसित किया जाना चाहिए जिससे अपने कार्य व पेशा का चुनाव व स्वयं कर सकें। सक्षम श्रमिक वर्ग के निर्माण के लिए यह अत्यावश्यक है।

उत्तर-13 भारत गाँवों का देश है। गाँवों का विकास ही एक प्रकार से भारत का विकास है पर गाँवों के विकास पर किसी का ध्यान नहीं ह। गाँव उपेक्षित पड़े हुए हैं। गाँवों के साथ गैरों जैसा व्यवहार किया जाता है। सारी विकास योजनाएँ नगरों के लिए बनती हैं। इसीलिए भारत माता अपने ही घर में प्रवासिनी (परायी) बनी हुई हं।

BiharboardQuestionpaper.com

उत्तर-14 छाया प्रकाश की दिशा की विपरीत दिशा में बनती है। उगते हुए सूरज के प्रकाश में छायाएँ पश्चिम दिशा की ओर बनेंगी पर अणु बम क विस्फोट से निकल सूरज की रोशनी में मानव-जन की छायाएँ दिशाहीन स्थिति में सब ओर पड़ीं (उस विस्फोट से एक ही साथ विभिन्न दिशाओं से अनेक सूरज उत्पन्न हुए जिनकी रोशनी में मानव-जन की छायाओं को एक निश्चित दिशा में बनना संभव नहीं था।

उत्तर-15 कवि द्वारा उल्लेख किए जाने का आशय यह है कि जिस प्रकार मक्खी का जीवन-क्रम लगातार चलता रहता है पैदा होता ह, पैदा करती हैं, मर जाती हैं किन्तु इसके पीछे के उद्देश्यों को नहीं जानती हैं उसी प्रकार मनुष्य भी पैदा होते हैं, पैदा करते हैं और मर जाते हैं यही क्रम चलता रहता है। पैदा होने और पैदा करने के पीछे के उद्देश्यों से मनुष्य प्रायः परिचित नहीं होत हैं। यही मनुष्यों की नींद है। जीवन इतना हठीला होता है कि वह नींद के बावजूद अपने क्रम में लगातर बढ़ता रहता है।

उत्तर-16 कवि अगले जन्म में अबाबोल, कौआ, हंस, उल्लू और सारस बनने की संभावना व्यक्त करता है क्योंकि मरने के बाद भी वह अपनी मातृभूमि बंगाल से किसी-न-किसी रूप में जुड़ा रहे। मरने के बाद मनुष्य योनि में जन्म नहीं लेता तो कोई हर्ज नहीं, यदि वह पक्षी बनकर मातृभूमि से जुड़ा रहे।

उत्तर-17 क. मेरे बिना तुम प्रभु

ख. रेनर मारिया रिल्क

ग. एक भक्त के रूप में कवि भगवान से कहता है कि मैं तुम्हार वेश में (घर, मकान) हूँ। तुम मुझमें निवास करते हो। मुझसे ही तुम्हारे अस्तित्व का बोध होता है। यदि तुमने मुझे खो दिया तो तुम अपना अर्थ खो बैठोगे। भगवान की भगवत्ता, भक्त की सत्ता पर ही निर्भर है।

उत्तर-18 मेट्रन ने माँ को आश्वासन देते हुए कहा कि आज तक आप मंगु की माँ थीं पर जब आप उसे अस्पताल में छोड़कर जा रही हं तब आज से मैं इसकी नई माँ हूँ। आप किसी बात की चिंता न करें।

BiharboardQuestionpaper.com

उत्तर-19 बल्लि अम्माल अस्पताल के वातावरण से भयभीत हो गई थी। अस्पताल के सारे कर्मचारी संवेदनाहीन थे। कोई उसकी बात सुनने को तैयार नहीं था। ऐसी स्थिति में वह अपनी बेटी का इलाज उस अस्पताल में कैसे करवाती अत: उसने अपनी बेटी के साथ घर लौट जाने का निर्णय लिया।

उत्तर-20 रंगप्पा, मंगम्मा के गाँव में हो रहता था। वह शौकीन तबियत का था। वह जुआ भी खेलता था। वह मंगम्मा से थोड़ा कर्ज चाहता था क्योंकि उसकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। उसकी दृष्टि मंगम्मा के धन पर थी। वह उसके साथ नजदीकी बढ़ाकर उसके धन को पाना चाहता था। रंगप्पा जानता था कि मंगम्मा अपने बेटा से अलग हो गई है। अत: वह उसके अकेलेपन का फायदा उठाना चाहता था। वह मंगम्मा से उसका हाथ चाहता था उसके साथ घर बसाना चाहता था।

BiharboardQuestionpaper.com

BiharboardQuestionpaper.com

मॉडल सेट-04

समय 3 घंटा 15 मिनट **पूर्णांक-100**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देशः-

(क) परीक्षार्थी यथासम्भव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

(ख) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(ग) उत्तर देते समय शब्द-सीमा का ध्यान रखें।

(घ) दाहिनी ओर अंक निर्दिष्ट किये गये हैं।

(च) प्रश्न-पत्र को ध्यान से पढ़ें। इसके लिए 15 मिनट का अतिरिक्त समय दिया जा रहा है।

प्रश्न 1. (अ) निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दें। 6X2=12

साहित्य पढ़कर मानव-समाज अपने चेहरे पर लगे धब्बों का परिष्कार कर सकता है। अपनी दुर्बलता को तो दूर कर ही सकता है, साथ-ही-साथ उस साहित्य को अपने लिए उपयोगी एवं सबल भी बना सकता है। एक के अभाव में दूसरे का अस्तित्व कतई नहीं बना रह सकता है। दोनों एक-दूसरे के उत्प्रेरक हैं। दोनों को एक-दूसरे के दर्पण में देखकर सजना-सजाना है तभी दोनो का अस्तित्व सार्थक रूप में बना रहकर समाज के लिए हितकारी सिद्ध हो सकता है। आधुनिक युग का साहित्य भी वर्तमान समाज की दशा सुधारने में सक्षम है। वर्तमान युग में अधिकांश व्यक्ति विभिन्न प्रकार की कुंठाओं की दीवार में बंदी है। राजनीति का स्वरूप अत्यंत भ्रष्ट हो गया है। जन-समाज में असुरक्षा की भावना बढ़ रही है। समाज में अनैतिकता बढ़ती जा रही है। आधुनिक समाज में इन सभी स्थितियों का वर्णन मिलता है। साहित्य और समाज का अटूट सबंध है। साहित्य का लक्ष्य मानव-कल्याण है और मानव समाज की इकाई है।

(क) मानव समाज अपने चेहरे पर लगे धब्बों का परिष्कार कैसे कर सकता है?

(ख) साहित्य पढ़ने का क्या लाभ है?

(ग) साहित्य समाज के लिए हितकारी कब और कैसे होगा?

(घ) आज की राजनीति का स्वरूप कैसा है?

(च) साहित्य का लक्ष्य क्या है?

(छ) एक उपयुक्त शीषक दें।

BiharboardQuestionpaper.com

**ब.	निम्नांकित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिये प्रश्नों के उत्तर दें।	4X2=8**

भिखारी की भाँति गिड़गिडाना प्रेम की भाषा नहीं है। यहाँ तक कि मुक्ति के लिए भगवान की उपासना करना भी अधम उपासना में गिना जाता है। प्रेम कोई पुरस्कार नहीं चाहता। प्रेम सर्वथा प्रेम के लिए ही होता है। भक्त इसलिए प्रेम करता है कि बिना प्रम किए वह रह ही नहीं सकता है। जब तुम किसी मनोहर प्राकृतिक दृश्य को देखकर उस पर मोहित हो जाते हो तो तुम किसी फल की याचना नहीं करते और न वह दृश्य ही तुमसे कुछ माँगता है। फिर भी उस दृश्य का दर्शन तुम्हारे मन को आनंद से भर देता है।

(क) प्रेम का क्या उद्देश्य होता है?

(ख) कैसी उपासना अधम मानी गई है?

(ग) भक्त की क्या विवशता है?

(घ) प्राकृतिक दृश्य का आनंद प्राप्त करने में और द्रष्टा दोनों की क्या भूमिका होती है?

**प्रश्न-2दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 250 शब्दों में निबंध लिखिए।	10**

(अ) जीवन में कम्प्यूटर की उपयोगिता

(क) भूमिका-कम्प्यूटर का परिचय

(ख) कम्प्यूटर का कार्य और उसकी उपयोगिता

(ग) कार्यालय कायां में सहायक

(घ) उपसंहार

(ब) मँहगाई

(क) भूमिका-मँहगाई का स्वरूप

(ख) कारण

(ग) निवारण

(घ) उपसंहार

(स) दहेज-प्रथा

(क)भूमिका- दहेज का परिचय

BiharboardQuestionpaper.com

(ख) कारण

(ग) निवारण

(घ) उपसंहार

प्रश्न-3 अपने प्रधानाध्यापक के पास एक आवेदन-पत्र लिखें जिसमें दो दिनों के लिए छुट्टी की माँग की गई हो। **5**

अथवा

अपनी रचना के प्रकाशनार्थ सम्पादक के नाम पत्र लिखिए।

प्रश्न-4 पदबंध किसे कहते हैं? उनके भेदों को सोदाहरण लिखें। **5**

अथवा

समास किसे कहते ह? उसके भेदों को सोदाहरण लिखें।

प्रश्न-5 रिक्त स्थानों की पूर्ति करें। **5x1= 5**

(1) कमर कसना का अर्थ..............................है।

(2) उपकार का विपरीतार्थक शब्द......................है।

(3) व्याकरण का संधि-विच्छेद..........................है।

(4) मेला..................................संज्ञा है।

(5) 'ग' का उच्चारण-स्थान ....है।

प्रश्न-6 निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करें: **5x1= 5**

(1) मैं आपका दर्शन करने आया हूँ।

(2) तलवार बहादुर लोगों का अस्त्र है।

(3) छात्रों ने शिक्षामंत्री को अभिनंदन-पत्र प्रदान किया।

(4) मैं गाने की कसरत कर रहा हूँ।

(5) हमारे शिक्षक प्रश्न पूछते हैं।

प्रश्न-7 स्तम्भ 'अ' और 'ब' का सही मिलान आमने-सामने करें। **6x1= 6**

	स्तम्भ-अ		**स्तम्भ ब**
1.	प्रेमधन	क.	अक्षर-ज्ञान
2.	दिनकर	ख.	स्वदेशी
3.	अनामिका	ग.	जनतंत्र का जन्म

BiharboardQuestionpaper.com

4.	नलिन विलोचन शर्मा	घ.	बहादुर
5.	गुणाकर मूले	च.	नागरी लिपि
6.	अमरकांत	छ.	विष के दाँत

निर्देश- प्रश्न संख्या 8 से 20 तक के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 30 शब्दों में दं।

प्रश्न-8 जाति-प्रथा का दूषित सिद्धांत क्या है? 3

प्रश्न-9 लेखक ने किन विशेष क्षेत्रों में अभिरुचि रखने वाले के लिए भारत का प्रत्यक्ष ज्ञान आवश्यक बताया है? 3

प्रश्न-10 'स्वाधीनता' शब्द की सार्थकता लेखक क्या बताता है? 3

प्रश्न-11 'ला शत्रूज' क्या है और वह कहा अवस्थित है? आजकल उसका क्यों उपयोग होता है? 3

प्रश्न-12 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखें प्रश्नों के उत्तर दें:-
भग्गू जैसे ही बाहर जा रहा था तो पिताजी ने दहाड़कर कहा "भग्गू! अगर नरेन घर में घुसे तो साले के हाथ-पैर तोड़ कर बाहर फेंक देना। बाद में जा होगा मैं भुगत लूँगा।"
(क) यह गद्यांश किस पाठ से उद्धृत है? 1
(ख) इस पाठ के लेखक कौन ह? 1
(ग) गद्यांश का भाव स्पष्ट करें। 3

प्रश्न-13 कवि की दृष्टि में ब्रह्म का निवास कहाँ है? 3

प्रश्न-14 'एक वृक्ष की हत्या' कविता का वर्ण्य-विषय क्या है? 3

प्रश्न-15 हिरोशिमा में मनुष्य साखी के रूप में क्या है? 3

प्रश्न-16 कवि ने माली और मालिन किन्हें और क्यों कहा है? 3

BiharboardQuestionpaper.com

प्रश्न-17 निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर दिए गए पश्नों के उत्तर दें।

आरती लिए तू किसे ढूँढ़ता है मूरख,
मंदिरों में, राजप्रसादों में तहखानों में?
देवता कहीं सड़कों पर मिट्टी तोड रहें,
देवता मिलेंगे खेतों में खलिहानों में

(1) इस पाठ के रचनाकार कौन हैं? 1

(2) यह पद्यांश किस पाठ से लिया गया है। 1

(3) इस पद्यांश का भाव स्पष्ट करें। 3

प्रश्न-18 सीता को कब लगा कि आकाश अनन्त है, धरती बड़ी, रास्ता चौड़ा और चारों ओर खुली हवा है? 3

प्रश्न-19 वल्लि अम्माल मुदरै के बड़े अस्पताल क्यों गई थी? 3

प्रश्न-20 गुणनिधि का संक्षिप्त परिचय दीजिए। 4

BiharboardQuestionpaper.com

BiharboardQuestionpaper.com

उत्तर मॉडल सेट-04

उत्तर-1 (अ)

क. साहित्य पढ़कर मानव-समाज अपने चेहरे पर लगे धब्बों का परिष्कार कर सकता है।

ख. साहित्य पढ़कर अपनी दुर्बलताओं को दूर कर सकता है। अपने को उपयोगी एवं सबल भी बना सकता है।

ग. साहित्य और समाज दोनों एक-दूसरे के उत्प्रेरक हैं। दोनों का अस्तित्व सार्थक रूप में बना रहकर मानव- समाज के लिए हितकारी सिद्ध हो सकता है।

घ. आज की राजनीति का स्वरूप अत्यंत भ्रष्ट है।

च. साहित्य का लक्ष्य मानव-कल्याण है।

छ. साहित्य और समाज

उत्तर-1 (ब)

क. मन की सच्चाई को व्यक्त करना प्रेम का उद्देश्य है।

ख. भक्ति के बदले भगवान से मुक्ति माँगना अधम प्रेम है।

ग. भगवान के प्रति प्रेम भक्त की विवशता है।

घ. प्राकृतिक दृश्य का आनंद प्राप्त करने के लिए दृश्य और द्रष्टा दोनों को नि:स्वार्थ रहना पड़ेगा।

उत्तर-2 (अ) जीवन में कम्प्यूटर की उपयोगिता

भूमिका-वर्त्तमान युग कम्प्यूटर युग है। यदि भारतवर्ष पर नजर दौड़ाकर देखें तो हम पाएँगे कि आज जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों मं कम्प्यूटर का प्रवेश हो गया है। बैंक, रेलवे-स्टेशन, हवाई अड्डे, डाकखाने रुपये गिनने की मशीन तक कम्प्यूटरकत हो गई हैं। अब भी यह कम्प्यूटर का प्रारंभिक प्रयोग है। आने वाला समय इसके विस्तृत फैलाव का संकेत दे रहा है।

कम्प्यूटर की उपयोगिता-विज्ञान और तकनीक की अद्‌भुत खोजों ने मनुष्य के जीवन मे एक क्रांति ला दी है। आज के युग को यदि हम कम्प्यूटर का युग कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी शिक्षा, मनोरंजन, चिकित्सा, यातायात, संचार आदि सभी क्षेत्रों में कम्प्यूटर ने अपनी उपयोगिता सिद्ध की है। हड़बड़ी में होने वालो मानवीय भूलों के लिए कम्प्यूटर रामबाण औषधि है। यातायात के क्षेत्र में भी कम्प्यूटर की विशेष

BiharboardQuestionpaper.com

उपयोगिता है हवाई मार्गो का निर्धारण एवं नियंत्रण, महानगरों की रेड लाइट सिग्नल प्रणाली कम्प्यूटर की ही देन है।

कार्यालय म सहायक- कार्यालयों में कम्प्यूटर के माध्यम से कार्य करना अत्यंत सहज एवं सरल हो गया है। अब कार्यालय-संबंधी सभी महत्त्वपूण आँकड़ों एवं तथ्यों को फाइल में सुरक्षित रखा जाता है। संशोधन करने क लिए बार-बार टाइप नही करना पड़ता है जिससे समय की काफी बचत होती है। अनेक कार्य जिनमें कई व्यक्तियों की आवश्यकता होती थी अब वही कार्य एक कम्प्यूटर के माध्यम से बहुत कम समय में ही सम्पन्न हो जाता है।

उपसंहार- आधुनिक युग में कम्प्यूटर मनुष्य के जीवन के हर क्षेत्र से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुडा हुआ है। विज्ञान के इस अद्भुत उपहार को नकारना संभव नहीं है। यह आज की आवश्यकता है।

उत्तर-2 (ब) महँगाई

भूमिका

> खेती न किसान को,भिखारी को न भीख बलि
> वणिक को वनिज, न चाकर को चाकरी
> जीविका विहीन लोग सिघमान सोच बस
> कहे सब एकन से कहाँ जाई का करी।

भारत में महँगाई की वर्तमान मार से त्रस्त लोग गोस्वामी तुलसीदास की कवितावली की उपर्युक्त पंक्तियों को चरितार्थ करते नजर आते हैं। महँगाई, माँग और पूर्ति के सिद्धांत पर आधारित होती है।

कारण- महँगाई अति वर्षा, अनावृष्टि या सुखाड़ जैसे कारणों से होती है। भारतीय कृषि आज भी प्राकृतिक वर्षा की मोहताज है। जब माँग बढ़ जाए और चीजें कम हो जाएँ तो वे चीजें महंगी हो जाती हैं। जमाखोरी और काला बाजारी महँगाई की जननी है। मँहगाई बढ़ान में सुखाड़ का भी योगदान है।

निवारण -महँगाई न होने देने के लिए सरकारों को स्पष्ट नीति बनानी चाहिए। उत्पादन और वितरण की सही व्यवस्था करके महँगाई को आने से रोका जा सकता है। काला बाजारी और जमाखोरी रोकने के लिए छापामारी करके जमाखारों और कालाबाजारियों को पकड़कर मुकदमा चलाकर दंडित करना चाहिए, तब कृत्रिम महँगाई को रोका जा सकेगा।

BiharboardQuestionpaper.com

उपसंहार– महँगाई कृत्रिम हो या वास्तविक सरकार अपनी जिम्मेवारियों से बच नहीं सकती। यह पूरी तरह सरकार की जिम्मेदारी है कि लोगों को सुख-सुविधा मुहैया कराई जाए। इसके लिए कारगर नीतियाँ बनाने की जरूरत है। साथ ही बाढ़, सुखाड और जमाखोरी एवं कालाबाजारी पर भी कारगर अंकुश लगाकर महँगाई की मार से बचा जा सकता है।

उत्तर -2 (स) दहेज प्रथा

भूमिका:- दहेज भारतीय समाज के लिए अभिशाप है। यह कुप्रथा घ़न को तरह समाज को खोखला करती चली जा रही है। इसने नारी-जीवन तथा सामाजिक व्यवस्था को तहत-नहस करके रख दिया है। यह कुप्रथा है जिसने समाज को विकृत कर रखा है।

कारण:- दहेज रूपी समस्या आज आम आदमी की नींद खराब कर दी है। लोग अपनी बच्ची की शादी के लिए परेशान रहते हैं। आज इस समस्या का मूल कारण मानव-मन में छुपा हुआ लोभ है। ऐसे लोभी व्यक्ति, लड़की वालों से मोटी-मोटी रकमें माँगते हैं। कार, मोटरसाइकिल, टो.वी., फ्रोज, कंप्यूटर, लैप टॉप आदि के अलावा अन्य कीमती वस्तुएँ माँगी जाती हैं। आज इन वस्तुओं के नहीं दे पाने की वजह से कई शादियाँ टूट जाया करती हैं तथा बहुएँ प्रताड़ित भी होती हैं। दहेज प्रथा के दुष्परिणाम विभिन्न है। या तो कन्या के पिता को लाखों का दहेज देने के लिए घूस, रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार,काला-बाजार आदि का सहारा लेना पड़ता है या उनकी कन्याएँ अयोग्य वरों के मत्थे मढ़ दी जाती हं।

निवारण- दहेज की समस्या का निवारण तभी हो सकता है जब हम कृत संकल्प हों कि हम दहेज के तौर पर अधिक सामान या रुपये की माँग नहीं करेंगे, हम वही वस्तुएँ लेंगे जो लड़कीवाले स्वेच्छा से दे सकेंगे। इसके लिए जन-जागृति की आवश्यकता है। जब तक युवक दहेज का बहिष्कार नहीं करेंगे तबतक यह कोढ़ चलता रहेगा।

उपसंहार- निष्कर्ष के तौर पर हम यही कह सकते हं कि दहेज-समस्या से मुक्ति के लिए सामाजिक स्तर पर 'अभियान' चलाया जाना चाहिए तथा दहेज लेने वालों पर कड़ी पाबंदी लगनी चाहिए। दहेज अपनी शक्ति के अनुसार दिया जाना चाहिए, धाक जमाने के लिए नहीं, दहेज प्रेम का उपहार है, जबरदस्ती खींच ली जाने वाली संपत्ति नहीं।

BiharboardQuestionpaper.com

उत्तर- 3

सेवामें,

प्रधानाध्यापक

बी.पी. इंटर विद्यालय, बेगूसराय।

विषय :- दो दिनों की छुट्टी हेतु आवेदन।

महाशय,

सविनय निवेदन है कि मेरे पिताजी की तबीयत खराब है तथा उन्हें चिकित्सक के पास ले जाना हैं इस कार्य में दो दिन लग सकते हं।

अत: श्रीमान् से निवेदन है कि दिनांक 09-12-2016 से 10-12-2016 तक छुट्टी देने की कृपा करेंगे

आपका विश्वासी
निशांत कुमार
क्रमांक-05
वर्ग-दशम्
अनुभाग - ब

उत्तर- 3 अथवा

सेवामें

सम्पादक

दैनिक जागरण, पटना।

महाशय,

मैं आपकी सेवा में एक लेख आपके दैनिक समाचार पत्र में प्रकाशनार्थ भेज रही हूँ। यह लेख पर्यावरण से संबंधित है। इस अपने समाचार-पत्र में स्थान देकर कृतार्थ करेंगे।

धन्यवाद।

दिनांक- 09-12-2016

भवदीय
शिवानी
कृष्णा निकेतन
शिवपुरी, पटना।

BiharboardQuestionpaper.com

उत्तर -4

वाक्य के उस भाग को जिसमें एक से अधिक पद परस्पर सम्बद्ध होकर अर्थ तो देते हैं किन्तु पूरा अर्थ नहीं देते हुए पदबंध या वाक्यांश कहते हं। जैसे-भारत के प्रधानमंत्री।

पदबंध के भेद-

1. संज्ञा पदबंध- मिट्‌टी का तेल
2. सर्वनाम पदबंध- सदा सत्य बोलने वाले।
3. विशेषण पदबंध- चाँद से भी प्यारा।
4. क्रिया पदबंध- जाता रहता था। कहा जा सकता है।
5. क्रियाविशेलषण पदबंध- आधी रात तक,वर्ष के अंत तक

उत्तर -4 अथवा

दो या दो से अधिक पदों को अपने विभक्ति चिह्नों को छोड़ कर एक पद हो जाना समास कहलाता है। जैसे नोलकंठ

समास के भेद

1.	अव्ययीभाव	–	यथाशक्ति
2.	तत्पुरुष	–	राजपुरुष
3.	कर्मधारय	–	नीलकमल
4.	द्विगु	–	त्रिफला
5.	नम्र	–	अनाथ
6.	द्वन्द्व	–	सीताराम
7.	बहुब्रीहि	–	पीताम्बर

उत्तर -5
(1) दृढ निश्चय करना।
(2) अपकार
(3) वि+आकरण
(4) समूहवाचक
(5) कंठ

उत्तर -6
(1) मैं आपके दर्शन करने आया हूँ।
(2) तलवार बहादुर लोगों का शस्त्र है।

BiharboardQuestionpaper.com

(3) छात्रों ने शिक्षामंत्री को अभिनंदन-पत्र अर्पित किया।
(4) मैं गाने का अभ्यास कर रहा हूं।
(5) हमारे शिक्षक प्रश्न करते हैं।

उत्तर-7	**स्तम्भ-अ**	**स्तम्भ ब**
	1	ख
	2	ग
	3	क
	4	छ
	5	च
	6	घ

उत्तर-8 सामाजिक स्तर के अनुसार गर्भधारण के समय से ही मनुष्य का पेशा निर्धारित कर देना जाति-प्रथा का दूषित सिद्धांत है।

उत्तर-9 लेखक ने बताया है कि जिन्हें भू-विज्ञान में, वनस्पति जगत में, जीव के अध्ययन में, पुरातत्व के ज्ञान में एवं नीतिशास्त्र जैसे विषयों में विशेष अभिरुचि है, उन्हें भारत का प्रत्यक्ष ज्ञान आवश्यक है।

उत्तर-10 लेखक कहते हैं कि स्वाधीनता शब्द का अर्थ है कि अपने ही अधीन रहना क्योंकि यहाँ के लोगों ने अपनी आजादी के जितने भो नामकरण किये स्वतंत्रता, स्वराज, स्वाधीनता उनमें स्वबंधन आवश्यक हैं।

उत्तर-11 'ला शत्रूज' कर्थूसियन सम्प्रदाय का एक इसाई मठ है। वह रोन नदी के दूसरो ओर वीलनत्वल आविन्यों अर्थात् आविन्यों नई बस्ती में अवस्थित है। इन दिनों यह रंगमंच और लेखन से जुड़ा है। रंगकर्मी, संगीतकार, अभिनेता, नाटककार आदि वहाँ ठहरकर अपने रचनात्मक कार्य करते हैं।

उत्तर-12 (क) मछली
(ख) विनोद कुमार शुक्ल

BiharboardQuestionpaper.com

(ग) यहाँ भग्गू के द्वारा मछली लेकर बाहर जाने का वर्णन है, जिसे देखकर पिताजी ने नरेन पर क्रोध भरा स्वर प्रकट किया है क्योंकि मछली को देखकर सभी बच्चों के मन में कुतूहल का भाव भरा था तथा पिताजी की नजर सब पर थी।

उत्तर-13 जो प्राणी सांसारिक विषयों की आसक्ति से रहित है, जो मान-अपमान से परे है, हर्ष-शोक दोनों से जो दूर है उन प्राणियों में ही ब्रह्म का निवास बताया गया है। काम, लोभ, मोह जिसे नहीं छूते वैसे प्राणियों में निश्चित ही ब्रह्म का निवास है।

उत्तर-14 'एक वृक्ष की हत्या' का वर्ण्य विषय है नाना प्रकार के प्रदूषण और छीजते मानव- मूल्य।

उत्तर-15 आज भी हिरोशिमा में साखी के रूप में अर्थात प्रमाण के रूप में जहाँ-तहाँ जले हुए पत्थर तथा दीवारें पड़ी हुई ह। यहाँ तक कि पत्थरों पर, टूटी-फूटी सड़कों पर, घर की दीवारों पर लाश के निशान छाया के रूप में साक्षी है। यही साक्षी से पता चलता है कि अतीत में यहाँ अमानवीय दुर्दान्दता का नंगा नाच हुआ था।

उत्तर-16 कवि ने माली 'श्रीकृष्ण' को तथा मालिन 'श्री राधिकाजी' को कहा है चूँकि दोनों ही प्रेम रूपी फुलवारी के नायक-नायिका हैं। कवि ने यहाँ प्रेमरूपी फुलवारी के 'माली' और 'मालिन' बताकर प्रेम के उदात्त स्वरूप पर प्रकाश डाला है।

उत्तर-17 (1) रामधारी सिंह दिनकर

(2) जनतंत्र का जन्म

(3) इन पंक्तियों में कवि ने मजदूरों एवं किसानों को महिमा-मंडित किया है। भारत में भगवान तथा राजा तो किसान और मजदूर ह जो मंदिरों और महलों में नहीं रहते बल्कि वे अपने देश की उन्नति के लिए तत्पर रहते ह। वे चिलचिलाती धूप में भी सड़कों पर गिट्टी ताड़ते हुए मिलते हैं या फिर खेत-खलिहानों में निरंतर मेहनत करते हुए देखे जाते हैं।

उत्तर-18 सीता ने बेटी-बहुओं की अपेक्षाओं से त्रस्त होकर जब अपने पैरों पर खड़े होने के लिए घर छोड़ा तो उसे लगा कि आकाश अनंत, धरती बड़ी, रास्ता चौड़ा आर उसके चारों और खुली हवा है।

BiharboardQuestionpaper.com

उत्तर-19 बल्लि अम्माल अपनी बेटी पाप्पति को दिखाने मदुरै के बड़े अस्पताल में गई थी। गाँव के डॉक्टर ने उससे यही कहा था। प्राइमरी सेन्टर के डॉक्टर के कहने पर अगली सुबह वह मदुरै के बड़े अस्पताल में जाती है।

उत्तर-20 गुणनिधि गाँव का नौजवान है। कटक में पढ़ता है। वह साहसी है, उसे अपने सामाजिक दायित्व का बोध है और वह नेतृत्वगुण सम्पन्न है। जब वह गाँव आता है, बाढ का खतरा देखता है तो स्वयंसेवक दल का गठन करता है। स्वयं सदा उनके साथ रहकर उनका उत्साह बढ़ाता है-'निठल्लों के लिए जगह भी नहीं है दुनिया में'। खुद पैंट-शर्ट उतार कर, कमर कसरकर काम पर जुटा रहता है रात-दिन।

Biharboard Questionpaper.com

BiharboardQuestionpaper.com

मॉडल सेट-05

समय 3 घंटा 15 मिनट **पूर्णांक-100**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देशः-

(क) परीक्षार्थी यथासम्भव अपने शब्दों मं ही उत्तर दें।

(ख) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(ग) उत्तर देते समय शब्द-सीमा का ध्यान रखें।

(घ) दाहिनी ओर अंक निर्दिष्ट किये गये हैं।

(च) प्रश्न-पत्र को ध्यान से पढ़ें। इसके लिए 15 मिनट का अतिरिक्त समय दिया जा रहा है।

प्रश्न 1. (अ) निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दें। 6X2=12

परिश्रम उन्नति का द्वार है। मनुष्य परिश्रम के सहारे ही जंगली अव्यवस्था से वर्तमान विकसित अवस्था तक पहुँचा है। उसी के सहारे उसने अन्न, वस्त्र, घर, मकान, बाँध, पुल, सड़कें बनाई। तकनीक का विकास किया जिसके सहारे आज यह जगमगाती सभ्यता चल रही है। परिश्रम केवल शरीर की क्रियाओं का ही नाम नहीं है, मन तथा बुद्धि से किया गया परिश्रम भी परिश्रम कहलाता है। परिश्रम करने वाला मनुष्य सदा सुखी रहता है। परिश्रमी व्यक्ति का जीवन स्वाभिमान से पूर्ण होता है, वह स्वयं अपने भाग्य का निर्माता होता है। उसमं आत्मविश्वास होता है। परिश्रमी किसी भी संकट को बहादुरी से झेलता है तथा उसस संघर्ष करता है। परिश्रम कामधेनु है जिससे मनुष्य की सभी इच्छाएँ पूरी हो सकती हं। मनुष्य को मरते दम तक परिश्रम का साथ नहीं छोड़ना चाहिए। जो परिश्रम से दूर भागता है वह जीवन में पिछड़ जाता है।

क. मनुष्य विकसित अवस्था तक कैसे पहुँचा है?

ख. कौन सदा सुखी रहता है?

ग. परिश्रमी व्यक्ति का जीवन कैसा होता है?

घ. परिश्रम कामधेनु है कैसे?

च परिश्रम से भागने वाले का क्या होता है?

छ. एक उपयुक्त शीषक दें।

BiharboardQuestionpaper.com

ब. निम्नांकित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर दें। **4x2= 8**

युवा वर्ग से अभिप्राय है- 16 से तीस वर्ष की अवस्था के व्यक्तियों का समूह। युवावस्था मानव-जीवन की वह अवस्था होती है जिसमें उत्साह, साहस, कुछ कर गुजरने की भावना होती है। इस अवस्था में जोश के साथ होश की भी आवश्यकता होती है। यही युवावर्ग देश का भविष्य है। उसे ही भविष्य में देश की राजनीतिक, सामाजिक, वैज्ञानिक, आर्थिक आदि सभी प्रकार की क्रियाओं की बागडोर सँभालनी है। यदि युवावर्ग पुरुषार्थी, सत्यवादी, ईमानदार देशभक्त है और उसमें सेवा त्याग, स्नेह, सहानुभूति आदि मानवीय गुण हैं तो उनके हाथों में देश का भविष्य सुरक्षित है।

क. युवावर्ग से क्या अभिप्राय है?

ख. युवावस्था मानव-जीवन की कैसी अवस्था होती है?

ग. देश का भविष्य कौन है?

घ. कैसे युवावर्ग के हाथ में देश का भविष्य सुरक्षित है?

प्रश्न- 02 दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 250 शब्दों में किसी एक पर निबंध लिखें। 10

क. आदर्श अध्यापक

1. भूमिका
2. अध्ययनशीलता
3. जो माता-पिता दोनों का प्यार दें।
4. चरित्रवान
5. आज अध्यापक की दशा
6. उपसंहार

ख. वृक्षारोपण

1. भूमिका
2. वृक्ष की महत्ता
3. वृक्ष से लाभ
4. कटाई की प्रतिपूर्ति

BiharboardQuestionpaper.com

5. उपसंहार

ग. दुर्गा पूजा

1. भूमिका- परिचय
2. मनाने की तैयारी
3. संबंधित कथा
4. लाभ एवं हानि
5. उपसंहार

प्रश्न-03 विद्यालय में साइकिल की राशि-वितरण से संबंधित कार्यक्रम के संबंध में अपने पिता को एक पत्र लिखें। 5

अथवा

विद्यालय में शौचालय की व्यवस्था के संबंध में प्रधानाध्यापक के पास एक पत्र लिखें।

प्रश्न-04 विशेषण और उसके भेदों को लिखें। 5

अथवा

संधि एवं समास का भेद स्पष्ट करें और उदाहरण भी दें।

प्रश्न- 5 रिक्त स्थानों का भरें। 5x1= 5

क. दिगम्बर का संधि विच्छेद........................होगा।

ख. तिकोन में....................................समास है।

ग. 'च' का उच्चारण स्थान......................है।

घ. 'मैं'................................सर्वनाम है।

च. आस्तिक का विलोमपद.........................है।

प्रश्न- 6 निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करें: 5x1= 5

क. तितली के पास सुन्दर पंख होते हैं।

ख. वह कौन से मकान में रहता है?

ग. यहाँ नहीं लिखो।

घ. वह अनेकों भाषा जानता है।

च. उसके घड़ी में कै बजे हैं।

BiharboardQuestionpaper.com

प्रश्न-7 स्तम्भ 'अ' और स्तम्भ 'ब' का सही मिलान आमने-सामने करें। 6x1= 6

स्तम्भ अ		स्तम्भ ब
1. मैक्समूलर	क.	अतिसुधो स्नेह का मारग है, मो अँसुवानिहिं लै बरसौ
2. यतीन्द्र मिश्र	ख.	लौटकर आऊँगा फिर
3. अशोक वाजपेयी	ग.	एक वृक्ष की हत्या
4. घनानंद	घ.	आविन्यों
5. जीवानद दास	च.	नौवत खाने में इवादत
6. कुँवर नारायण	छ.	भारत से हम क्या सीखें

निर्देश-प्रश्न 8 से 20 तक के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 30 शब्दों में दें।

प्रश्न-8 परम्परा का ज्ञान किसके लिए सबसे ज्यादा आवश्यक है? 3

प्रश्न-9 गाँधीजी बढिया शिक्षा किसे कहते हैं? 3

प्रश्न-10 खोखा किन मामलों में अपवाद था? 3

प्रश्न-11 हमें भारत की शरण लेने की कब जरूरत पड़ेगी? 3

प्रश्न-12 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दें:

बच्चे कभी-कभी चक्कर में डाले दने वाले प्रश्न कर बैठते हैं। अल्पज्ञ पिता बड़ा दयनीय जीव होता है। मेरी छोटी लड़की ने जब उस दिन पूछ दिया कि आदमी के नाखून क्यां बढ़ते हैं तो मैं कुछ सोच ही नहीं सका। हर तीसरे दिन नाखून बढ़ जाते हैं, बच्चे कुछ दिन तक उन्हें बढ़ने दें, तो माँ-बाप अक्सर उन्हें डाँटा करते हैं।

1. यह किस शीर्षक पाठ से ली गई है? 1
2. प्रस्तुत गद्यांश के लेखक कौन हैं? 1
3. अल्पज्ञ पिता कैसा जीव होता है? 3

BiharboardQuestionpaper.com

प्रश्न–13 गुरु की कृपा से किस युक्ति की पहचान हो पाती है? 3

प्रश्न–14 कवि ने माली–मालिन किन्हें और क्यों कहा है? 3

प्रश्न–15 कवि कहाँ अपने आँसुओं को पहुँचाना चाहता है और क्यों? 3

प्रश्न–16 कवि को किस बात का दु:ख है? भाषा के संबंध में कवि क्या कहना चाह रहा है? 3

प्रश्न–17 निम्नांकित पद्यांश को पढकर दिए गये प्रश्नों के उत्तर दें:

सदियां से ठंडी–बुझी राख सुगबुगा उठी
मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है।

क. प्रस्तुत पंक्तियाँ किस पाठ से ली गई हैं? 1

ख. इस पाठ के रचनाकार कौन हैं। 1

ग. इस पद्यांश का भाव अपने शब्दों में लिखें 3

प्रश्न–18 मंगम्मा अपने बेटे–बहू से अलग क्यों हो गई? 3

प्रश्न–19 लक्ष्मी के दिल में कैसी आशंकाएँ उठती हं? 3

प्रश्न–20 सीता अपने ही घर में क्यों घुटन महसूस करती है? 4

BiharboardQuestionpaper.com

उत्तर मॉडल सेट-05

उत्तर-01 (अ)

क. मनुष्य परिश्रम के सहारे ही जंगली अव्यवस्था से वर्तमान विकसित अवस्था तक पहुँचा है।

ख. परिश्रम करनेवाला मनुष्य सदा सुखी रहता है।

ग. परिश्रमो व्यक्ति का जीवन स्वाभिमान से पूर्ण होता है।

घ. क्योंकि परिश्रम से मनुष्य की सभी इच्छाएँ पूरी हो जाती हं।

च. वह जीवन मे पिछड़ जाता है।

छ. परिश्रम का महत्त्व

उत्तर-01 ब.

क-16 से 30 वर्ष की अवस्था के व्यक्तियों का समूह।

ख. युवावस्था मानव-जीवन की वह अवस्था होती है जिसमें उत्साह, साहस एवं कुछ कर गुजरने की भावना होती है।

ग. युवावर्ग

घ. पुरुषार्थी, सत्यवादो, ईमानदार, देशभक्त के साथ-साथ जिसमें त्याग, स्नेह, सहानुभूति इत्यादि मानवोय गुणों वाले युवा वर्ग के हाथ में देश का भविष्य है।

उत्तर-2 (क) आदर्श अध्यापक

1. किसी भी छात्र के चरित्र-निर्माण में एक आदर्श शिक्षक का योगदान महत्त्वपूर्ण होता है। कहा गया है कि मनुष्य जब तक जीवित रहता है तब तक कुछ-न-कुछ सीखता ही रहता है किन्तु इतने में उसके कोई-न-कोई आदर्श अध्यापक होते हैं जिनकी प्रेरणा, आचरण एवं सिद्धांन्त का वह जीवनपर्यन्त अनुसरण एवं स्मरण करता रहता है। बिना किसी आदर्श शिक्षक के कोई आदर्श छात्र की कल्पना नहीं कर सकता। अत: शिक्षक को विचारकों ने कुम्भकार एवं माली भी कहा है।
2. आदर्श शिक्षक की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि वे अध्ययनशील होते हैं। वे नित नये ज्ञान की प्राप्ति हेतु प्रयत्न करते रहते हं एवं उन्हीं ज्ञान रूपी अमृत से छात्र को सोंचते रहते हं। आदर्श शिक्षक जिस ज्ञान को प्राप्त करते हैं पहले उस पर खुद

BiharboardQuestionpaper.com

चलने का प्रयास करते तदनंतर छात्रां को भी चलने की प्रेरणा देते हैं। इतिहास गवाह है कि हमारे देश में अनेकों ऐसे आदर्श शिक्षक हुए हैं। जिनके सिद्धान्त उस समय से आज तक उतने ही उपयोगी हं।

3. आदर्श शिक्षक, छात्रों को माता के समान स्नेह एवं पिता के समान हमेशा उसकी रक्षा करते हैं। प्राचीन काल में छात्र गुरुकुल में पढ़ते थे। वहाँ उसके माता-पिता नहीं रहते थे, उसके शिक्षक ही दोनों भूमिकाओं का निर्वहन करते थे। आज भी विद्यालय में छात्र अपने आदर्श शिक्षक से ही दोनों स्नेह प्राप्त करते हैं।
4. आदर्श शिक्षक का चरित्र छात्रों के लिए अनुकरणीय होते हैं। वे 'सादा जीवन उच्च विचार' के पोषक होते हं। प्राय: देखा जाता है कि वे सिद्धांत तो देते हैं लेकिन खुद उसका अनुपालन नहीं करते है, परिणामस्वरूप उनके सिद्धान्त को कोई स्वीकार नहीं करता है। आदर्श शिक्षक के पास विषय का ज्ञान भी पर्याप्त होता है एवं उनको छात्रों को अवगत करने का कौशल भी होता है। अत: हम जीवनपर्यन्त ऐसे शिक्षकों को स्मरण करते हैं।
5. आज अध्यापक की दशा चिंतनीय है। भौतिकवादी युग में जहां धन की प्रधानता होती जा रही है वहाँ शिक्षकों का आदर्श जीवन अधिकांश लोगों के लिए अनुकरणीय नहीं रहता। अच्छे लोग इस कार्य को करना नहीं चाहते हैं। इसके लिए व्यवस्था एवं समाज भी दोषी है। आज उपेक्षित होकर भी शिक्षक अपने आचरण एवं ज्ञान के द्वारा छात्रों के आदर्श होते है। हर संस्थान में ऐसे शिक्षकों को आज भी छात्र आदर्श मान कर ही जीवन में सफल होते हैं।
6. इस प्रकार छात्र के भविष्य-निर्माण में आदर्श अध्यापक आज भी उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं जितने प्राचीन काल में थे। समय के साथ आज इनमें भी कुछ बदलाव हुए हैं। इनका ज्ञान, चरित्र, आचरण, कुशलता, अध्ययनशीलता एवं 'सादा जीवन उच्च विचार' में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ है। इनके इसी स्वरूप से छात्र आज भी मार्गदर्शन प्राप्त करते रहते हैं।

उत्तर-2 ख. वृक्षारोपण

1. वृक्ष प्रकृति का अनुपम उपहार है। इस अमूल्य सम्पदा को बनाए रखने की महती आवश्यकता है क्योंकि ये मानव जीवन का संरक्षण एवं पोषण करते हं। इन्हीं आवश्यकताओं को जानकर हमारे पूर्वजों ने इसे पुत्र के समान माना है। जिस प्रकार

BiharboardQuestionpaper.com

मनुष्य ने अपने संतानों के द्वारा मानव-जाति की रक्षा की उसी प्रकार वृक्षारोपण के द्वारा प्रकृति का संतुलन बनाए रखा।

2. वृक्ष जल संतुलन में सहायक हैं। ये जहाँ जल लाते हैं वहीं बाढ़ को रोकने में भी मदद करते हैं। वृक्ष पृथ्वी को मरुभूमि बनने से रोकता है। प्रदूषण पर भी नियंत्रण वृक्षों के द्वारा होता है। ये अत्यधिक मात्रा में ऑक्सीजन अमृत को छोड़ते हैं एवं कार्बनडायऑक्साईड रूपी विष को शंकरजी के समान स्वीकार करते हैं। जीवों का भी संरक्षण इनके द्वारा होता है।
3. वृक्ष से हम लाभ-ही-लाभ प्राप्त करते हैं।
4. बढ़ती जनसंख्या एवं उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु मानव-समाज इसको निरंतर काटते ही जा रहा है आज वृक्ष एवं जंगलों की संख्या घटती जा रही ह। हम कटाई के साथ वृक्षारोपण के द्वारा इसकी प्रतिपूर्ति कर सकते हं। सरकार एवं समाज अब जागरूक होने लगे हं। विद्यालयों में भी वन महोत्सव जैसे कार्यक्रम होने लगे हैं जिसके द्वारा लोगों को वृक्षारोपण हेतु जागरूक किया जा रहा है। समाजसेवी संस्थाएँ भी इसमें आगे आ रही हैं।
5. पर्यावरण की रक्षा के लिए वृक्षारोपण को बढ़ावा देना होगा। जहाँ पुराने पेड काटते हैं वहाँ नये वृक्ष लगाकर उसकी भरपाई कर सकते हं। खाली स्थान पर भी हम वृक्षारोपण कर प्रकृति का संरक्षण एवं संवर्धन कर सकते हैं।

उत्तर-2 ग. दुर्गा पूजा

1. हमारा देश अनेक धर्मो को मानने वाले लोगों से भरा है। यहाँ प्रतिदिन, प्रतिसप्ताह, मास एवं वर्ष भर कहीं-न-कहीं कोई-न-कोई धार्मिक उत्सव एवं त्योहार लोग मनाते ही रहते हैं। हिन्दुओं के सभी त्योहारों में दुर्गा पूजा का एक विशेष महत्त्व है जिसमें शक्तिस्वरूपा देवी दुर्गा की उपासना, आराधना एवं पूजा होती है।
2. यह आश्विन शुक्ल पक्ष के पतिपदा से दशवीं तिथि तक मनाई जाती है। लोग घर, मंदिरों, पूजा-पंडालों में देवी की पूजा करत हैं। इसका प्रारंभ कलश-स्थापन से होता है एवं समापन विजयादशमी को जयंती कटने एवं बाँधने से होता है। षष्ठी तिथि को विल्व-निमंत्रण से विजयादशमी तक विशेष पूजन होता है। सप्तमी तिथि को माता को दर्शन आरंभ होता है जो विजयादशमी तक चलता रहता है।

BiharboardQuestionpaper.com

3. इसके संबंध में दुर्गासप्तशती के 13 अध्यायों में महिषासुर आदि के संहार की कथा एवं अन्य कथाएँ भी हैं। एक मान्यता यह भी है कि विजयदशमी के दिन ही राम ने रावण का संहार किया था जिसके कारण विजयादशमी के दिन रावण दहन भी किया जाता है।

4. दुर्गा पूजा के लाभ-ही-लाभ हैं। इससे लोगों को दुराचारों से लड़ने की प्रेरणा मिलती है। लोगों को देवी की आराधना से मानसिक शांति भी मिलती है, हानि कुछ भी नहीं है। कुछ लोग इस पूजा के बहाने सामाजिक समरसता को बिगाड़ने का प्रयास करते हैं। पूजा-पंडालों एवं साज-सज्जा पर व्यर्य खर्च भी करते हैं।

5. इस प्रकार दुर्गा पूजा सदियों से सामाजिक भेदभाव को मिटा कर एकता कायम करने की प्रेरणा देती है। इसमें समाज के सभी वर्गो के लोग अपन योगदान से इसे सफल बनाते हैं। यह त्योहार यही शिक्षा देता है कि विजय सत्य की होती है, अन्यायियों का सर्वनाश होता है।

उत्तर -3

पूज्यवर पिताजी — पटना

सादर प्रणाम। — दिनांक-12-12-2016

मैं कुशल हूँ। आशा करता हूँ कि आप भी कुशल होंगे। मेरे विद्यालय में हर वर्ष की भाँति इस बार भी साइकिल-राशि वितरित करने हेतु कैम्प लगाया गया। इसमें हमारे विद्यालय के प्रधान शिक्षक सहित सभी शिक्षक उपस्थित थे। मुख्य अतिथि के द्वारा ही 2500/-रुपया साइकिल-राशि प्राप्त किया। हमारे विद्यालय के सभी छात्र/छात्राओं को साइकिल-राशि दी गई।

यहाँ सभी लोग ठीक से हैं। आप ठीक से रहिएगा। ठंड से बचकर रहिएगा।

आपका प्रिय पुत्र

मानस कुमार

उत्तर- 3 अथवा

सेवामें

श्रीमान् प्रधानाध्यापक

उ0 वि0 खंगुरा, मुजफ्फरपुर

विषय :- विद्यालय में शौचालय की व्यवस्था कराने के संबंध में।

महाशय,

BiharboardQuestionpaper.com

निवेदन है कि मैं मानस कुमार आपके विद्यालय में वर्ग (दशम) का नियमित छात्र हूँ। मेरे विद्यालय में अभी तक शौचालय की व्यवस्था नहीं है जिसके कारण छात्रों को शौचकार्य हेतु विद्यालय से बाहर जाना पड़ता है।

अतः आपसे सादर अनुरोध है कि मेरे निवेदन पर गंभीरतापूर्वक विचार करते हुए शीघ्रातिशीघ्र शौचालय की व्यवस्था करान की कृपा की जाए।

आपका प्रिय छात्र

मानस कुमार

कक्षा(दशम)

उ0 वि0 खंगुरा

उत्तर-4 – जो शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बतलाये उसे विशेषण कहते हैं, जसे- अच्छा, लाल

विशेषण के भेद-

क. संख्यावाचक- एक, दो

ख. परिणामवाचक- थोडा, बहुत

ग. गुणवाचक- गोरा, काला

घ. सर्वनामिक विशेषण- ऐसा आदमी कहाँ मिलेगा?, यह ले लो।

उत्तर-4 अथवा

संधि- दो वणां के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे संधि कहते हैं। जैसे-रमा+ईश- रमेश जगत+ईश- जगदीश इत्यादि।

समास- दो या दो से अधिक पदों का अपनी विभक्ति-चिह्नों को छोड़ कर एक पद हो जाना समास कहलाता है। जैसे नीलकंठ, महापुरुष, इत्यादि।

उत्तर-5 क. दिक+ अम्बर

ख. द्विगु

ग. तालु

घ. पुरुषवाचक

च. नास्तिक

उत्तर-6 क तितली के पंख सुन्दर होते हैं।

ख. वह किस मकान में रहता है?

BiharboardQuestionpaper.com

ग. यहाँ मत लिखो।

घ. वह अनेक भाषाएँ जानता है।

च. उसकी घड़ी में कितने बजे हैं।

उत्तर-7

स्तम्भ-अ	स्तम्भ ब
1	छ
2	च
3	घ
4	क
5	ख
6	ग

उत्तर-8 जो लोग साहित्य में युग-परिवर्तन करना चाहते हैं, जो लकीर के फकीर नहीं हैं, जो रूढियाँ तोड़कर क्रांतिकारी साहित्य रचना चाहते हैं, उनके लिए साहित्य की परम्परा का ज्ञान सबसे ज्यादा आवश्यक है।

उत्तर-9 गाँधीजी सबसे बढ़िया शिक्षा अहिंसक प्रतिरोध को मानते हैं। यदि हमें अहिंसा के माध्यम से हिंसा का जबाव देने आ गया, तो समझना चाहिए कि हम सही अर्थों में शिक्षित हैं। बढ़िया एवं श्रेष्ठ (उदात) शिक्षा वही है जो हमें बुराई, अवगुण, हिंसा, अनैतिकता आदि का साहसपूर्वक विरोध करने के लिए तैयार करे।

उत्तर-10 सेन परिवार में खोखा का जन्म उस समय हुआ था जब मिस्टर सेन और मिसेज सेन को संतानोत्पत्ति की कोई उम्मीद बाकी नहीं रह गई थी। सेन परिवार में पारिवारिक अनुशासन का पालन करना बस लड़कियों के जिम्मे था। सेन की पाँचों लड़कियाँ उनके द्वारा बनाए गए नियमों का अक्षरशः पालन करती थीं पर खोखा के लिए कोई नियम नहीं था। वह पारिवारिक नियमों के ऊपर था। इन्हीं मामलों में खोखा अपवाद था।

उत्तर-11 मानव-मस्तिष्क के चाहे किसी भी क्षेत्र का आप अपने विशिष्ट अध्ययन का विषय क्यों न बना लें, यथा-भाषा, धर्म, दैवतविज्ञान, दर्शन, कानून, पुरातन

BiharboardQuestionpaper.com

विज्ञान इत्यादि इनमें से प्रत्येक क्षेत्र में विचरण करने के लिए भले ही आप चाहें-न-चाहें हमं भारत की शरण लेनी ही होगी क्योंकि मानव-इतिहास से जुडा हुआ बहुमूल्य उपादेय एवं प्रामाणिक सामग्री का एक बहुत बहुत बड़ा भाग भारत और केवल भारत में ही संचित है।

उत्तर-12 1. हजारी प्रसाद द्विवेदी।

2. नाखून क्यों बढ़ते हं।

3 अल्पज्ञ पिता बड़ा दयनीय जीव होता है जब पिता के पास उसके बच्चों के द्वारा पूछे गये प्रश्नों का उत्तर नहीं होता तो वह असमंजस की स्थिति में पड़ जाता है। तब उसकी हालत दयनीय जीव के समान होती है।

उत्तर-13 गुरु की कृपा से ही किसी व्यक्ति को सुख, दुख हर्ष-विवाद, आशा-निराशा, निंदा स्फुर्ति, मिट्टी- सोना, मान-अपमान में अभेद ज्ञान होता है। इसी अभेद ज्ञान को गुरूनानक ने गुरु की कृपा से प्राप्त युक्ति का नाम दिया है।

उत्तर-14 कवि ने कृष्ण को माली तथा श्री राधिका को मालिन कहा है। जिस तरह माली और मलिन दिनरात पुष्पवाटिका की देख-रेख करते हं। और उन्हीं के प्रयास से वाटिका में विभिन्न प्रकार के फूल खिले रहते हैं उसी प्रकार राधा-कृष्ण के कारण ही प्रेम-वाटिका हमेशा भावपुरुष खुले रहते हैं।

उत्तर-15 कवि अपने आँसुओं को सुजान को आँगन में पहुँचाना चाहता है ताकि सुजान उसकी विरह वेदना से परिचित हो सके एवं अपने दर्शन से उसकी वेदना को दूर कर सके।

उत्तर -16 कवि को इस बात का दुख है कि विदेशी विद्या पढ़कर भारतीयों की बुद्धि विदेशी हो गई है। और परदेश की चालचलन अच्छी लगने लगी है।

BiharboardQuestionpaper.com

सारे भारतियों मं अपनी संस्कृति के प्रति कोई आस्था नहीं रह गई है। भारतीयों ने अपनी भाषा हिन्दी को छोड़कर अंग्रेजी भाषा को अपना लिया है। अंग्रेजी बोलने में उन्हें गर्व का अनुभव होता है। यह अत्यंत दु:खद स्थिति है।

उत्तर –17 क. जनतंत्र

ख. रामधारी सिंह 'दिनकर'

ग. इन पद्यांशों में कवि ने जनता में आए जागरण का उल्लेख किया है। कवि कहते हं कि युग–युग से प्रताड़ित–पीड़ित जनता अपना शैथिल्य त्याग कर अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने को उद्यत हो गई है। जिस तरह ठंढी–बुझी राख के भीतर कभी–कभी बची–खुचो छोटी चिनगारी अचानक हवा का झोंका पाकर धधक उठती है, उसी तरह युग–युग से शोषित–प्रताड़ित जनता आज अपनी निष्क्रियता त्याग कर अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्षशील हो उठी है। तुच्छ समझी जानेवाली (मिट्टी) जनता ने अपने सतत संघर्ष से सत्ता पर अपना अधिकार जमा लिया है। सत्ता प्राप्त कर जनता गर्व से फूली नहीं समाती है।

उत्तर –18 मंगम्मा की बहू ने अपने बेटे को किसी बात पर खूब पीटा। इससे मंगम्मा एवं बहू के बीच तकरार बढ़ गई। माँ ने बेटे से निर्णय करने के लिए कहा। बेटा ने पत्नी का पक्ष लिया। उसने कहा कि मं पत्नी को छोड़ दूँगा तो वह बेसहारा हो जाएगी। तुम्हारा क्या है माँ, तुम्हार पास गाय–बैल हं, पैसा है, तुम्हारा गुजर–बसर हो सकता है। मंगम्मा बेटे का इरादा पढ़ कर अपने बेटे–बहू से अलग हो गई।

उत्तर–19 लक्ष्मी के दिल में तरह–तरह की आशंकाएँ उठती हैं। उसके दिल में विनाशकारी बाढ़ की आशंका उठती है तो उसका हृदय तड़प उठता है। उसके दिल में बाढ से बर्बादी की आशंका उठती है तो उसका दिल बैठ जाता है। क्या करेगी अकेली वह! कैसे बचाएगी अपने बच्चों की जान! कैसे झेलेगी बाढ़ की विभीषिका! कैसे करेगी संकट का मुकाबला! लक्ष्मण भी तो नहीं है।

BiharboardQuestionpaper.com

उत्तर-20 पति की मृत्यु के बाद घर की स्थिति दयनीय हो गई है। भरा-पूरा परिवार है किन्तु भाइयों में मतभेद उत्पन्न हो गए हं। आत्मीयता का अभाव हो गया है। बहुएँ भी छोटी-छोटी बातों पर आपस में कलह करती हैं। सीता अपने पुत्रों के साथ परिवार में रहती है पर माँ बेटा के बीच जो आत्मीयता होती है, वह कहाँ है! कोई भी बेटा अपनी माँ से सुख-दुख की बात नहीं करता है। बहू की कड़वी बातें उसे चुभती रहती हैं। अपनी ही संतान से आज विक्षुब्ध हो गई है। अपन मन की व्यथा किसी से वह नहीं कह सकती है। यही कारण है कि अपने ही घर में उसे घुटन महसूस होती है।

BiharboardQuestionpaper.com

BiharboardQuestionpaper.com

मॉडल सेट-06

समय 3 घंटा 15 मिनट **पूर्णांक-100**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देशः-

(क) परीक्षार्थी यथासम्भव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

(ख) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(ग) उत्तर देते समय शब्द-सीमा का ध्यान रखें।

(घ) दाहिनी ओर अंक निर्दिष्ट किये गये हैं।

(च) प्रश्न-पत्र को ध्यान से पढ़ें। इसके लिए 15 मिनट का अतिरिक्त समय दिया जा रहा है।

प्रश्न 1. (अ) निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीच दिए प्रश्नों के उत्तर दें। 6 x 2 =12

साहित्य और समाज का सम्बन्ध जानने के लिए हमें पहले यह जानना होगा कि साहित्य क्या है? इसका उद्देश्य क्या है? सृष्टि में कोई भी प्राणी, पदार्थ या अन्य कुछ निरुद्दश्य नहीं है। मानव इस सृष्टि का सर्वोच्च प्राणी है। मानव ने अपने सतत प्रयास और साधना से आज तक जो भी प्राप्त किया है उसमें साहित्य और कला उसकी सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि रही है। इसलिए साहित्य का मूल स्रोत मानव को ही माना गया है। इस प्रकार साहित्य का मूल उद्देश्य जीवन और समाज की कुरीतियों तथा सभी प्रकार की बुराइयों से हटाकर स्वस्थ, सुन्दर और आनन्दमय जीवन की ओर अग्रसर करना है। शब्द-रचना की दृष्टि से साहित्य शब्द में दो शब्दों में हित का भाव पाते हैं अर्थात् जो रचना मानवता का हित साधन करती है वह साहित्य है। डॉ॰ श्यामसुन्दर दास के अनुसार "साहित्य वह है जो हृदय में अलौकिक आनन्द या चमत्कार की सृष्टि करे। जबसे मानव ने सोचना-विचारना, पढ़ना-लिखना सीखा है तभी से साहित्य में आदान-प्रदान

BiharboardQuestionpaper.com

की प्रक्रिया भी चल रही है और तब तक चलती रहेगी जब तक कि मनुष्य में सोचने-समझने के गुण विद्यमान रहेंगे।

(क) इस सृष्टि का सर्वोच्च प्राणी कौन है? 2

(ख) मानव की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि क्या है? 2

(ग) साहित्य का मूल उद्देश्य क्या है? 2

(घ) साहित्य किसे कहते हैं? 2

(च) मनुष्य में सोचने समझ ने के गुण कब तक बने रहेंगे? 2

(छ) इस गद्यांश का एक उपयुक्त शीर्षक दें। 2

(ब) निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दें। **4 x 2 = 8**

भारतीय संस्कृति हमें नूतन चिंतन और विचारों से ओत-प्रोत करती है। संस्कृति के भीतर रहन-सहन, परम्पराएँ, विभिन्न मान्यताएँ एवं विचारधाराएँ शामिल होती हं। हमारी भारतीय संस्कृति विशेष उदार रही है। वह हमें मानवतावादी तथा सुसंस्कृत बनना सिखलाती है। संस्कृति के द्वारा हम लोक व्यवहार करना, सेवा की भावना अपनाना तथा पवित्र कर्म में निरत रहना सीखते हैं। संस्कृति को नहीं अपनाने वाला व्यक्ति समाज में असभ्य कहलाता है। गाँधीजी सदैव कहा करते थे कि ''हमें सभी प्राणियों में ईश्वरत्व के दर्शन करने चाहिए। मानव-मात्र की सच्ची सेवा ही ईश्वर भक्ति है।'' आज की नई पीढ़ी का दायित्व है कि वे इसे जरूरी समझें और आत्मशुद्धि पर बल दें।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का एक उचित शीर्षक दं। 2

(ख) भारतीय संस्कृति कैसी है? 2

BiharboardQuestionpaper.com

(ग) संस्कृति हमें क्या सिखलाती है? 2

(घ) महात्मा गाँधी के क्या विचार थे? 2

प्रश्न 2.दिये गये संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 250 शब्दों में किसी एक विषय पर निबन्ध लिखें। **10**

(अ) आतंकवाद

संकेत बिंदु- (i) भूमिका

(ii) इसका स्वरूप

(iii) धार्मिक उन्माद से प्रेरित

(iv) विरोध

(v) उपसंहार।

(ब) वसंत ऋतु

संकेत बिन्दु-(i) भूमिका

(ii) प्रकृति में बदलाव

(iii) उल्लास की अभिव्यक्ति

(iv) उपसंहार

(स) मेरी रेल यात्रा

संकेत बिन्दु-(i) भूमिका

(ii) पूर्व तैयारी

(iii) यात्रा में संयम

(iv) उपसंहार

प्रश्न 3. सत्संगति का महत्त्व बताते हुए अपने मित्र को एक पत्र लिखिए। **5**

BiharboardQuestionpaper.com

अथवा

निर्धन-छात्रकोश से सहायता हेतु अपने प्रधानाध्यापक को एक पत्र लिखें।

प्रश्न- 4 संधि किसे कहते हैं? स्वर संधि के भेदों के नाम लिखें। **5**

अथवा

बोली और भाषा के अंतर को स्पष्ट करें।

प्रश्न 5 रिक्त स्थानों की पूर्ति करें। **5 x 1=5**

(क) किसी भी वर्ण का उच्चारण ----------के भिन्न-भिन्न अंगों से होता है।

(ख) मेरी निर्धनता पर दया करो। (भाववाचक संज्ञा चुनें)-----------।

(ग) 'प' का उच्चारण स्थान------------होता है।

(घ) प्रतिकूल का विलोम-------------होता है।

(च) तेल------------वाचक संज्ञा है।

प्रश्न 6 निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करें- **5 x 1=5**

(i) जल्द से यह काम करना है।

(ii) ऊँची दुकान फीकी पकवान।

(iii) आपकी वर्तमान हालात ठीक नहीं है।

(iv) मेरे कान में आज बड़ा खुजलाहट है।

(v) उसने गाड़ी को खड़ी कर दी।

प्रश्न 7. स्तम्भ 'अ' और स्तम्भ 'ब' का सही मिलान सामने-सामने लिखकर करें।

6 x 1=6

स्तंभ-'अ'	**स्तम्भ 'ब'**
(i) परम्परा का मूल्यांकन	(क) बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमधन'
(ii) नगर	(ख) गुणाकर मूले
(iii) नाखून क्यों बढ़ते हैं?	(ग) राम विलास शर्मा

BiharboardQuestionpaper.com

(iv)	लौटकर फिर आऊँगा।	(घ)	सुजाता
(v)	स्वदेशी	(च)	हजारी प्रसाद द्विवेदी
(vi)	नागरी लिपि	(छ)	जीवनानन्द दास

निर्देश:- प्रश्न संख्या 8 से 20 तक के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 30 शब्दों में दें।

प्रश्न- 8 लेखक ने 'श्रम विभाजन और जाति प्रथा' पाठ में किन प्रमुख पहलुओं से जाति-प्रथा को एक हानिकारक प्रथा के रूप में दिखाया है? 3

प्रश्न- 9 सेन साहब के परिवार म बच्चों के पालन-पोषण म किए जा रहे लिंग-आधारित भेद-भाव का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए। 3

प्रश्न-10 रोज-रोज अपने बेटे की पिटाई करने वाला गिरधारीलाल मदन द्वारा 'खोखा' की पिटाई करने पर उसे दंडित करने के बजाय प्रसन्नता से अपनी छाती से क्यों लगा लेता है? 3

प्रश्न-11 बहादुर अपने घर से क्यों भाग क्या था? 3

प्रश्न-12 (i) **मदन और ड्राइवर के बीच के विवाद के द्वारा कहानीकार क्या बताना चाहता है?** 3

(ii) **'विष के दाँत' शीर्षक कहानी का नायक कौन है?** 1

(iii) **काशू और मदन के बीच झगड़े का क्या कारण था?** 1

प्रश्न-13 'राम नाम बिरथे जगि जनमा' पद्य का सारांश अपने शब्दों में लिखें। 3

प्रश्न-14 ''आसा मनसा सकल त्यागि कै जग ते रहैं निरासा।

BiharboardQuestionpaper.com

काम क्रोध जेहि परसे नाहिन तेहि घट ब्रह्म निवासा॥
गुरु किरपा जेहि नरपै कीन्ही तिन्ह यह जुगति पिछानी।
नानक लीन भयो गोविंद सो ज्यों पानी संग पानी ॥
उपर्युक्त पंक्तियों का भावार्थ लिखें। 3

प्रश्न-15 'प्रेम अयनि श्री राधिका, प्रेम बरन नंदनंद। इस पक्ति के अनुसार 'प्रेम बरन' का अर्थ क्या है? 3

प्रश्न-16 निबन्धकार मनुष्य के नाखून की ओर देखकर कभी-कभी निराश क्यों हो जाता है? 3

प्रश्न-17 निम्नलिखित पद्य को पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दें-

अबकी घर लौटा तो देखा वह नहीं था-
वही बूढ़ा चौकीदार वृक्ष
जो हमेशा मिलता था घर के दरवाजे पर तनात
पुराने चमड़े का बना उसका शरीर
वही सख्त जान
झुर्रियाँ खुरदुरा तना मैला कुचैला,
राइफल सी एक सूखी डाल,
एक पगड़ी फूल पत्तीदार,
पाँवों में फटा पुराना जूता,
चरमराता लेकिन अक्खड़ बलबूता।

(i) प्रस्तुत पंक्तियाँ किस कविता से ली गई हैं? 1

(ii) कवि को वृक्ष बूढ़ा चौकीदार क्यों लगता था? 1

BiharboardQuestionpaper.com

(iii) वृक्ष रूपी बूढ़े चौकीदार का पहनावा कैसा था? 3

प्रश्न–18 रंगप्पा कौन था और वह मंगम्मा से क्या चाहता था? 3

प्रश्न–19 मंगम्मा का चरित्र-चित्रण करें। 3

प्रश्न–20 'माँ' कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर विचार करें। 4

BiharboardQuestionpaper.com

BiharboardQuestionpaper.com

उत्तर मॉडल सेट-06

उत्तर- 1(अ)

(क) मानव इस सृष्टि का सर्वोच्च प्राणी है।

(ख) साहित्य और कला मानव की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि है।

(ग) साहित्य का मूल उद्देश्य है जीवन और समाज की समस्त कुरीतियों एवं बुराइयों को दूर कर उन्हें सौंदर्य एवं आनन्द की ओर अग्रसर करना।

(घ) जो रचना मानवता का हित साधन करने के साथ हृदय में अलौकिक आनन्द या चमत्कार की सृष्टि करे, वह साहित्य है।

(च) जब तक साहित्य और समाज में आदान-प्रदान की प्रक्रिया चलती रहेगी, तब तक मनुष्य में सोचने समझने के गुण विद्यमान रहेंगे।

(छ) साहित्य और समाज की पारस्परिकता।

उत्तर- 1(ब)

(क) शीर्षक-नई पीढ़ी और भारतीय संस्कृति ।

(ख) भारतीय संस्कृति विशेष रूप से अन्दर संस्कृति है।

(ग) संस्कृति हमें लोक व्यवहार करना, सेवा की भावना अपनाना तथा पवित्र कर्म में निरत रहना सिखलाती है।

(घ) महात्मा गाँधी के विचार मानवतावादी और आध्यात्मिक थे। उनके विचार में सभी प्राणी ईश्वर स्वरूप हैं।

BiharboardQuestionpaper.com

प्रश्न 2. (अ) आतंकवाद

'आतंकवाद' नागरिकों, सशस्त्रिसैनिकों या राजा के विरुद्ध लोगों द्वारा अपने वांछित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रयोग किया जाने वाला बलपूर्वक सशस्त्र संघर्ष तरीका है। आतंकवादी वर्त्तमान शासन व्यवस्था एवं शांति को उखाड़ फेकने एवं वांछित राजनीतिक परिवर्तन के लिए विस्फोट, अपहरण, आक्रमण, हत्या जैसे हिंसात्मक आपराधिक गतिविधियों का सहारा लेते हैं।

आज प्रा विश्व किसी-न-किसी रूप में आतंकवाद से त्रस्त है। हमारे देश में भी तथाकथित आतंकवादी एवं विद्रोही गुटों के अमानवीय कृत्यों ने अर्थव्यवस्था एवं विकास को बुरी तरह प्रभावित किया है। आजादी के कुछ वर्षो के पश्चात् ही हमारा देश आतंकवाद के कई रूपों से त्रस्त रहा है। देश की सीमा पर बाहरी, घुसपैठिये आतंकवादियों ने कहर बरपाया है तो देश के भीतर नक्सलवादी आतंकवाद ने जीना मुश्किल कर दिया है। देश का प्रत्येक राज्य आतंकवाद की अग्नि में झुलस रहा है। आतंकवाद कभी अर्थव्यवस्था की नगरी मुंबई को, कभी राज-काज के संचालन का केंद्र संसद को तो कभी सार्वजनिक स्थल पर आम-जन को अपना निशाना बनाता है।

वर्तमान आतंकवाद का सबसे विभत्स, घृणित एवं भयानक पहलू यह है कि इसमें अधिकतर लोग धर्म और पंथ से प्रेरित होते हैं। आतंकवाद शासन तथा व्यवस्था दोनों के लिए एक गम्भीर समस्या है जो शासन को विघटन की ओर ले जा रहा है। हत्या, यातना, लूटपाट, फिरौती आदि घटनाएँ आतंक और भय का वातावरण पैदा करती हैं। आतंकवादी आतंक तथा दहशत पैदा करने के लिए स्त्रियों, बच्चों एवं नागरिकों को मौत के घाट उतार देते हैं।

कुल मिलाकर कहें तो आतंकवाद मानवीय मूल्यों की पूर्णतया अवहेलना करता है। यह विश्वक्षितिज पर तेजी से उभर रहा वह बदनुमा दाग है,

BiharboardQuestionpaper.com

जिसे नेस्तनाबूद नहीं किया गया तो मानवता के विरुद्ध यह कालिमा बढ़ती ही जाएगी। इसलिए, हमारा देश संकल्पित है कि वह सभी जगहों पर सभी प्रकार के आतंकवाद का विरोध करेगा। इस संग्राम में इंदिरागाँधी एवं राजीवगांधी की कुर्बानी हमें तथा हमारी आनेवाली पीढ़ियों को आतंकवाद के विरूद्ध लड़ने के लिए सदैव प्रेरित करती रहेगी।

आतंकवाद सदैव गैरकानूनी, अमानवीय एवं निंदनीय कृत्य है। आज के दौर में सूचना प्रौद्योगिकी के प्रसार के कारण आतंकवाद और भी घातक बनता जा रहा है। आतंकवादियों द्वारा रासायनिक, जैविक, नाभिकीय अस्त्रों को प्राप्त करना विश्व के लिए एक चुनौतिपूर्ण विपदा बन गई है।

(ब)वसंत ऋतु

मेरी प्रिय ऋतु है- वसंत ऋतु। यह सारी ऋतुओं में सुन्दर, आकर्षक, रमणीय और मनोरम है। वसत को 'ऋतुराज' कहा जाता है। इसके आगमन की प्रतीक्षा रहती है। धरती इसकी में पलक पाँवड़े बिछाये रहती है पूरी प्रकृति के साथ। वसंत प्रकृति का यौवन है। वसंत प्रकृतिरूपी सुन्दरी का मनमोहक श्रृंगार करता है। कवि विद्यापति के अनुसार-

सरस वसंत समय भल पाओल
दछिन पवन बहु धीरो।।

इसके आते ही नवलमुग्धा प्रकृति नवीन वेश धारण कर इसका स्वागत करने लगती है। सूखी टहनियों में भी कोंपलें फूट पड़ती हैं। पेड़ पौधे अरुण-कोमल पत्तों से सज जाते हैं। अमराइयाँ सुगन्धित मंजरियों से लद जाती हैं। मधुक महुआ और आम्रमंजरियों की मीठी और मधुर सुगंध से सारा वातावरण सुगन्धमय हो उठता है। कोयल पंचम स्वर में कूकने लगती है। फूल मकरंद कणों से लद जाते हैं। फूलों के

BiharboardQuestionpaper.com

रंगीन संकेतों से रीझकर भौंरे उन्हें अपने मधुर गीत सुनाने लगते हैं। तितलियों फूलों की पंखुड़ियों पर थिरकने लगती हैं।

जब वसंत आता है तब प्रकृति और धरती का अंग-अंग उल्लास और आनन्द से भर उठता है। जड़ चेतन वसंत के मादक स्पर्श से निहाल हो उठते हैं। धरती हो या आकाश, वसंत के आने पर उनकी शोभा निखर उठती है। प्राणी वसंत की शोभा को मौन भाव स अपने भीतर उतार कर मुग्ध होते रहते हैं। इस पृथ्वी पर ऐसा कोई प्राणी नहीं होगा जिसपर वसंत के जादू का प्रभाव न हो। पपीहे के कंठ की मिठास सर्वत्र घुलने लगती है।

वसंत हर वर्ष निश्चित समय पर आता है और सारे प्राणियों में यौवन, सौंदर्य और जीने के प्रति आस्था भर देता है। इसमें न तो शिशिर की ठंढक होती है और न ग्रीष्म की असह्य जलन।

वस्तुतः वसंत माधुर्य और सौंदर्य की ऋतु है। यह आनन्द और उल्लास देने वाली ऋतु है। इसकी मधुरता तथा सुन्दरता में हम अपनी उदासी तथा निराशा को भूल जाते हैं। हममें नई आशा का संचार होता है। यह हमारे भीतर और बाहर नई सुन्दरता से नई चेतना तथा नई प्रेरणा भरती है।

(स) मेरी रेल यात्रा

रेल से यात्रा करने में मुझे बहुत आनन्द आता है। पिछले वर्ष मैंने दिल्ली से पटना की रेल यात्रा की। बड़े भैया का पत्र आया कि मैं गर्मी की छुट्टी पटना में ही बिताऊँ। माँ और पिताजी से मुझे पटना जाने की अनुमति मिल गई। मैंने श्रमजीवी-एक्सप्रेस में एक सीट आरक्षित करवा ली।

गाड़ी आने के तीस मिनट पूर्व ही पिताजी के साथ स्टेशन आ गया। प्लेटफॉर्म पर काफी भीड़ थी। नियत समय पर गाड़ी प्लेटफॉर्म पर लगी। चढ़नेवालों की धक्का-मुक्की देखकर मैं घबड़ा गया। आरक्षित डब्बे में सवार हुआ और अपनी

BiharboardQuestionpaper.com

सीट देखकर बैठ गया। पिताजी ने मेरे सामान एक-एक कर मेरे पास पहुँचा दिये। बीस मिनटों के ठहराव के बाद गाड़ी खुल गई। मैंने पिताजी को प्रणाम किया। उन्होंने मेरी मंगलमय यात्रा के लिए मुझे शुभकामनाएँ दी।

रेलयात्रा में संयम का होना अतिआवश्यक है, क्योंकि किसी स्टेशन पर जब गाड़ी रुकती थी तो चढ़ने उतरने का वही धक्का-मुक्की का खेल शुरू हो जाता था। खोमचेवाले तरह-तरह का सामान लिए अपनी-अपनी आकर्षक आवाजों में चिल्ला-चिल्ला कर प्लटफॉर्म पर चहलकदमी करने लगते थे। मैं बीस घंटों तक रेलगाड़ी के एक डिब्बे में रहा पर कभी ऐसा नहीं लगा कि मैं कैद हूँ।

मैंने अपने डिब्बे में देखा- तरह-तरह की पोशाकों में, तरह-तरह के सामानों के साथ लोग बैठे हुए है। मैंने देखा, यहाँ न तो जातीयता थी और न ही साम्प्रदायिकता। यहाँ हिन्दू भी थे, मुसलमान और इसाई भी पर सब मिलकर एक जाति में बदल गये थे।-यात्री-जाति में। पंडितजी और मौलवीजी आमने-सामने बैठे थे और हँस-हँसकर बातें कर रहे थे। मैंने सोचा- काश! हमारा देश भी इसी गाड़ी की तरह होता।

सरपट भागती रेलगाड़ी से बाहर का दृष्य देखना अद्‌भुत होता है। मैं गाड़ी के भीतर एक अतिसामान्य व्यक्ति था। उतनी देर में मेरा जितना ज्ञानवर्द्धन हुआ, उतना कई महीनों के अध्ययन के बाद भी नहीं होता।

उत्तर- 3

प्रिय मित्र रमेश, नई दिल्ली

10 दिसम्बर, 2016

कल ही तुम्हारा पत्र मिला। हार्दिक प्रसन्नता हुई। पिछले सप्ताह मेरे विद्यालय में साहित्य-परिषद् के तत्वावधान में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमें

BiharboardQuestionpaper.com

अनेक वक्ताओं ने 'सत्संगति' विषय प्र अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए। मैं प्रमुख वक्ता 'डॉ॰ सियारमण त्रिपाठी' के भाषण से बहुत प्रभावित हुआ। उन्होंने 'संत्संगति' पर विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला। मैं चाहता हूँ उनके भाषण के कुछ महत्त्वपूर्ण बिन्दु तुम तक पहुँचाऊँ व्यक्ति जैसी संगति में रहता है, उसे वैसा ही गुण प्राप्त होता है। कहा भी गया है-

'कदली, सीप, भुजंग मुख, स्वाति एक गुण तीन।
जैसी संगति बैठिये तै सोई फल दीन'।

'नीतिशतक' में भर्तृहरि ने कहा है- सत्संगति बुद्धि की जड़ता को हरती है, वाणी में सत्य का संचार करती है, सम्मान की वृद्धि करती है, पापों को दूर करती है...।''

प्रिय मित्र, 'सत्संगति' वह आध्यात्मिक धन है जिसे पाकर आत्मा धन्य हो जाती है। पूज्या चाची जी एवं चाचाजी को मेरा सादर प्रणाम बोल देना। पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में।

पता:- रमेश कुमार

चर्च रोड

राँची (झारखण्ड)

तुम्हारा अभिन्न मित्र

प्रभाकर

उत्तर-3 अथवा

सेवामें,

प्रधानाचार्य महोदय,

सर गणेशदत्त पाटलीपुत्र उच्च विद्यालय, पटना।

द्वारा- वर्ग-शिक्षक।

महाशय,

BiharboardQuestionpaper.com

मैं आपके विद्यालय में दशम् वर्ग का छात्र हूँ। मैं अत्यन्त निर्धन हूँ। मैं अपनी पाठ्य-पुस्तकें खरीदने में पूर्णतः असमर्थ हूँ।

अतः आपसे आग्रह है कि मुझे विद्यालय के निर्धन छात्र-कोश से पाँच सौ रुपये की अनुदान-राशि प्रदान की जाय ताकि मैं अपनी पाठ्य-पुस्तकें खरीद सकूँ। मैं इसके लिए सदा आपका आभारी रहूँगा।

दिनांक 15 जनवरी 2017 विश्वासी

प्रकाश कुमार

वर्ग- दशम् 'अ'

क्रमांक- 5

उत्तर-4

दो वर्णों के परस्पर मिलने से होने वाली विकार (परिवर्तन) को 'संधि' कहते हैं। जैसे- जगत्+ईश=जगदीश। इस उदाहरण में 'त्' एवं 'इ' वर्णों का परस्पर मेल हुआ है। इस मेल से हुए परिवर्तन के रूप में 'दी' का विकास हुआ है- त्+ई=दी।

स्वर-संधि के पाँच भेद हैं-

(i) दीर्घ संधि

(ii) गुण संधि

(iii) वृद्धि संधि

(iv) यण् संधि

(v) अयादि संधि

उत्तर-4 अथवा

भाषा या उपभाषा क्षेत्र के एक बहुत ही सीमित क्षेत्र में वहाँ के निवासियों द्वारा सम्वाद या विचार-विनिमय के लिए जिस स्वाभाविक भाषा का प्रयोग किया जाता है, उसे 'बोली' कहते हैं।

BiharboardQuestionpaper.com

'भाषा' का क्षेत्र 'बोली' के क्षेत्र से विस्तृत होता है। किसी भाषा में अनेक बोलियों के क्षेत्र होते हैं। 'भाषा' व्याकरण के नियमों से नियंत्रित होती है तथा इसका प्रयोग विशाल जनसमुदाय द्वारा साहित्य, शिक्षा, प्रशासन, राजनीति, न्याय एवं संचार माध्यमों में किया जाता है। बोली में प्राय: इसका अभाव होता है। खड़ी बोली 'हिंदी' भाषा के पद पर अधिष्ठित है। भोजपुरी, अंगिका बज्जिका, अवधी, आदि बोलियाँ है।

उत्तर-5 (क) मुख

(ख) निर्धनता

(ग) ओष्ठ

(घ) अनुकूल

(च) द्रव्य

उत्तर-6 (i) यह काम जल्दी करना ह।

(ii) ऊँची दुकान फीका पकवान।

(iii) आपकी वर्तमान हालत ठीक नहीं है।

(iv) मेरे कान में आज बड़ी खुजलाहट है।

(v) उसने गाड़ी खड़ी कर दी/उसने गाड़ी को खड़ा कर दिया।

उत्तर-7

स्तंभ-'अ'	**स्तम्भ 'ब'**
(i)	(ग)
(ii)	(घ)
(iii)	(च)
(iv)	(छ)
(v)	(क)
(vi)	(ख)

BiharboardQuestionpaper.com

उत्तर-8 लेखक (अंबेदकर) ने 'श्रमविभाजन और जाति प्रथा' पाठ में सामाजिक और आर्थिक पहलुओं से जातिप्रथा को हानिकारक प्रथा के रूप में दिखाया है। यह प्रथा सामाजिक एकता एवं स्वाभाविक प्रेरणा रुचि को समाप्त करती है।

उत्तर-9 सेन साहब के परिवार में लड़कियों एवं लड़के के पालन-पोषण में भेद-भाव किया जाता है। लड़कियों को यह शिक्षा दी जाती है कि उन्हें क्या-क्या नहीं करना है। उनकी स्वच्छन्दता प्रतिबन्धित है। इसके विपरीत लड़कों को पूरी स्वतंत्रता है। वह चाहे जो करे उसे कोई रोकने वाला नहीं है। बच्चों के पालन-पोषण में लिंगभेद के चलते सेन साहब की लड़कियाँ कुंठित हो गई हैं और खोखा (लड़का) बिगड़ैल हो गया है।

उत्तर-10 मदन की हरकतों के कारण गिरधारीलाल को प्रतिदिन सेन साहब की झिड़की खानी पड़ती थी। वह अपनी लाचारी, कायरता और भीतर की खीज को अपने बेटे मदन पर उतारता और उसे पीटने के बाद भीतर-ही-भीतर खूब रोता। धनी-वर्ग की अकड़ के प्रति गिरधारीलाल के भीतर दबा हुआ आक्रोश था। उसकी आर्थिक विपन्नता और कायरता उसे आक्रोश व्यक्त करने का मौका नहीं देती थी। मदन ने जब 'खोखा' की पिटाई कर दी तब गिरधारीलाल को ऐसा लगा जैसे मदन ने उसके मन की बात सुन ली हो, उसके भीतर के आक्रोश को मूर्त रूप दे दिया हो। यही करण है कि गिरधारीलाल मदन द्वारा खोखा की पिटाई करने पर उसे दंडित करने के बजाय प्रसन्नतापूर्वक अपनी छाती से लगा लेता है।

उत्तर-11 बहादुर एक नेपाली अबोध बालक था। उसकी माँ बहुत गुस्सैल थी। वह बहादुर को हमेशा मारती-पीटती थी। एक दिन भैंस के कारण माँ ने बहादुर की माँ ने

BiharboardQuestionpaper.com

काफी पिटाई कर दी जिससे उसका मन माँ से फट गया और वह अपने घर से भाग गया।

उत्तर-12 (i) पाँच-छ: वर्ष का बालक मदन जिज्ञासावश सेन साहब की गाड़ी छूता है। ड्राइवर
मदन को मना करता है। ड्राइवर को डर है कि मदन के छूने से गाड़ी गंदो हो जाएगी
और उसे सेन साहब की डाँट सुननी पड़ेगी। मदन उसके तर्क को नहीं मानता। ड्राइवर के मना करने पर भी वह गाड़ी को छूता है। ड्राइवर उसे धकेल देता है तो वह ड्राइवर से ही उलझ जाता है। मदन और ड्राइवर के बीच इस क्रियात्मक विवाद से कहानीकार यह बताना चाहता ह कि आर्थिक रूप से विपन्न भी दूसरे विपन्न का साथ नहीं देकर धनी वर्ग का ही पक्ष लेता है पर जिसे अपनी विपन्नता का अहसास नहीं है, उसे वर्ग-भेद से लेना-देना नहीं होता। वर्गभेद की संकीर्णता से ऊपर उठ कर वह अपनी मौज और ठसक में जीता है। ड्राइवर शोषित वर्ग का स्वाभाविक प्रतिनिधित्व करता है और मदन शोषक वर्ग के प्रति शोषित वर्ग का विरोध दर्ज करता है। कहानीकार बताना चाहता है कि सारे शोषित एक हो जाएँ, तो महलों की तरफ से चलने वाली शोषण की हवा उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकती

(ii) काशू को पीटकर समृद्ध वर्ग का अहंकार तोड़ने वाला 'मदन' इस कहानी का नायक है।

(iii) काशू ने मदन और उसके मित्रों को लट्टू नचाते देखा तो उसकी तबियत मचल गई। वह भी लट्टू नचाना चाहता था। काशू से अपमानित मदन ऐसा नहीं चाहता था। इस पर तैश में आकर काशू ने मदन को एक घूँसा रसीद कर दिया जिससे मदन भी काशू पर टूट पड़ा।

BiharboardQuestionpaper.com

उत्तर-13 संत कवि गुरुनानक कहते हैं कि 'राम' नाम के बिना संसार में जन्म लेना व्यर्थ है। रामनाम के बिना हम विष खाते हैं, विष बोलते हैं और राम नाम के बिना हमारी बुद्धि निष्फल यहाँ-वहाँ भ्रमण करती रहती है। पुस्तक पढ़ने, व्याकरण पर चर्चा करने और संध्याकालीन उपासना करने से हमें मोक्ष नहीं प्राप्त होता है। नानक कहते हैं कि गुरुवाणी के अभाव में हमें मुक्ति नहीं प्राप्त होती और राम नाम के बिना हम विभिन्न जंजालों में उलझककर मर जाते हैं।

उत्तर-14 उपर्युक्त पंक्तियों में संत कवि नानक कहते हैं कि जिसने आशा-आकांक्षा और सांसारिक मोह-माया का त्याग कर दिया है, जिसके जीवन में काम-क्रोध के लिए कोई स्थान नहीं है अर्थात् जो काम और क्रोध रहित है, उसकी अंतरात्मा में ब्रह्म का निवास होता है। जिस पर गुरु की कृपा होती है, वही इस युक्ति को पहचान पाता है। नानक कहते हैं कि मैं गोविन्द में उसी तरह लीन हो गया हूँ जिस तरह पानी में पानी विलीन हो जाता है। पानी-पानी की भिन्नता नष्ट हो जाती है। ठीक वैसे ही मेरे (नानक की) और गोविन्द की भिन्नता समाप्त हो गई है।

उत्तर-15 काव्यशास्त्र में प्रेम का वर्ण श्यामल माना गया है। श्रीकृष्ण श्याम-वर्ण के है। अत: कवि ने उन्हें प्रेम-वर्ण कहा है। नंदनंद (श्रीकृष्ण) प्रेम के प्रतीक हैं क्योंकि बिना प्रेम के रंग में रंगे, प्रेम की गहराई में उतरना असम्भव है। अत: कवि ने उन्हें 'प्रेम-बरन' कहा है।

उत्तर-16 आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी (निबन्धकार) मनुष्य के नाखून की ओर देखकर कभी-कभी इसलिए निराश हो जाते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि ये नाखून उसकी (मनुष्य) भयंकर पशुता वृति के जीवंत प्रतीक हैं। न जाने कब उसकी पशुता भड़क जाय और सर्वत्र विनाश का रौद्र नृत्य होने लगे।

BiharboardQuestionpaper.com

उत्तर–17 (i) प्रस्तुत पंक्तियाँ 'एक वृक्ष की हत्या' शीर्षक कविता से ली गई हैं।

(ii) वह पुराना वृक्ष हमारी अनुभवी, चौकन्ना रहने वाली पुरानी पीढ़ी का प्रतीक है जो हमारी सभ्यता और मानवता की रक्षा के लिए हमेशा अविचल एवं अडिग–भाव से तत्पर रहता है। इसी कारण कवि को बूढ़ा वक्ष चौकीदार लगता था।

(iii) बूढ़े चौकीदार को जैसे अपने वस्त्रों की सफाई की कोई चिंता नहीं होती, उसी तरह बूढ़े वृक्ष (चौकीदार) का तना भी मैला–कुचैला हो गया था, उसे इसकी थोड़ी भी परवाह नहीं थी। उसकी एक डाल टूट कर राइफल सी टँगी हुई थी जैसो किसी बूढ़े चौकीदार के कँधे से कोई राइफल टँगी होती है । बूढ़े वृक्ष के शीर्ष पर फूल–पत्तीदार टहनियों की पगड़ी थी। जैसे किसी बूढ़े चौकीदार के पाँवों के जूते फटे पुराने होते हैं, उसी तरह बूढ़े वृक्ष के पाँवों में पुरानी कूबड़ जड़ों क फटे–पुराने जूते थे।

उत्तर–18 रंगप्पा, मंगम्मा के गाँव में ही रहता था। वह बड़ा शौकीन तबीयत का था। वह कभी–कभार जुआ खेलता था। मंगम्मा की तरह ही उसकी उम्र ढल चुकी थी। वह मंगम्मा से थोड़ा सा कर्ज चाहता था क्योंकि वह कुछ तकलीफ में था। उसकी दृष्टि मंगम्मा के धन पर थी। वह उसके साथ नजदीकी बढ़ा कर उसके धन को पाना चाहता था। अपने बेटे से मंगम्मा के अलग हो जाने के कारण रंगप्पा उसके साथ (मंगम्मा) अपना घर भी बसाना चाहता था।

उत्तर–19 मंगम्मा अपने छोटे से परिवार की स्वामिनी है। वह वात्सल्यमयी है। वह अपने पोते को बहुत प्यार करती है। वह परित्यक्ता है। उसमें जीवन के प्रति एक प्रकार की ऊब भी है और एक प्रकार का आकर्षण भी। मंगम्मा में लोकजीवन के सारे संस्कार वर्तमान हैं। उसमें अपने परिवार के प्रति अतिशय

BiharboardQuestionpaper.com

लगाव है। वह स्वाभिमानी है। अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए ही वह अपने बेटे–बहू स भी अलग हो जाती है।

उत्तर–20 'माँ' शीर्षक कहानी में शुरू से अंत तक माँ के चरित्र को प्रमुख रूप से चित्रित किया गया है। यह कहानी माँ के मनोविज्ञान को पूर्णता से प्रस्तुत करती है। इस कहानी का मुख्य चरित्र माँ है। वह अपने निश्छल और निस्स्वार्थ प्रेम के साथ पूरी कहानी में अपनी उपस्थिति दर्ज कराती है। अतः कहानी का शीर्षक 'माँ' सर्वथा सार्थक है।

BiharboardQuestionpaper.com

BiharboardQuestionpaper.com

मॉडल सेट-07

समय 3 घंटा 15 मिनट **पूर्णांक-100**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देशः-

(क) परीक्षार्थी यथासम्भव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

(ख) सभी प्रश्न अनिवाय हैं।

(ग) उत्तर देते समय शब्द-सीमा का ध्यान रखें।

(घ) दाहिनी ओर अंक निर्दिष्ट किये गये हैं।

(च) प्रश्न-पत्र को ध्यान से पढ़ें। इसके लिए 15 मिनट का अतिरिक्त समय दिया जा रहा है।

प्रश्न 1. (अ) निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दें। 6 x 2 =12

हमारे जीवन में उत्साह का विशेष स्थान है। किसी काम को करने के लिए सदा तैयार रहना तथा उस काम को करने में आनन्द का अनुभव करना उत्साह के मुख्य लक्षण हैं। उत्साह कई प्रकार का होता है, परन्तु सच्चा उत्साह वही होता है जो मनुष्य को कार्य करने के लिए प्रेरणा देता है। मनुष्य किसी भी कारणवश जब किसी के कष्ट को दूर करने का संकल्प करता है तब जिस सुख का वह अनुभव करता है वह सुख विशेष रूप से प्रेरणा देने वाला होता है। इसी उत्साह के लिए कवियों ने कहा है 'साहस से भरी हुई उमंग ही उत्साह है।' जिस भी कार्य को करने के लिए मनुष्य में कष्ट, दु:ख या हानि को सहन करने की ताकत आती है, उन सबसे उत्पन्न आनन्द ही उत्साह कहलाता है। 'उत्साह' आनन्द और साहस का मिला-जुला रूप है। उत्साह एक ऐसा मनोभाव है जो किसी कार्य विशेष में तो मनुष्य को प्रेरित करता ही है, साथ ही इस भाव के होने पर अन्य कार्यों में भी उसकी शक्ति को बढ़ावा मिलता है।

(क) उत्साह का मुख्य लक्षण क्या है?

(ख) सच्चा उत्साह क्या होता है?

BiharboardQuestionpaper.com

(ग) उत्साह के लिए कवियों ने क्या कहा है?

(घ) आनन्द और साहस का मिला-जुला रूप क्या है?

(च) उत्साह कैसा मनोभाव ह?

(छ) एक उपयुक्त शीर्षक दें।

(ब) निम्नांकित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर दें- 4 x 2 =8

शिवप्रसाद 'रुद्र' का जन्म काशी में हुआ था। इनकी शिक्षा काशी के हरिश्चन्द्र कॉलेज, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय तथा क्वींस कॉलेज में हुई। इन्होंने स्कूल तथा विश्वविद्यालय में अध्यापन-कार्य किया। इन्होंने कई पत्रिकाओं का भी सम्पादन किया। इन्हें अनेक भाषाओं का ज्ञान था। ये बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। ये एक सफल उपन्यासकार, नाटककार, गीतकार, व्यंग्यकार, चित्रकार एवं पत्रकार थे। इनकी प्रमुख रचनाएँ बहती गंगा, सुचिताच, ताल-तलैया, गज़लिका, परीक्षा-पचीसी हैं। 'बहती गंगा' में इन्होंने काशी के 200 वर्षो के जीवन-प्रवाह की अनेक झाँकियाँ लिखी हैं। इन्होंने अपनी झाँकियों में यथार्थ और आदर्श, दंत कथा और इतिहास, मानव-जीवन की कमजोरियाँ और उदात्त गुणों की अभिव्यक्ति की है।

(क) शिवप्रसाद का जन्म कहाँ हुआ था?

(ख) इनकी प्रमुख रचनाएँ कौन-कौन हैं?

(ग) बहती गंगा में कहाँ की, कितने वर्षो की झाँकियाँ लिखी हैं?

(घ) इन्होंने अपनी झाँकियों में किसकी अभिव्यक्ति की है?

प्रश्न-2 दिये गये संकेत बिन्दुओं के आधार पर 250 शब्दों में किसी एक विषय पर निबन्ध लिखें। **10**

BiharboardQuestionpaper.com

(क) नारी-शिक्षा

(i) नारी-शिक्षा का महत्त्व

(ii) प्राचीन काल में नारी शिक्षा

(iii) मध्यकाल में नारी शिक्षा

(iv) आधुनिक काल में नारी-शिक्षा

(v) उपसंहार

बिहार बोर्ड के नए और पुराने ऑफिसियल क्वेश्चन पेपर, मॉडल पेपर, आंसर-की, पाठ्यक्रम, नोट्स, मॉक टेस्ट, सेंट-अप और प्रैक्टिकल परीक्षा प्रश्न पत्र आदि के लिए...
BiharboardQuestionpaper.com
अभी विजिट करें ..

(ख) आदर्श विद्यार्थी

(i) भूमिका

(ii) अच्छे विद्यार्थी के गुण

(iii) सहपाठियों के साथ अच्छा व्यवहार

(iv) गुरुजनों के प्रति श्रद्धा एवं आज्ञाकारिता

(v) उपसंहार

(ग) दीपावली

(i) भूमिका

(ii) कब और कैसे मनाया जाता है

(iii) पर्व मनाने के पीछे की कथाएँ एवं मान्यताएँ

(iv) साफ-सफाई एवं पर्यावरण शुद्धि का पर्व

(v) उपसंहार

प्रश्न-3 पटना-भ्रमण की चर्चा करते हुए अपने भाई के पास पत्र लिखें। 5

अथवा

गाँव में सड़क बनवाने हेतु जिलाधिकारी के पास आवेदन-पत्र लिखें।

प्रश्न-4 सर्वनाम के भेदों को उदाहरण सहित लिखें। 5

अथवा

उपसर्ग एवं प्रत्यय की परिभाषा उदाहरण के साथ लिखें।

BiharboardQuestionpaper.com

प्रश्न-5 रिक्त स्थानों की पूर्ति करें। **5 x 1 = 5**

(क) धर्म-अधर्म..............................समास का उदाहरण है।

(ख) प्रहार में.................................उपसर्ग है।

(ग) 'अ' का उच्चारण-स्थान.......................है।

(घ) विद्यालय का संधि-विच्छेद...........................होगा।

(च) बुढ़ापा.................................संज्ञा है।

प्रश्न-6 निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करें: 5 x 1 = 5

(i) उसकी कुछ समझ में न आया।

(ii) माँ भी सोती नींद से जाग पड़ी।

(iii) उसने 'मानस' टीका लिखी है।

(iv) मैं शुद्ध गाय का दूध पीता हूँ।

(v) आगामी वर्ष तुम आये थे।

प्रश्न-7 स्तम्भ 'अ' और स्तम्भ 'ब' का सही मिलान आमने-सामने करें: 6 x 1 = 6

	स्तम्भ- 'अ'		**स्तम्भ 'ब'**
(1)	अमरकान्त	क.	हमारी नींद
(2)	गुणाकर मुले	ख.	भारत माता
(3)	रामधारी सिंह 'दिनकर'	ग.	नागरी लिपि
(4)	प्रेमधन	घ.	जनतंत्र का जन्म
(5)	वीरेन डंगवाल	च.	बहादुर
(6)	सुमित्रानन्दन पंत	छ.	स्वदेशी

BiharboardQuestionpaper.com

निर्देश: प्रश्न संख्या 8 से 20 तक प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 30 शब्दों में दें।

प्रश्न-8 डुमराँव की महत्ता किस कारण से है? 3

प्रश्न-9 वाणी कब विष के समान हो जाती है? 3

प्रश्न-10 मैक्समूलर की दृष्टि में सच्चे भारत का दर्शन कहाँ हो सकता है और क्यों? 3

प्रश्न-11 मछली छूते हुए संतु क्यों हिचक रहा था? 3

प्रश्न-12 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर इसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दें-

चोर-गुंडा-डाकू होने वाला मदन भी कब माननेवाला था! वह झट काशू पर टूट पड़ा। दूसरे लड़के जरा हटकर इस द्वन्द्व युद्ध का मजा लेने लगे। लेकिन यह लड़ाई हड्डी और मांस की, बंगले के पिल्ले और गली के कुत्ते की लड़ाई थी। अहाते में यही लड़ाई हुई रहती, तो काशू शेर हो जाता। वहाँ से एक मिनट बाद ही रोता हुआ जान लेकर भाग निकला। महल और झोपड़ीवालों की लड़ाई में अक्सर महलवाले ही जीतते हैं, पर उसी हालत में, जब दूसरे झोपड़ी वाले उनकी मदद अपने ही खिलाफ करते हैं।

क- यह गद्यांश किस पाठ से उद्धृत है? 1

ख- इस पाठ के लेखक कौन हैं? 1

ग- इस गद्यांश का भाव अपने शब्दों में लिखें। 3

BiharboardQuestionpaper.com

प्रश्न-13 'एक वृक्ष की हत्या' कविता की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालें। 3

प्रश्न-14 'स्वर्ण शस्य पर पद-तल लुंठित, धरती सा सहिष्णु मन कुंठित' की व्याख्या करें। 3

प्रश्न-15 'देवता मिलेंगे खेतों में खलिहानों में' के माध्यम से कवि किस देवता की बात करते हैं और क्यों? 3

प्रश्न-16 कवि किस तरह के बंगाल में एक दिन लौटकर आने की बात करता है? 3

प्रश्न-17 निम्नांकित पद्यांश के आधार पर नीच लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

''कि घर को बचाना है लुटेरों से
शहर को बचाना है नादिरों से
देश को बचाना है देश के दुश्मनों से
बचाना है
नदियों को नाला हो जाने से
हवा को धुआँ हो जाने से
खाने को जहर हो जाने से
बचाना है- जंगल का मरुस्थल हो जाने से
बचाना है- मनुष्य को जंगल हो जाने से''

क- प्रस्तुत पंक्तियाँ किस पाठ से उद्धृत हैं? 1

ख- इस पाठ के रचनाकार कौन हैं? 1

ग- इस पद्यांश का भाव अपने शब्दों में लिखें। 3

प्रश्न-18 मंगु के प्रति माँ और परिवार के अन्य सदस्यों के व्यवहार में जो फर्क है उसे अपने शब्दों में लिखें। 3

प्रश्न-19 पाप्पति कौन थी और वह शहर क्यों लाई गई थी? 3

प्रश्न-20 मंगम्मा का चरित्र-चित्रण कीजिए। 4

BiharboardQuestionpaper.com

उत्तर मॉडल सेट-07

उत्तर 1. (अ)

क- किसी काम को करने के लिए सदा तैयार रहना तथा उस काम को करने में आनन्द का अनुभव करना उत्साह के मुख्य लक्षण हैं।

ख- सच्चा उत्साह वही होता है जो मनुष्य को करने के लिए प्रेरणा देता है।

ग- साहस से भरी हुई उमंग ही उत्साह है।

घ- उत्साह।

च- उत्साह एक ऐसा मनोभाव है जो किसी कार्य विशेष में तो मनुष्य को प्रेरित करता ही है, साथ ही इस भाव के होने पर अन्य कार्यों में भी उसकी शक्ति को बढ़ावा मिलता है।

छ- 'उत्साह'।

(ब) क- काशी में।

ख- बहती गंगा, सुचितास, ताल-तलैया, गज़लिका, परीक्षा-पचीसी इनकी प्रमुख रचनाएँ है।

ग- काशी के 200 वर्षो के जीवन-प्रवाह की अनेक झाँकियाँ लिखीं हैं।

घ- इन्होंने अपनी झाँकियों में यथार्थ और आदर्श, दंत कथा और इतिहास, मानव-जीवन की कमजोरियाँ और उदात्त गुणों की अभिव्यक्ति की है।

उत्तर-2 (क)- नारी-शिक्षा

(i) किसी भी देश की सभ्यता, संस्कृति एवं उन्नति का मूल्यांकन वहाँ के नारी-वर्ग की स्थिति को देखकर आसानी से लगाया जा सकता है। जो राष्ट्र स्त्री को केवल घर की चहारदीवारी तक ही सीमित रखना चाहते हैं, वे

BiharboardQuestionpaper.com

दुर्भाग्य से सभ्यता-संस्कृति या शिष्टता की दौड़ में बहुत पीछे हैं। अतः समाज में स्त्री-शिक्षा का योगदान महत्त्वपूर्ण होता है।

(ii) प्राचीन युग में स्त्रियाँ पुरुषों के साथ प्रत्येक सामाजिक एवं धार्मिक कार्य में समान रूप से भाग लेने की अधिकारिणी थीं। प्राचीन युग में नारी का बहुत सम्मान था।

(iii) मध्यकाल में नारी को गुलाम और भोग्या बनाकर पतन की दिशा की ओर मोड़ दिया गया। सहधर्मिणी के स्थान पर वह केवल दासी एवं वासना-पूर्ति का साधन मात्र रह गई। इस समय में भी गुलबदन बेगम एवं रौशन आरा जैसी स्त्रियाँ शिक्षित थीं।

(iv) आधुनिक काल में नारी ने हर क्षेत्र में विकास किया है। भारतीय संविधान में नर-नारी को समान अधिकार दिये गये हैं। शिक्षित महिला वर्ग ने स्वयं परदे का त्याग किया है। आज स्त्रियाँ पुरुषों से कंधे-से-कंधा मिलाकर समाज के निर्माण में सहयोग दे रही हैं।

(v) अतः स्त्रियों के प्रति दुर्भावनाओं को त्यागकर उनको शिक्षित करने में प्रत्येक व्यक्ति को सहयोग करना चाहिए। स्त्री-शिक्षा से ही समाज का सर्वांगीण विकास होगा ऐसा चिन्तकों का कहना है, जो यथार्थ है।

ख- आदर्श विद्यार्थी

(i) विद्यार्थी से तात्पर्य विद्या को प्राप्त करने वाला, विद्यार्जन करने वाला से होता है। आदर्श विद्यार्थी वही है जो सीखने एवं जानने की इच्छा से ओतप्रोत हो एवं ज्ञान प्राप्त करने हेतु सदा उत्कंठित हो। विद्यार्थी के जीवन में सर्वाधिक महत्त्व विद्या और ज्ञान का होता है।

(ii) आदर्श विद्यार्थी का पहला गुण होता है- 'जिज्ञासा'। वह विषयों के सन्दर्भ में नित नई-नई जानकारियाँ प्राप्त करना चाहता है। अभिनव ज्ञानों की प्राप्ति

BiharboardQuestionpaper.com

हेतु अध्यापकों एवं पुस्तकों पर आश्रित नहीं रहता अपितु जहाँ कहीं भी जिस किसी से भी ज्ञान प्राप्त होता है वह ज्ञानार्जन करता है। सांसारिक भोग-विलास उसे आकर्षित नहीं करते हैं। वह उसे तुच्छ जानकर त्याग करता है। ऐसा विद्यार्थी अपने परिश्रम, तपस्या एवं लगन की आग में तपकर कुन्दन बनता है। इनकी दिनचर्या नियमित होती है। ये अध्ययन के साथ-साथ व्यायाम, क्रीड़ा, शारीरिक स्वास्थ्य पर भी उतना ही ध्यान देते हैं। ये 'सादा जीवन उच्च विचार' वाले होते हैं। न केवल पाठ्य-सामग्री अपितु सहगामी क्रियाओं में भी बढ़-चढ़कर ये हिस्सा लेते हैं।

(iii) आदर्श छात्र अपने सहपाठियों के साथ भी अच्छा व्यवहार करता है। वह अपने सहपाठियों से बैर की भावना नहीं रखता। कम बुद्धिवाले साथियों को विषय-वस्तु एवं शास्त्र में पारंगत कराने के प्रयत्न करता है। मेधावियों से ज्ञानार्जन भी करता है। ऐसे छात्रों का उद्देश्य एक मात्र परीक्षा में सर्वाधिक अंक लाना नहीं होता अपितु वास्तविक एवं यथार्थ ज्ञानार्जन ही उसका उद्देश्य होता है।

(iv) ऐसे छात्र गुरुजनों के प्रति असीम श्रद्धा रखते हैं एवं गुरु की आज्ञा को शिरोधार्य करते हैं। वे 'गुरु' एवं 'गोविन्द' में गुरु को ही ज्यादा महत्त्व देते हैं। ऐसे छात्रों का विश्वास होता है कि वास्तविक गुरु के प्रति श्रद्धा से ज्ञान की प्राप्ति होती है।

(v) इस प्रकार आदर्श विद्यार्थी अपनी जिज्ञासा, दृढ़ इच्छाशक्ति अनुशासित एवं नियमित दिनचर्या, सादा जीवन, गुरु के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास तथा सहपाठियों के संग कुशल व्यवहार से अपने जीवन में वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है जो उसकी इच्छा होती है। आदर्श छात्र के प्रति समाज, संस्था एवं अध्यापक का व्यवहार सहयोगात्मक रहता है। सभी छात्रों को आदर्श-छात्र बनने की ओर अग्रसर होना चाहिए।

BiharboardQuestionpaper.com

ग- दीपावली

(i) हमारा देश बहुधर्मावलम्बियों का देश है जहाँ प्रतिवर्ष, प्रतिमास अनेक त्योहार आनंद एवं हर्षोल्लास के साथ मनाये जाते हैं। इन त्योहारों में दीपावली एक अलग स्थान रखती है। दीपों के द्वारा इस उत्सव को मनाते हैं अत: इसे 'दीपोत्सव' भी कहा जाता है।

(ii) यह त्योहार कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की अमावस्या की तिथि को मनाया जाता है। इस दिन लोग अपने घर एवं बाहर अमावस्या की घनघोर अँधेरी रात में दीपों की आवलियों (कतारों) को जलाते हैं।

(iii) इसके पीछे कथा है कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम इसी दिन रावण को मार कर अयोध्या आए थे। राम के आगमन की खुशी में अयोध्या के लोग घी के दीप जलाकर दीवाली मनाये थे। इन्हीं मान्यताओं से लोग आज भी दीपावली मनाते हैं। रात में लक्ष्मी-गणेश की भी पूजा-अर्चना करते हैं। मिठाइयाँ खाते-खिलाते हैं तथा रातभर जगते हैं। घर की बुजुर्ग महिलाएँ सूप भी पीटती हैं। इसके पीछे मान्यता है कि इससे दरिद्रता भाग जाती है।

(iv) इस पर्व में साफ-सफाई पर लोग पूरा ध्यान देते हैं। 15 दिन एक महीना पहले से ही लोग घर को रंगना-पोतना प्रारम्भ कर देते हैं। घर, अँगना, गली, महल्ला एवं गाँव सभी साफ एवं सुन्दर दिखने लगते हैं। बरसात के पश्चात् जो घास-फूस एवं गन्दगी चारों ओर फैली रहती है सबको इस त्योहार से पूर्व लोग साफ कर देते हैं। मच्छर एवं अन्य कीटों की संख्या कम हो जाती है। पर्यावरण शुद्ध हो जाता है।

(v) दीपावली के दिन पटाखे और आतिशबजियों को जलाने से पर्यावरण अशुद्ध होता है, इसलिए यह नहीं करना चाहिए। पटाखों का उपयोग नहीं करने के

BiharboardQuestionpaper.com

बाद दीपावली धार्मिक दृष्टि से एवं पर्यावरण की दृष्टि से मानव-समाज के लिए एक उपयोगी त्योहार है। इसे हमें निश्चय ही मनाना चाहिए।

उत्तर-3- आदरणीय भैया
सादर प्रमाण।

दिनांक-08.12.2016
रोहतासगढ़

मैं कुशल हूँ। आशा करता हूँ कि आप भी ईश्वर की कृपा से कुशल होंगे। शैक्षिक परिभ्रमण के लिए मेरे विद्यालय से बस पटना गई थी। मैं भी छात्रों के समूह में था। मैं पटना में गोलघर, संजय गाँधी जैविक उद्यान, विधानसभा, सचिवालय, महावीर मंदिर, रेलवे स्टेशन, गाँधी मैदान गया था। यह प्ररिभ्रमण बहुत ही अच्छा रहा। मैं पहली बार पटना आया था। जाने-आने के क्रम में महात्मा गाँधी सेतु को भी देखा। मैं मन लगा कर पढ़ रहा हूँ। घर के सभी लोग ठीक हैं। भाभी को प्रणाम एवं बच्चों को आशीर्वाद।

आपका छोटा भाई
निरंजन कुमार
वर्ग- X (खण्ड-क)

उत्तर-3- अथवा-

सेवामें,
श्रीमान् जिलाधिकारी महोदय,
पटना।

विषय- गाँव में सड़क बनवाने के सम्बन्ध में।

महाशय,

निवेदन है कि मेरा गाँव, शहर से 50 कि.मी. की दूरी पर अवस्थित है। मेरे गाँव के मध्य से एक सडक निकलती है जो 4 कि.मी. की दूरी पर शहर

BiharboardQuestionpaper.com

की ओर जानेवाली मुख्य मार्ग में मिल जाती है। आज तक मेरे गाँव की सड़क का निर्माण नहीं हो पाया है।

अत: आपसे अनुरोध है कि मेरे गाँव की सड़क बनवाने की कृपा करें। इसके लिए मैं एवं मेरे गाँव के लोग सदा आपके आभारी रहेंगे।

दिनांक-18.12.2016

आपका विश्वासभाजन

सुनील कुमार

कक्षा- X (अ)

ग्राम- सहियारा जिला-पटना

उत्तर-4- सर्वनाम के निम्नलिखित भेद हैं-

(i) पुरुषवाचक- मैं, तू, वह, ।

(ii) निजवाचक- आप, स्वयं।

(iii) निश्चयवाचक- यह, वह, ।

(iv) अनिश्चयवाचक- कोई, कुछ।

(v) प्रश्नवाचक- कौन? क्या?

(vi) सम्बन्धवाचक- जो, सो।

उत्तर-4 अथवा

उपसर्ग- उपसर्ग वह शब्दांश है जो किसी शब्द के पहले आकर उसके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता लाता है, जैसे- प्र- प्रहार, बे-बेईमान ।

प्रत्यय- जो शब्दांश शब्दों के बाद लगाये जाते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं, जैसे- भला+ आई = भलाई, मनुष्य+ता = मनुष्यता।

उत्तर - 5 (क) द्वन्द्व

(ख) प्र

(ग) कंठ

(घ) विद्या+आलय

BiharboardQuestionpaper.com

(च) भाववाचक संज्ञा

उत्तर-6(i) उसकी समझ में कुछ भी न आया।

(ii) माँ भी नींद से जाग पड़ीं।

(iii) उसने मानस की टीका लिखी।

(iv) मैं गाय का शुद्ध दूध पीता हूँ।

(v) पिछले वर्ष तुम आये थे।

बिहार बोर्ड के नए और पुराने ऑफिसियल क्वेश्चन पेपर, मॉडल पेपर, आंसर-की, पाठ्यक्रम, नोट्स, मॉक टेस्ट, सेंट-अप और प्रेक्टिकल परीक्षा प्रश्न पत्र आदि के लिए...

BiharboardQuestionpaper.com

अभी विजिट करें ..

BiharboardQuestionpaper.com

उत्तर-7 1- च

2- ग

3 - घ

4 - छ

5- क

6 - ख

उत्तर-8 डुमराँव की महत्ता विश्वविख्यात शहनाई वादक विस्मिल्ला खाँ के कारण है क्योंकि वहीं के एक गाँव में उनका जन्म हुआ था। डुमराँव को आजकल बिस्मिला खाँ की जन्मभूमि के रूप में जानते हैं।

उत्तर-9 जिस वाणी में राम नाम का लेश मात्र न हो, वह वाणी विष के समान हो जाती है।

उत्तर-10 मैक्समूलर की दृष्टि में सच्चे भारत का दर्शन शहरों में नहीं बल्कि गाँव में ही हो सकता है। भारत की संस्कृति गाँव और कृषि से जुड़ी है। इसलिए भारत की असली पहचान गाँवों में घूमने तथा वहाँ की परम्परा से अवगत होने से

BiharboardQuestionpaper.com

ही पता चल सकता है, वहाँ के रहन-सहन, रीति-रिवाज को देखना चाहें, तो वह गाँवों में जाकर ही प्राप्त हो सकता है।

उत्तर-11 संतु अबोध बालक था। उसे इस बात का पता नहीं था कि मछली काटती भी है। इसलिए वह मछली छूते हुए हिचक रहा था।

उत्तर-12 क- विष के दाँत

ख- नलिन विलोचन शर्मा

ग- यह सामाजिक संरचना का यथार्थ है कि महल और झोपड़ीवालों की लड़ाई में महल वाले ही प्राय: विजयी होते हैं पर यह भी तथ्य सही है कि धनी वर्ग की विजय उसी हालत में होती है जब गरीब तबके के लोग अपने ही वर्ग के विरुद्ध धनी वर्ग की मदद करते हैं। निर्धनों में एकता होने पर धनी वर्ग के विजयी होने की सम्भावना पूरी तरह समाप्त हो जाती है।

उत्तर-13 'एक वृक्ष की हत्या' शीर्षक कविता अत्यंत प्रासंगिक है। इसमें काटे गए वृक्ष के प्रति कवि की संवेदना पाठक को एक वैचारिक धरातल प्रदान करती है। कवि इसी बहाने पर्यावरण के प्रति मनुष्य के उपेक्षाभाव और मानवीय सभ्यता के विनाश का उल्लेख करता है और इन दोनों की रक्षा के लिए अपनी तत्परता व्यक्त करता है।

उत्तर-14 प्रस्तुत पंक्ति सुमित्रानन्दन पन्त की कविता 'भारत माता' से उद्धृत है। कवि कहते हैं कि भारत माता अत्यंत समृद्ध हैं। वह अकूत धन-सम्पदा की स्वामिनी हैं पर आज वह इस परतंत्रता की स्थिति में दूसरे के पैरों तले रौंदी

BiharboardQuestionpaper.com

जा रही हैं। इससे उनके स्वाभिमान को ठेस पहुँचती है और इसके चलते उनका मन कुंठित हो गया है। उनके भीतर धरती के समान सहनशीलता है। वह सारी मुसीबतों को सहज भाव से सह लेती हैं।

उत्तर-15 इसके माध्यम से कवि, मजदूर और किसान रूपी आज के देवता की बात करते हैं। ये आज के देवता, मंदिरों, राज-प्रासादों, तहखानों में नहीं मिलेंगे, ये तो सड़कों पर गिट्टी तोड़ते और खेतों, खलिहानों में काम करते मिलेंगे।

उत्तर-16 कवि अपनी कविता में उस बंगाल में लौटकर आने की बात करता है जहाँ अनेक नदियाँ कल-कल करती हुई बहती रहती हैं, जिसके किनारे धान की लहलहाती फसलें है, छोटे-छोटे पक्षी भ्रमण कर रहे हैं तथा सर्वत्र प्राकृतिक वातावरण हर किसी को आकर्षित करता रहता है।

उत्तर-17 **क**- 'एक वृक्ष की हत्या' शीर्षक पाठ से उद्धृत है।

ख- इस पाठ के रचनाकार कुँवर नारायण हैं।

ग- इस पद्यांश के माध्यम से कवि पर्यावरण, मनुष्य और सभ्यता के विनाश की अंतर्व्यथा को अभिव्यक्त करते हैं। इन दोनों की रक्षा के लिए अपनी तत्परता व्यक्त करते हैं। कवि की दृष्टि में भौतिकवादी संस्कृति के पोषक तथा उपभोगी प्रवृत्ति को अतिशय महत्त्व देनेवाले लोग अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए नदियों के शुद्ध जल को कचरे से भर रहे हैं, हवा को धुआँ से दूषित कर रहे हैं और मानव के खाद्य पदार्थों को जहरीला बना रहे हैं। औद्योगिक विकास के चलते जंगल धड़ाधड़ कट रहे हैं। मरुस्थल का विस्तार होता जा रहा है। कवि की आशंका है कि सृष्टि और मानवता को नष्ट करने

BiharboardQuestionpaper.com

की एक बहुत बड़ी साजिश की जा रही है। कवि पर्यावरण और मानवता की रक्षा करने को कटिबद्ध हैं।

उत्तर–18 मंगु के प्रति माँ और परिवार के अन्य सदस्यों के व्यवहार में बहुत फर्क है। माँ की चार सन्तानें हैं– दो पुत्र और दो पुत्रियाँ। जन्मना पागल, गूँगी मंगु के उपर माँ का विशेष स्नेह वर्षण होता है। मंगु के प्रति माँ के खिंचाव में मातृत्व की ही भावना है परन्तु परिवार के अन्य सदस्यों की ऐसी भावना नहीं रहती है। वे चौदह वर्षीय पागल और गूँगी मंगु से माँ के इस प्रकार चिपकने को माँ का पागलपन ही मानते हैं। वे तो यहाँ तक सोचते हैं कि मंगु मर जाए ता अच्छा क्योंकि इससे मंगु को भी कष्टों से छुटकारा मिल जाएगा और कुटुम्ब को भी मंगु से छुटकारा मिल जाएगा।

उत्तर–19 पाप्पाति मूनांडिप्पट्टि गाँव की वल्लि अम्माल की 12 वर्षीय पुत्री थी। वल्लि अम्माल तेज बुखार के चलते उसे अपने गाँव के प्राइमरी हेल्थ सेंटर ले गई। वहाँ के डॉक्टर ने पाप्पति को शहर के बड़े अस्पताल में दिखाने की सलाह दी। वल्ली अम्माल अपनी बेटी को शहर (मदुरै) के बड़े अस्पताल में भर्ती कराने के लिए ले गई थी।

उत्तर–20 'मंगम्मा' 'दही वाली मंगम्मा' कहानी की नायिका है। वह आत्मनिर्भर है। दही बेचकर वह अपना, बहू–बेटा एवं परिवार का भरण–पोषण करती है, मदद करती है। वह कुशल विक्रेता है। मीठी आवाज में बोलती है एवं लोगों से हाल–चाल भी पूछती है। स्नेहमयी एवं स्वाभिमानी है। वह अपने पोते के साथ दूसरे बच्चों को भी प्यार करती है एवं दही भी देती है। बहू से कहा–सुनी होने पर अलग किये जाने पर बहू के सामने झुकती नहीं है। क्षमा नहीं माँगती

BiharboardQuestionpaper.com

है। मंगम्मा अंधविश्वासी भी है। यह उच्च चरित्र की महिला है। रंगप्पा के प्रेमजाल में नहीं फँसती है। यह मान–सम्मान की भूखी है। जब इसके बहू एवं बेटा क्षमा माँगते हैं एवं सम्मानपूर्वक अपने साथ रहने की प्रार्थना करते हैं तो वह अस्वीकार नहीं करती है।

इस प्रकार मंगम्मा, आत्मनिर्भर, स्वाभिमानी, मृदुभाषी, स्नेहमयी अंधविश्वासी एवं उच्च चरित्र की महिला है जो मान–सम्मान एवं स्नेह की भूखी है।

BiharboardQuestionpaper.com

BiharboardQuestionpaper.com

मॉडल सेट-08

समय 3 घंटा 15 मिनट **पूर्णांक-100**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश:-

(क) परीक्षार्थी यथासम्भव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

(ख) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(ग) उत्तर देते समय शब्द-सीमा का ध्यान रखें।

(घ) दाहिनी ओर अंक निर्दिष्ट किये गये हैं।

(च) प्रश्न-पत्र को ध्यान से पढ़ें। इसके लिए 15 मिनट का अतिरिक्त समय दिया जा रहा है।

प्रश्न 1. (अ) निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दें। 6 x 2 =12

पुरुषार्थी एवं श्रमशील व्यक्ति ही संसार में अपने अस्तित्व की रक्षा करने में सफल हो सकता है। 'वीरभोग्या वसुंधरा' का ध्येय मंत्र ही मानव-मात्र को उसके निर्धारित लक्ष्य तक पहुँचाने में सशक्त संबल है। अपने जीवन की संघर्षमयी-यात्रा में प्रत्येक व्यक्ति को अनेकानेक विघ्न-बाधाओं व विपत्तियों से दो-चार होते हुए कर्म-पथ पर निरंतर अग्रसर होना होता है। कर्मरत मनुष्य देर-सबेर अपने अभीष्ट की प्राप्ति कर ही लेता है जबकि कर्मभीरू या कामचोर व्यक्ति भाग्य को कोसता हुआ सदैव दुखी या कुंठित रहता है। अपना बहुमूल्य समय और कई सुअवसर खो कर भाग्यवादी व्यक्ति कभी भी अपनी मनोरथ सिद्धि नहीं कर पाता जबकि अनवरत संघर्ष एवं कर्म के मार्ग में संलग्न कर्मवीर को आत्म-संतोष तो होता ही है, वह पूरे समाज के लिए भी एक आदर्श प्रतिमूर्ति बना जाता है। वास्तव में अपने सपनों को साकार करने के लिए व्यक्ति को पुरुषार्थ का मार्ग आवश्यक रूप से चुनना पड़ता है। अपने पौरुष के द्वारा परिश्रमी व्यक्ति अपने भाग्य की रेखाओं को भी अपने अनकूल बना लेता है। 'भाग्यं फलति सर्वत्रं न क्रिया न च पौरुषम् उक्ति से कर्महीन व्यक्ति अपना बचाव नहीं कर सकता क्योंकि कर्म की

BiharboardQuestionpaper.com

प्रेरणा देने वाली गीता योग, ज्ञान और कर्म में तल्लीन रहने की सीख देती है। यह सार्वभौम सत्य है कि पुरुषार्थ एवं कर्मपरायणता के द्वारा ही जीवन में चतुर्थ वर्ग अर्थ, धर्म, काम, मोक्षादि फलों की प्राप्ति सम्भव है। इसलिए व्यक्ति को जीवन में प्रमाद और आलस्य त्याग कर अनवरत कर्म–पथ पर संलग्न होना चाहिए।

(क) अपने अस्तित्व की रक्षा करने में कैसा व्यक्ति सफल हो सकता है?

(ख) इस पृथ्वी को कैसा व्यक्ति भोग सकता है?

(ग) भाग्यवादी लोगों की आकांक्षाएँ पूर्ण क्यों नहीं हो पातीं?

(घ) लक्ष्य–प्राप्ति के बाद कर्मवीर को समाज से क्या प्राप्त होता है?

(च) कर्म का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है?

(छ) चतुर्थ वर्ग का विग्रह कर उनका नाम लिखें।

(ब) निम्नलिखित अपठित गद्यांश का ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दें। **4 x 2 =8**

आज आतंकवाद ने समूचे विश्व को हिलाकर रख दिया है। विश्वशक्ति का दावा करने वाला अमेरिका भी इससे अछूता नहीं है। भारतवर्ष के अधिसंख्य राज्य भी इससे जूझ रहे है। हमारे पड़ोसी देश पाकिस्तान के सहयोग एवं प्रोत्साहन से भारत में हमेशा हिंसा का तांडव नृत्य चलता रहता है। हम मूक दर्शक बने सीमापार से प्रायोजित इस आतंकवाद का मुँहतोड़ जबाव भी नहीं दे पाते। प्राकृतिक आपदाओं में हुए जानमाल के नुकसान को तो सरकार–प्रशासन यह कहकर अपने कर्तव्य की इतिश्री मान लेते हैं कि इस पर मानव का कोई जोर नहीं किंतु मानव के द्वारा मानव की हत्या के ऐसे सुनियोजित षडयंत्रों का क्या कोई प्रतिकार अथवा समाधान हमारे कर्णधारों के पास नहीं है?

प्रश्न यह उठता है कि हमारी सरकार और नीतिनियंता पुरोधाओं की ऐसी क्या विवशता ह कि वे भारतवर्ष में मकड़जाल की तरह फैले इस 'आतंकवाद' रूपी

BiharboardQuestionpaper.com

दैत्य का संहार नहीं कर सकते। यदि हमने इसी तरह चुप्पी साधे-रखी तो वह दिन दूर नहीं जब शत्रु हमारे धैर्य को कायरता मान कर कभी हमारे घर के अंदर भी घुसने से परहेज नहीं करेंगे। हम कह सकते हैं कि राजनेताओं को दलगत संकीर्णता एवं स्वार्थभाव से ऊपर उठकर एकजुट होकर कुछ ठोस पहल हेतु प्रयत्न करना चाहिए।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें।

(क) आतंकवाद विश्व के लिए चुनौती है कैसे?

(ख) लेखक, सरकार और नीतिनियंताओं से क्या अपेक्षा करता है?

(ग) राष्ट्रहित में राजनेताओं को क्या करना चाहिए?

(घ) सुनियोजित और प्रायोजित पदों में प्रयुक्त उपसर्ग बताएँ।

प्रश्न-2. दिये गये संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 250 शब्दों में निबंध लिखें। **10**

(क) बढ़ती महँगाई।

(i) महँगाई की मार

(ii) निरंतर बढ़ती महँगाई

(iii) सरकार के दावे

(iv) आमलोगों पर प्रभाव

(v) उपसंहार

(ख) भारतीय एकता

(i) भूमिका

(ii) देश का भौगोलिक स्वरूप

(iii) संविधान में स्थिति

(iv) जातिवाद का प्रभाव

(v) उपसंहार

BiharboardQuestionpaper.com

(ग) कबीरदास

(i) भूमिका

(ii) जन्म एवं पालन–पोषण

(iii) शिक्षा एवं ज्ञान

(iv) अंधविश्वास एवं आडंबर का विरोध

(v) उपसंहार

प्रश्न–3. परीक्षा की तैयारी की जानकारी के विषय में अपने मित्र के पास पत्र लिखें। **5**

अथवा

विद्यालय में सफाई, पेयजल अथवा शौचालय की व्यवस्था के सम्बन्ध में प्रधानाध्यापक के पास एक आवेदन–पत्र लिखें।

प्रश्न–4. संधि और समास में अंतर बताइयें अथवा विशेषण किसे कहते हैं? उसके भेदों को लिखें। **5**

प्रश्न–5. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें। **5 x 1 =5**

(i) पो+अन.......................।

(ii) आँख लाल–पीला करना (मुहावरा का अर्थ लिखें)...................।

(iii) 'ख' का उच्चारण स्थान................ है।

(iv) नेता का (स्त्रिलिंग).........................होता है।

(v) धर्म का (विशेषण)..........................होता है।

प्रश्न–6. निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करें:- **5 x 1 =5**

(i) तमाम देश भर में खुशियाली छा गई।

BiharboardQuestionpaper.com

(ii) धन ही झगड़ा का कारण बना ।

(iii) मैंने एक नाग को मारा।

(iv) लड़की कहिस मैं घर जाऊँगी।

(v) तलवार बहादुर लोगों का अस्त्र है।

प्रश्न 7. स्तम्भ 'अ' और 'ब' का सही मिलान सामने-सामने लिखकर करें। 6 x 1=6

	स्तंभ-'अ'		**स्तम्भ 'ब'**
(i)	अमरकांत	(क)	भारतमाता
(ii)	रसखान	(ख)	जनतंत्र का जन्म
(iii)	साँवरदइया	(ग)	बहादुर
(iv)	पं.बिरजू महाराज	(घ)	धरती कबतक घूमेगी
(v)	सुमित्रानन्दन पंत	(च)	गित गित मैं निरखत हूँ
(vi)	रामधारी सिंह दिनकर	(छ)	प्रेम अयनि श्री राधिका

निर्देशः- प्रश्न संख्या 8 से 20 तक के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 30 शब्दों में दें।

प्रश्न 8. मैक्समूलर की दृष्टि में सच्चे भारत का दर्शन कहाँ हो सकता है और क्यों? 3

प्रश्न 9. मनुष्य बार-बार नाखून को क्यों काटता है? 3

प्रश्न 10. गाँधीजी बढ़िया शिक्षा किसे कहते है? 3

प्रश्न 11. मछली को छूते हुए संत क्यों हिचक रहा था? 3

प्रश्न 12. निम्नलिखित उद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दें-

यदि आप भारत के इतिहास के किसी एक अध्याय का भी सम्यक अध्ययन, व्याख्या विवेचन कर लें तो आप पायेंगे कि हमारे स्कूलों और कॉलेजों में पढ़ाए जाने वाले

BiharboardQuestionpaper.com

इतिहास के सब अध्याय मिलकर एक क्षण के लिए भी उसकी बराबरी नहीं कर सकते

(i) यह गद्यांश किस पाठ से उद्धृत है? 1

(ii) इसके लेखक कौन हैं? 1

(iii) इस गद्यांश में लेखक का कौन-सा भाव स्पष्ट होता है? 3

प्रश्न 13.'हमारी नींद' शीर्षक कविता की सार्थकता पर विचार करें। 3

प्रश्न 14. दिनकर ने जनता के स्वप्न का चित्र किस तरह खींचा है? 3

प्रश्न 15. कवि रसखान ने माली-मालिन किसे कहा है और क्यों कहा है? 3

प्रश्न 16. वृक्ष और कवि में क्या संवाद होता है? 3

प्रश्न 17. निम्नलिखित पद्य को पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दें।

"तीस कोटि संतान नग्न तन
अर्ध क्षुधित, शोषित, निरस्त्रजन
मूढ़, असभ्य, अशिक्षित, निर्धन
नत मस्तक तरूतल निवासिनी।

(i) यह पद्यांश किस पाठ से उद्धृत हैं? 1

(ii) इस पाठ के रचनाकार कौन है? 1

(iii) पद्यांश का भाव स्पष्ट करें। 3

प्रश्न 18. 'ढहते विश्वास' कहानी की लक्ष्मी का चरित्र-चित्रण करें। 3

प्रश्न 19. दही वाली मंगम्मा कहानी में बहू ने सास को मनाने के लिए कौन-सा तरीका अपनाया? 3

प्रश्न 20. कुसुम के पागलपन में सुधार देख 'मंगू' के प्रति माँ, परिवार और समाज की प्रतिक्रिया को अपने शब्दों में लिखें। 4

Biharboard Questionpaper.com

BiharboardQuestionpaper.com

उत्तर मॉडल सेट-08

उत्तर-1 (अ)

(क) जो व्यक्ति श्रमशील और पुरुषार्थी है, वही संसार में अपने अस्तित्व की रक्षा करने में सफल हो सकता है।

(ख) वीर ही इस पृथ्वी को भोग सकता है। कहा भी गया है 'वीरभोग्या वसुंधरा'।

(ग) भाग्यवादी लोगों की आकांक्षाएँ पूर्ण नहीं हो पातीं, क्योंकि वे अपने पुरुषार्थ पर भरोसा न कर भाग्य पर भरोसा करते हैं।

(घ) लक्ष्य-प्राप्ति क बाद कर्मवीर को समाज से सम्मान प्राप्त होता है और वह समाज में आदर्श की प्रतिमूर्ति बन जाता है।

(च) हमारे जीवन में कर्म का उत्यधिक महत्त्व है। निरंतर कर्म करने से हम अपनी किसी भी आकांक्षा (अभिलाषा) की प्राप्ति कर सकते हैं।

(छ) वह वस्तु या प्रयोजन जिसकी प्राप्ति के लिए मनुष्य को उद्योग या परिश्रम करना पड़ता है उसे पुरुषार्थ कहा गया है। पुरूषार्थ के चार वर्ग हैं- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। जीवन में धर्म को प्रधान उद्देश्य मानने वाला 'धर्म-पुरुषार्थी', अर्थ को प्रधान उद्देश्य मानने वाला, 'अर्थ-पुरुषार्थी' काम (भोग) को प्रधान उद्देश्य मानने वाला 'काम-पुरुषार्थी' तथा मोक्ष को प्रधान उद्देश्य मानने वाला 'मोक्ष-पुरुषार्थी कहलाता है।

(ब)

(क) आतंकवाद ने आज समूचे विश्व को त्रस्त कर रखा है। विश्व का शायद ही कोई देश हो जो आतंकवाद से प्रभावित या त्रस्त नहीं है।

(ख) लेखक सरकार और नीति-नियंताओं से यही अपेक्षा करता है कि इन दोनों को अपने-अपने स्तर पर आतकंवाद को समाप्त करने के लिए कृतसंकल्प होना चाहिए। धैर्य या चुप बैठने से काम नहीं चलने वाला है।

BiharboardQuestionpaper.com

(ग) राष्ट्रहित में राजनेताओं को दलगत संकीर्णता तथा राजनीतिक स्वार्थ-भाव से ऊपर उठकर, एकजुट होकर आतंकवाद के विरोध में कुछ ठोस पहल हेतु प्रयत्नशील होना चाहिए।

(घ) 'सुनियोजित'- 'सु' तथा 'नि'- उपसर्ग

'प्रायोजित'- 'प्र' तथा 'आ' - उपसर्ग

उत्तर-2 (क) बढ़ती महँगाई

महँगाई की मार- मूल्यों में निरंतर वृद्धि का नाम महँगाई है। उत्पादन में कमी और माँग की वृद्धि के कारण वस्तुओं का मूल्य लगातार बढ़ने लगता है। बढ़ते मूल्य के चलते जनता त्रस्त हो जाती है, उसे अपने सीमित आय में महँगाई का सामना करने में बहुत दिक्कत होती है। बढ़ती हुई महँगाई निर्धन जनता के पेट पर ईंट बाँधती है। मध्यम-वर्ग को अपने पारिवारिक बजट में कटौती करने को मजबूर करती है। अपनी-अपनी अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संघर्ष करने वाली निम्न एवं मध्यवर्ग की जनता महँगाई की मार से किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाती है। इन दोनों वर्गों की जनता शिक्षा और स्वास्थ्य पर समुचित ध्यान नहीं दे पाती, 'रोटी और कपड़ा' में ही उलझ कर रह जाती है।

निरंतर बढ़ती महँगाई के कई कारण हैं जिनमें मुख्य है- जनसंख्या-वृद्धि की तीव्रता के कारण पूर्ति का माँग के अनुसार नहीं होना। एक प्रतिशत वार्षिक दर से मुद्रास्फीति तथा वस्तु-उत्पादन में ह्रास, घाटे की वित्तीय व्यवस्था, शहरीकरण की प्रवृत्ति, कालेधन का दुष्प्रभाव, व्यापारी वर्ग में मुनाफाखोरी और जमाखोरी की प्रवृत्ति, प्राकृतिक आपदाएँ आदि। विगत वर्षों में पर्याप्त वर्षा नहीं होने से खाद्यानों का अपेक्षित उत्पादन नहीं हो सका। दलहन और तेलहन की कीमतें आसमान छूने लगीं। इनका बाजार पर बुरा प्रभाव पड़ा।

सरकार आँकड़े पेश कर महँगाई को नियंत्रित बताती है पर वास्तविकता इसके विपरीत है। सरकार को महँगाई को नियंत्रित करने के ठोस उपाय करने चाहिए।

BiharboardQuestionpaper.com

महँगाई के चलते आम लोगों का जीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ है। उनकी क्रयशक्ति बहुत ही कम हो गई है।

महँगाई को दूर करने के चार कारगर उपाय हैं- कर चोरी को रोकना, राष्ट्रीयकृत उद्योगों के प्रबंधन एवं संचालन में अपेक्षित सतर्कता का होना, सरकारी खर्चों में योजनाबद्ध तरीके से कमी लाना तथा माँग के अनुसार उत्पादन में वृद्धि करना। पूर्णविवरण कमरतोड़ महँगाई को दूर करने के लिए राज्य सरकारों एवं केंद्र सरकार को मिलजुल कर प्रयत्न करना होगा साथ ही भारत की तमाम जनता को सतर्क होना होगा।

उत्तर-2 (ख) 'भारतीय एकता'

भारत भौगोलिक तथा आचार-निष्ठाओं की दृष्टि से विभिन्नताओं का देश है पर इसकी महत्त्वपूर्ण विशेषता है, 'विभिन्नताओं में अभिन्नता' का होना। यह अभिन्नता ही हमारे देश की विशिष्ट पहचान है। 'अनेकता में एकता' ही हमारी सांस्कृतिक देन है जिसने भारत को एकता के सूत्र में बाँध रखा है।

''यह उत्तर में बर्फ से ढँके हिमालय से लेकर दक्षिण में धूप से सराबोर तटवर्ती- गाँवों, दक्षिण-पश्चिम तट पर आर्द्र उष्णतटबंधीय जंगलों, पूर्व में ब्रह्मपुत्र की घाटी के उपजाऊ क्षेत्र से लेकर पश्चिम में थार रेगिस्तान तक फैला है।'' भारत को मुख्य रूप से छः अंचलों में विभक्त किया जा सकता है। ये अँचल हैं- उत्तरी, दक्षिणी, पूर्वी, पश्चिमी, मध्यवर्ती तथा पूर्वोत्तर अंचल।

भारत राज्यों का संघ है। यहाँ संसदीय प्रणाली की सरकार है। संविधान में भारत को धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक गणराज्य कहा गया है जो भारतीय एकता का मूल आधार है। संविधान में सम्पूर्ण भारत के लिए एक समान नागरिकता की व्यवस्था की गई है। संविधान के भाग चार के अनुच्छेद 51 'क' में नागरिकों के कर्तव्य के

BiharboardQuestionpaper.com

सम्बन्ध में कहा गया है कि इन्हें धर्म, भाषा और क्षेत्रीय तथा वर्ग सम्बन्धी भिन्नताओं को भूल कर सद्भाव और भ्रातृत्व की भावना को प्रोत्साहन देना चाहिए।

धर्म, भाषा, क्षेत्र आदि की संकोर्णता की तरह ही जातिवादी संकीर्णता ने भी भारतीय एकता को बुरी तरह प्रभावित किया है। भारतीय नागरिकों का यह कर्तव्य बनता है कि वे इन कथित संकीर्णताओं को भूल कर देश की एकता एवं अखण्डता को मजबूत करने का प्रयास करें। इसी से देश समृद्ध और विकसित हो सकगा।

देश के प्रत्येक नागरिक को देशहित में सोचना चाहिए। देश के आगे धर्म, संप्रदाय, जाति, भाषा और क्षेत्रविशेष का महत्त्व नहीं होता। प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह अलगावादी तत्वों के प्रति सावधान रहें और देश की एकता और अखण्डता के लिए अपने प्राण उत्सर्ग करने को सदा तत्पर रहें।

उत्तर-2 (ग) कबीरदास

कबीरदास भक्तिकाल के प्रसिद्ध कवि थे। इन्होंने 'निर्गुण पंथ' चलाया। इनके भगवान निराकार रूप में थे। इन्होंने अपनी रचनाओं के द्वारा समाज में छाए आडम्बर, छुआ-छूत तथा अंध परम्पराओं को दूर करने का प्रयास किया।

इनके जन्म के संबंध में अनेक जनश्रुतियाँ प्रचलित हैं। ऐसा कहा जाता है कि इनका जन्म एक विधवा ब्राह्मणी से हुआ जो लोक-लाज से बचने के लिए नवजात कबीर को वाराणसी की लहरतारा नदी (तालाब) के किनारे फेंक दिया था। इनका पालन - पोषण नीरू और नीमा नामक जुलाहा दम्पत्ति ने किया । स्वयं कबीरदास ने अपने को जुलाहा होने की बात कही है - 'तू ब्राह्मण, मैं काशी का जुलाहा' । इनके जन्म संवत् को लेकर मतभेद मिलता है। आचार्य शुक्ल ने इनका जन्म संवत् 1456 तथा निधन संवत् 1575 माना है।

कबीरदास ने कागज और कलम नहीं छुआ था, न कहीं विधिवत् शिक्षा ही पाई थी। वे खुद स्वीकार करते हैं- 'मसि कागद छुयो नहिं कलम गह्यो नहिं हाथ'। इन्होंने घूम-घूम कर ज्ञान प्राप्त किया, साधुओं की संगति की तथा

BiharboardQuestionpaper.com

खुद अनुभव से ज्ञान प्राप्त किया। इनके गुरु के रूप में रामानन्द एवं शेख तकी का नाम आता है। इनकी वाणी का संग्रह 'बीजक' के नाम से है।

कबीरदास की रचनाओं में मौलिक विचारों का प्रतिपादन, चली आ रही परम्पराओं रूढ़ियों एवं अंधविश्वासों का खंडन-मंडन तथा नीतिपरक दोहों में मानवोपयोगी संदेश दिये गये हैं। वे सगुण ब्रह्म, मूर्ति-पूजन, तीर्थ, व्रत, जटा-जूट धारण, दाढ़ी-मूँछें बढ़ाने, चंदन-टीका लगाने को उचित नही मानते। उनका कहना है कि हमारा ईश्वर घट-घट वासी है, सर्वव्यापक तथा अविनाशी है। वह अवतार नहीं लेता, न लीलाएँ करता है।

कबीरदास कर्म करने पर जोर देते थे, जाति-पाति एवं दिखावा उन्हें पसन्द नहीं था। उनकी कथनी और करनी में फर्क नहीं था। वे कहते हैं-
'जाति-पाति पूछे नहिं कोई। हरि को भजै से हरि का होई'। उनके दोहों में जो उपदेश है वह आज भी हमें प्रेरित करता है -

'माया मुई न मन मुआ, मरि -मरि गया शरीर।
आशा तृष्णा न मुई, यों कहि गया कबीर।।'

समाज-सुधार तथा मानवीय प्रेम का प्रसार करने में कबीरदास की देन महत्त्वपूर्ण है। वे भारतीय धर्म, संस्कृति, परम्परा एवं विचारधारा के संपोषक थे। उनके आने से समाज की अनेक कुरीतियों, बुरी परम्पराओं तथा रीति-रिवाजों का खात्मा हुआ। उनके उपदेश सरल तथा प्रसंगानुकूल हैं। वे आज भी हमें नयी सीख देते हैं। हमारी आँखें खोलते हैं तथा हमें नए चिंतन प्रदान करते हैं। वे एक ऐसे कर्मयोगी थे जो अंधविश्वासों की खाई पाटने के लिए अपना घर जलाने को सदा तैयार रहते थे। वे स्वयं ही कहते हैं -'जो घर जारै आपना, चलै हमारो साथ'। वस्तुतः कबीर अपने जमाने के एक बहुचर्चित क्रांतिकारी, सुधारक, संत और कवि थे।

BiharboardQuestionpaper.com

उत्तर-3

प्रिय राहुल,

दानापुर,

2 फरवरी, 2016

तुम्हारा पत्र कुछ दिन पूर्व मिला था। पत्रोत्तर देने में विलम्ब हुआ इसके लिए क्षमा चाहता हूँ। तुमने अपने पत्र में लिखा है कि मैं अपनी वार्षिक परीक्षा की तैयारी के सम्बन्ध में तुम्हें विस्तृत जानकारी दूँ।

मेरी वार्षिक परीक्षा अगले सप्ताह शुरू होने जा रही है। मैं परीक्षा की तैयारी में कमर कस कर लगा हुआ हूँ। मैंने सारे विषयों की तैयारी कर ली है, पर अँगरेजी के पत्र में थोड़ी कठिनाई हो रही है। इसके लिए आदरणीय शिक्षक त्रिपाठीजी की सहायता ले रहा हूँ। व्याकरण वाला अंश पूरा हो चुका है। व्याख्यात्मक और आलोचनात्मक प्रश्नों की तैयारी चल रही है। तुम्हारे सुझावों पर भी ध्यान दे रहा हूँ।

पता- राहुल राय

आर्यकुमार रोड, मालवीय नगर

गया, बिहार।

तुम्हारा मित्र

नीरज कुमार

Biharboardquestionpaper.com

अथवा-3

सेवामें,

प्रधानाध्यापक महोदय,

उच्च विद्यालय, हाजीपुर

द्वारा- वर्ग-शिक्षक।

विषय-विद्यालय में सफाई, पेयजल, तथा शौचालय की व्यवस्था के सम्बन्ध में।

महाशय,

BiharboardQuestionpaper.com

विनम्रतापूर्वक मैं विद्यालय की कतिपय त्रुटियों की ओर आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ। आपकी कर्तव्यपरायणता और उदारता को दृष्टि में रखकर ही मैं यह साहस कर रहा हूँ। कृपा कर आप इसे मेरी धृष्टता नहीं समझेंगे।

चतुर्थवर्गीय कर्मचारी दिनेश विद्यालय की सफाई पर ध्यान नहीं देते हैं। अध्ययन–कक्षों में बहुत दिनों से झाड़ू नहीं लगी है। पेयजल का स्रोत भी टूटा पड़ा है तथा शौचालयों की स्वच्छता पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है।

अत: आपसे साग्रह निवेदन है कि मेरे उपर्युक्त निवेदनों पर यथाशीघ्र ध्यान देते हुए विद्यालय के आदर्श स्वरूप की रक्षा की जाय। आपकी कृपा से मैं ही नहीं विद्यालय के सभी छात्र–छात्राएँ आपके आभारी रहेंगे।

दिनांक–10 फरवरी, 2017

विश्वासभाजन

राहुल कुमार, वर्ग नवम् 'ब'

क्रमांक–20

उत्तर 4- दो वर्णो के (अक्षरों के) मेल से उत्पन्न विकार (परिवर्तित रूप) को 'संधि' कहते हैं। जैसे–महा+ईश=महेश। यहाँ 'आ'+ 'ई' के मेल से 'ए' का रूप परिवर्त्तन हुआ है। अर्थात 'आ' और 'ई' की संधि हुई है।

'समास' में अक्षरां का नहीं वरन् दो या दो पदों का मेल होता है। उदाहरण– 'रसोईघर'। इसमें 'रसोई' और 'घर' दो पद है। जो आपस में मिलकर एक 'रसोईघर' हो जाता है।

उत्तर 5- (i) पवन

(ii) क्रोध करना

(iii) कंठ

(iv) नेत्री

(v) धार्मिक

BiharboardQuestionpaper.com

उत्तर 6-(i) देश भर में खुशहाली छा गई।

(ii) धन झगड़ा का कारण बना।

(iii) मैंने एक नाग मारा।

(iv) लड़की ने कहा कि मैं घर जाऊँगी।

(v) तलवार बहादुरों का शस्त्र है।

उत्तर 7-

स्तम्भ 'अ'	स्तम्भ 'ब'
I –	ग
II –	छ
III –	घ
IV –	च
V –	क
VI –	ख

उत्तर 8- लेखक की दृष्टि में सच्चे भारत के दर्शन कोलकाता, मुंबई, मद्रास आदि शहरों में नहीं वरन् इसके गाँवों में हो सकते हैं। भारत एक 'कृषि-प्रधान' देश है। इसकी संस्कृति कृषि से जुड़ी है। अतः यदि हम भारत का दर्शन करना चाहते हैं तो हमें इसके गाँवों के दर्शन करने होंगे। गाँवों में ही भारत की आत्मा का निवास है। इसके लिए भारत के गाँवों का परिभ्रमण करना होगा।

उत्तर 9- नाखून पशुता का प्रतीक हैं। मनुष्य की पशुता जितनी बार काटी जाती है, वह उतनी ही बार जन्म ले लेती है और मनुष्य है कि वह अपने से पशुता को निकाल कर सच्चे-अर्थों में मनुष्य बना रहना चाहता है। अतः पशुता के प्रतीक नाखून जब भी बढ़ते हैं तब मनुष्य उन्हें काट डालता है।

BiharboardQuestionpaper.com

उत्तर 10- गाँधीजी सबसे बढ़िया शिक्षा 'अहिंसक प्रतिरोध' को मानते हैं। सही, बढ़िया और श्रेष्ठ शिक्षा वही है जो हमें बुराई, अवगुण हिंसा, अनैतिकता आदि का साहसपूर्वक विरोध करने के लिए तैयार करे। अहिंसक प्रतिरोध से विपक्ष की शारीरिक क्षति नहीं होती, अपितु उसके मन की सारी दुर्भावनाएँ हमेशा के लिए समाप्त हो जाती हैं। इसी अर्थ में यह 'बढ़िया शिक्षा' है।

उत्तर 11- संतू मछलियों को बड़े प्यार से देख रहा था। वह मछलियों को छूकर देखना चाहता था पर उसे डर लगता था। वह मछली को छूते हुए हिचक रहा था कि कहीं मछली उसे काट न ले। अपने बड़े भाई (लेखक) के बहुत समझाने बुझाने पर उसने एक बार हिम्मत बटोरी और सबसे ऊपर वाली मछली को ऊँगली से छुआ भी पर फिर डर कर अपना हाथ खींच लिया। उसकी हिचक अभी दूर नहीं हुई थी। अब भी उसके भीतर डर था, जिसके चलते वह मछली को नहीं छू पा रहा था।

उत्तर 12-(i) यह गद्यांश 'शिक्षा और संस्कृति' पाठ से उद्धृत है।

(ii) इस पाठ के लेखक महात्मा गाँधी हैं।

(iii) आज की शिक्षा पद्धति में व्यावहारिकता का महत्त्व अपेक्षित है। सभी शिक्षा किसी दस्तकारी या उद्योगों के माध्यम से दी जानी चाहिए।

उत्तर 13- 'हमारी नींद' शीर्षक कविता अत्यन्त सार्थक है। कवि कहता है कि हमारी नींद में जीवन अपनी स्वाभाविक गति से विकसित होता रहता है, भले ही हमें इसका एहसास न हो। जीवन तो निरंतर गति का नाम है। यह नींद और जागरण दोनों में समान भाव से गतिमान है।

BiharboardQuestionpaper.com

उत्तर 14– ''दिनकर'' के अनुसार जनता के स्वप्नों में अपूर्व तेज, दाहकता और घोर निराशा के अंधकार को दूर करने की क्षमता है। जनता के स्वप्न अजेय एवं रौद्ररूप धारण करने वाले हैं।

उत्तर 15– 'माली–मालिन' के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि 'माली–मालिन के युग्म–प्रयास से जिस तरह वाटिका रंगों और सुगंधों से जीवंत और चित्ताकर्षक बनी रहती है, उसी तरह श्री राधिका और श्रीकृष्ण (नंदनंद) की लीलाओं से प्रेम रूपी वाटिका को जीवंतता प्राप्त होती रहती है।

उत्तर 16– बूढ़ा चौकदार वृक्ष हमारी बूढ़ी अनुभवी पीढ़ी के साथ–साथ सतर्क बुद्धिजीवी वर्ग का प्रतीक है जो अच्छे–बुरे को दूर से ही पहचान लेता है। बूढ़ा चौकीदार वृक्ष कवि को आते देख दूर से ही ललकार कर पूछता था, ''कौन?'' कवि जवाब देता था ''दोस्त'' जिसे सुनकर चौकीदार वृक्ष दोस्ती के आगे नतमस्तक हो जाता था। यह सम्वाद दर्शाता है कि अनुभवी बुद्धिजीवी वर्ग हर खतरे को भाँप सकता है। जिसे आज अनदेखा किया जा रहा है।

उत्तर 17–(i) यह पद्यांश 'भारतमाता' पाठ से उद्धृत है।

(ii) इस पाठ के रचनाकर 'सुमित्रानन्दन पंत' हैं।

(iii) भारत की तीस कोटि (तीस करोड़) संतान अर्द्धनग्न, अर्धक्षुधित, शोषित निहत्थी, मूढ़ असभ्य, अशिक्षित, निर्धन स्वाभिमान–रहित तथा निराश्रित है। उसकी स्थिति अत्यंत दयनीय है।

उत्तर 18– लक्ष्मी भारतीय गृहिणी है। वह जीवन में कर्म को अपेक्षित महत्त्व देती है। वह बाँध की सुरक्षा में जुटे बच्चों से कहती है, जुटे रहो बच्चों, ।'' वह नीयति के समानांतर कर्म का मार्ग तैयार करती है और उसी पर चलना श्रेयष्कर समझती है। उसमें अदम्य साहस है। बाँध टूटने का समाचार मिलते ही वह अपने दोनों बच्चियों और दूध पीते बच्चे को लेकर सुरक्षित स्थल की

BiharboardQuestionpaper.com

ओर जाती है। वह ममतामयी माँ, कर्मठ, सामाजिक चेतना से परिपूर्ण, कर्म की उपासिका और सच्चे अर्थों में गृहिणी है। बगैर टूटे वह अच्छे दिनों की प्रतीक्षा करने वाली तपस्विनी है।

उत्तर 19- 'दही वाली मंगम्मा' कहानी में बहू ने सास को मनाने के लिए अपने बच्चे को माध्यम बनाया। उसने अपने बच्चे को सिखाया कि तू अपनी दादी के पास चला जा, वह मिठाई देती है। हमारे घर कदम मत रखना। बच्चा दादी के पास चला गया। दादी पोते को पाकर निहाल हो उठी और धीरे-धीरे सास-बहू के बीच की दूरी सिमटने लगी।

उत्तर 20- शहर के कन्या विद्यालय में पढ़ने वाली कुसुम तीसरे महीने तक अच्छी (पागलपन में सुधार) हो गई। माँ, परिवार के सदस्यों और गाँव के लोगों को सुखद आश्चर्य हुआ। परिवार के सदस्यों और समाज के लोगों ने माँ को समझाया- ''माँजी आप मंगू को एक बार अस्पताल में भर्ती करके तो देखे। जरूर अच्छी हो जायगी।'' जिदंगी में पहली बार माँ ने अस्पताल का विरोध नहीं किया। चुपचाप लोगों की सलाह सुनती रही।

Biharboardquestionpaper.com

BiharboardQuestionpaper.com

मॉडल सेट-09

समय 3 घंटा 15 मिनट **पूर्णांक-100**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देशः-

(क) परीक्षार्थी यथासम्भव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

(ख) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(ग) उत्तर देते समय शब्द-सीमा का ध्यान रखें।

(घ) दाहिनी ओर अंक निर्दिष्ट किये गये हैं।

(च) प्रश्न-पत्र को ध्यान से पढ़ें। इसके लिए 15 मिनट का अतिरिक्त समय दिया जा रहा है।

प्रश्न 1. (अ) निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दें। 6 x 2 =12

सूरदास भक्तिकाल के प्रसिद्ध कवि माने जाते हैं। विद्वानों ने सूरदास की जन्मांधता के बारे में भिन्न-भिन्न तर्क दिए हैं। किसी ने कहा है कि वे जन्म से अंधे थे, तो किसी ने कहा कि किसी बीमारी के कारण उनकी आँखें खराब हो गई तो किसी अन्य ने तर्क दिया कि श्रीकृष्ण की भक्ति में ये जब पूरी तरह लीन हो गए तब इनकी भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान श्रीकृष्ण ने इन्हें दर्शन दिए तो इन्होंने अपनी आँखें यह कहते हुए खुद ही फोड़ लीं कि जिन आँखों ने कृष्ण के दर्शन कर लिए, उन आँखों से संसार को क्या देखना? और उन्होंने अपनी आँखें खुद ही नष्ट कर डालीं। चाहे जो हो, वे ऐसे कवि थे, जिनकी प्रशंसा सब जगह की जाती है। उनकी तीन प्रमुख रचनाएँ हैं:- सूरसागर, सूरसारावली और साहित्य लहरी।

सूरदास ने राधा और कृष्ण की माधुर्य लीला का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया है। सूर का बाल-लीला वर्णन तो और भी रोचक और प्रेरणादायी है। बाल कृष्ण गाय चराने जाते हैं, गोपियों को परेशान करते हैं, दही और मक्खन खाते-खिलाते हैं और कभी-कभी चुराते भी हैं। इसीलिए उनपर सूरदास ने एक प्रसिद्ध भजन लिखा है- ''मैया मोरी मैं नहीं माखन खायो।'' वस्तुतः इनकी रचनाएँ भक्ति-रस के साथ-साथ साहित्य-रस से भी परिपूर्ण हैं।

BiharboardQuestionpaper.com

नीच दिये गये प्रश्नों के उत्तर दें:- (प्रत्येक 30 शब्दों में)

(क) सूरदास किस काल के कवि थे?

(ख) इनकी जन्मांधता के सम्बन्ध में कौन-कौन से तर्क दिये जाते हैं?

(ग) इनकी प्रमुख रचनाएँ कौन-कौन सी हैं?

(घ) सूरदास ने अपने साहित्य में किसका वर्णन किया है?

(च) इनका बाललीला-वर्णन कैसा लगता है?

(छ) उपर्युक्त अवतरण का एक शीर्षक दें।

(ब) निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिय प्रश्नों के उत्तर दें। 6 x 2 =8

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम एक सुयोग्य तथा कर्मठ राष्ट्रपति थे। उन्हें मिसाइल मैन भी कहा जाता है। वे जब कभी स्कूलों में जाते तो हमेशा बच्चों को प्रेरित करते रहते थे। वे कहा करते थे- 'सपने वे नहीं हैं जो हम सोते समय देखा करते हैं, बल्कि सपने वे हैं जो हमें सोने नहीं दते।'' उनका यह संदेश कितना प्रेरित करने वाला है। वे अक्सर कहा करते थे कि अपना लक्ष्य हमेशा ऊँचा रखो इससे तुम अवश्य एक दिन महान बन जाओगे। आज डॉ॰ कलाम नहीं हैं लेकिन उनके ये उपदेश एवं प्रेरक बातें आज भी हमें जगाने वाली हैं।

नीच दिये गये प्रश्नों के उत्तर द (प्रत्येक 30 शब्दों में)।

(क) पूर्व राष्ट्रपति डॉ॰ कलाम कैसे व्यक्ति थे?

(ख) उन्हें अन्य किस नाम से पुकारा जाता है?

(ग) डॉ॰ कलाम क्या कहा करते थे?

(घ) उपर्युक्त अवतरण का एक समुचित शीर्षक दें।

BiharboardQuestionpaper.com

प्रश्न 2. दिये गये संकेत बिन्दुओं के आधार पर 250 शब्दों म किसी एक विषय पर निबन्ध लिखें। 10

(क) तकनीकी शिक्षा का महत्त्व।

(i) भूमिका

(ii) तकनीकी शिक्षा का अर्थ

(iii) महत्त्व

(iv) उपसंहार

(ख) आपकी प्रिय पुस्तक

(i) भूमिका

(ii) पुस्तक का महत्त्व क्यों?

(iii) पुस्तक की विषय-वस्तु

(iv) पुस्तक से मिलने वाला संदेश

(v) उपसंहार

(ग) वन-संरक्षण की आवश्यकता

(i) भूमिका

(ii) वन की महत्ता

(iii) कटाई का दुष्परिणाम

(iv) वन-संरक्षण की आवश्यकता

(v) उपसंहार

प्रश्न 3. रुग्नावकाश के लिए प्रधानाध्यापक को प्रार्थना-पत्र लिखें। 5

अथवा

बिजली का बिल अधिक आने पर संबंधित पदाधिकारी को शिकायत-पत्र लिखें।

प्रश्न 4. संज्ञा के कितने भेद हैं? उदाहरण सहित लिखें। 5

अथवा

BiharboardQuestionpaper.com

भाषा किसे कहते हैं यह कितने प्रकार की होती है?

प्रश्न 5. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें। 5x1=5

(i) निर्धन का विलोम..................................है।

(ii) पशु का भाववाचक ....है।

(iii) राजीव का अर्थ...................................है।

(iv) जिसकी गहराई का पता न चल सके इसके लिए एक शब्द ....।

(v) उत्तेजना में.................................उपसर्ग है।

प्रश्न 6. निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करें- 5x1=5

(i) गाय से बकरी की दूध अधिक पौष्टिक होती है।

(ii) मनुष्य एक सामाजिक जीव है।

(iii) आज का सभा आप संचालित करें।

(iv) उनकी माँ का देहान्त हो गई।

(v) इस घोषणा का प्रभाव नहीं हुई।

प्रश्न 7. स्तम्भ 'अ' और स्तम्भ 'ब' का सही मिलान करें। 6x1=6

स्तम्भ 'अ'	स्तम्भ 'ब'
(i) धरती कब तक घूमेगी	(क) हिरोसिमा
(ii) अनामिका	(ख) स्वदेशी
(iii) प्रेमधन	(ग) अक्षरज्ञान
(iv) अज्ञेय	(घ) साँवरदइया
(v) विनोद कुमार शुक्ल	(च) भारत से हम क्या सीखें
(vi) मैक्समूलर	(छ) मछली

निर्देश:- प्रश्न संख्या 8 से 20 तक प्रत्येक प्रश्न के उत्तर 30 शब्दों में दें।

प्रश्न 8. लखनऊ और रामपुर से बिरजू महाराज का क्या सम्बन्ध है? 3

प्रश्न 9. अन्वियों के प्रति लेखक कैसे अपना सम्मान प्रदर्शित करते हैं? 3

BiharboardQuestionpaper.com

प्रश्न 10. 'खोखा' किन मामलों में अपवाद था? 3

प्रश्न 11. समस्त भूमण्डल में सर्वविद ''सम्पदा और प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण देश भारत है'' कैसे? 3

प्रश्न 12. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दें-

'बहादुर उसी तरह खड़ा रहा तो निर्मला का गुस्से से बुरा हाल हो गया। उसने लपक कर उसके माथे पर दो-तीन थप्पड़ जड़ दिए- सुअर कहीं के! इसीलिए तुझे किशोर मारता है। इसी वजह से तेरी माँ भी मारती होगी। चल, बना रोटी...मैं नहीं बनाऊँगा...मेरी माँ भी सारे घर की रोटियाँ बना कर मुझसे रोटी सेंकवाती थी- वह रोने लगा था।'

(i) यह गद्यांश किस पाठ से उद्धृत है? 1

(ii) इस पाठ के लेखक कौन हैं? 1

(iii) गद्यांश का भाव स्पष्ट करें। 3

प्रश्न 13. कवि किसके बिना यह जन्म व्यर्थ मानता है? 3

प्रश्न 14. बेटे के लिए 'ङ' क्या है? और क्यों.................... 3

प्रश्न 15. 'वाणी' कब विष के समान हो जाती है? 3

प्रश्न 16. कवि किस तरह बंगाल में एक दिन लौटकर आने की बात करता है? 3

प्रश्न 17. निम्नलिखित पद्यांश से पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दें।

'' जब मेरा अस्तित्व न रहेगा प्रभु तब तुम क्या करोगे?
जब मैं तुम्हारा जलपात्र टूटकर बिखर जाऊँगा?
जब मैं तुम्हारी मदिरा सूख जाऊँगा या स्वादहीन हो जाऊँगा''

(i) प्रस्तुत पंक्तियाँ किस पाठ से ली गई हैं? 1

(ii) इस पाठ के रचनाकार कौन हैं? 1

(iii) इस पद्यांश का भाव अपने शब्दों (तीस) में लिखें। 3

BiharboardQuestionpaper.com

प्रश्न 18. मंगम्मा क्यों दु:खी थी? 3

प्रश्न 19. लक्ष्मी ने अपने बड़े लड़के को साथियों के पास क्यों भेजा? 3

प्रश्न 20. मंगू के लिए माँ और भाई में क्या अंतर था? 4

BiharboardQuestionpaper.com

BiharboardQuestionpaper.com

उत्तर मॉडल सेट-09

उत्तर 1. (अ)

(क) सूरदास भक्तिकाल के कवि थे।

(ख) इनकी जन्मान्धता के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न तर्क दिए गए हैं। किसी ने कहा कि वे जन्म से अंधे थे, किसी ने कहा कि किसी बीमारी से उनकी आँखें खराब हो गई तो किसी ने यह तर्क दिया कि इनकी भक्ति से प्रसन्न होकर श्रीकृष्ण ने इन्हें दर्शन दिए तो यह कहकर अपनी आँखें उन्होंने खुद फोड़ लीं कि जिन आँखों ने कृष्ण के दर्शन कर लिए उन आँखों से इस संसार को देखना कैसा? इस तरह कई तर्क दिए गए हैं।

(ग) इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- सुरसागर, सुरसारावली और साहित्यलहरी।

(घ) सूरदास ने अपने साहित्य में राधा और कृष्ण की माधुर्यपूर्ण लीला का वर्णन किया है।

(च) इनका बाल-लीला वर्णन रोचक और प्रेरणादायी लगता है।

(छ) 'सूरदास और उनका काव्य'।

(ब)

(क) पूर्व राष्ट्रपति डॉ॰ कलाम एक सुयोग्य और कर्मठ व्यक्ति थे।

(ख) उन्हें 'मिसाइल-मैन' के नाम से भी पुकारा जाता है।

(ग) डॉ॰ कलाम कहा करते थे- 'सपने वे नहीं जो हम सोते समय देखा करते हैं, बल्कि सपने वे हैं जो हमें सोने नहीं देते।'

(घ) 'डॉ॰ कलाम का संदेश'।

BiharboardQuestionpaper.com

उत्तर 2. (क) 'तकनीकी शिक्षा का महत्त्व'

शिक्षा बिना मनुष्य, पशु के समान है। वस्तुतः शिक्षा ही मनुष्य की सम्भावनाओं को उजागर करती है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य का अपना विकास तो होता ही है, राष्ट्र भी विकसित होता है और उन्नति की ओर अग्रसर होता है।

शिक्षा के विभिन्न चरण हैं। पहला चरण है 'साक्षरता', दूसरा चरण है 'पठनपाठन के साथ समझदारी का विकास', तीसरा चरण है 'विशेष शिक्षा'। इस विशेष शिक्षा के दो रूप हैं- पारम्परिक और तकनीकी शिक्षा। दोनों का अपना-अपना महत्त्व है। वस्तुतः दोनों ही अन्योनाश्रित हैं। किन्तु आज के प्रसंग में तकनीकी-शिक्षा का अपना विशेष महत्त्व हैं क्योंकि इसका दायरा बड़ा होता जा रहा है और जरूरत भी।

तकनीकी शिक्षा का अर्थ है किसी कला या शिल्प का सर्वांगीण ज्ञान। यों तो प्रत्येक क्षेत्र में विशेष ज्ञान अपेक्षित है किन्तु तकनीकि शिक्षा से, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, प्रबंधन, सूचना, संचार पत्रकारिता, ऊर्जा, बायोटेक्नोलॉजी की शिक्षा का ही बोध होता है। पहले यह क्षेत्र सीमित था किन्तु ज्ञान के प्रसार के कारण संसार के सिमट जाने से तकनीकी शिक्षा आज की आवश्यकता है। खासकर, अपने देश में तकनीकि शिक्षा आज की जितनी आवश्यकता है, उतनी पहले कभी नहीं थी।

भारत की आबादी आज एक अरब से ज्यादा हो चुकी है। इतनी बड़ी आबादी के लिए भोजन, वस्त्र और आवास का प्रबन्धन बहुत जरूरी है। जमीन बढ़ाई नहीं जा सकती। अतः अधिकाधिक उत्पादन की विधि खोजनी होगी और इसके लिए कृषि का तकनीकी ज्ञान चाहिए साथ ही लोगों के स्वास्थ्य के लिए चिकित्सक चाहिए और इसके लिए चिकित्सा विज्ञान (डॉक्टरी) की शिक्षा जरूरी है। इसी तरह सड़क, बिजली, परिवहन आदि के लिए इंजीनियर चाहिए। बड़े-बड़े उद्योगों के लिए कुशल प्रबन्धक, शोधकार्यों के लिए वैज्ञानिकों, तकनीसियनों की

BiharboardQuestionpaper.com

बहुत जरूरत होगी और यह सब कार्य तकनीकी शिक्षा के जरिए ही हो सकता है। सूचना और संचार तथा पत्रकारिता का क्षेत्र भी सुगठित और कुशल होना चाहिए क्योंकि लोगों को जागरूक बनाने में इनका महत्त्वपूर्ण योगदान होता है।

तात्पर्य यह है कि तकनीकि शिक्षा में उदासीनता से हमारी प्रगति का मार्ग अवरुद्ध हो जाएगा। यह अच्छी बात है कि अपने देश में इस ओर ध्यान दिया जा रहा है और महाविद्यालयों/विद्यालयों में इस प्रकार की शिक्षा की शुरूआत हो गई है किन्तु अभी भी तकनीकी–शिक्षा का ठोस ढाँचा या संरचना तैयार नहीं हुई है। सरकार का, और शिक्षण संस्थानों को इस पर विशेष ध्यान देना होगा, अन्यथा पुल बनते ही गिर जाएँगे, डॉ॰ की कैंची मरीज के पेट में रह जाएगी, मोटरगाड़ियाँ बिना ब्रेक के बन जाएँगी, दवा जहर बन जाएगी, अखबारों में रोग के बदले भोग छपेगा।

जिम्मेदार संस्थानों का ढाँचा मजबूत न होने से उन्नति (प्रगति) के बदले अवनति हो जाएगी। अतएव तकनीकी शिक्षा के पहले इसका सुदृढ़ ढाँचा तैयार करना चाहिए तभी इच्छित लक्ष्य की प्राप्ति होगी। इस प्रकार निश्चय ही तकनीकि शिक्षा का हमारे सार्वजनिक जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है।

अथवा

उत्तर 2. (ख) वन संरक्षण की आवश्यकता

कानन, विपिन, जंगल, वन, अरण्य आदि सभी शब्द, प्रकृति की एक अनुपम देन का अर्थ, भाव और स्वरूप को प्रकट करने वाले हैं। आदिमानव का जन्म, उनकी सभ्यता संस्कृति का विकास, इन वनों में पल बढ़कर ही हुआ था। उनकी भोजन आवास आदि सभी समस्याओं का समाधान करने वाले तो वन थे ही उसकी रक्षा भी वे ही किया करते थे। वेदों, उपनिषदों की रचना तो वनों में हुई ही, 'अरण्यक' जैसे ज्ञान–विज्ञान के भण्डार माने जाने वाले महान ग्रन्थ भी अरण्यों अर्थात वनों में लिखे जाने के कारण ही 'अरण्यक कहलाए। यहाँ तक कि संसार का आदि

BiharboardQuestionpaper.com

महाकाव्य माना जाने वाला आदिकवि वाल्मीकि द्वारा रचा गया 'रामायण' नामक महाकाव्य भी एक तपोवन में ही स्वरूपाकार हो सका।

भारत क्या विश्व की प्रत्येक सभ्यता-संस्कृति में वनों का अत्यधिक मूल्य एवं महत्त्व रहा है। इस बात का प्रमाण प्रत्येक भाषा के प्राचीनतम साहित्य में देखा जा सकता है जिनमें सघन वृक्षावलियों के वर्णन बड़े सजीव ढंग से और बड़ा रस लेकर किए गए हैं। उन सभी सहित्यिक रचनाओं में अनेक तरह के संरक्षित वनों की चर्चा भी मिलती है। प्रश्न किया जा सकता है कि आखिर वनों को संरक्षित क्यों किया जाता था? इसका एक ही उत्तर हो सकता है कि न केवल मानव-सभ्यता संस्कृति की रक्षा बल्कि अन्य प्राणियों की रक्षा के लिए भी तरह-तरह की वनस्पतियों, औषधियों आदि की रक्षा के लिए वन संरक्षण आवश्यक है। वन तरह-तरह के पशु-पक्षियों की प्रगातियों के लिए एकमात्र आश्रय-स्थल आज भी हैं। वहाँ कई प्रकार की वन्य एवं अदिवासी मानवजातियाँ भी निवास किया करती थीं। आज समय परिवर्तन के बाद भी वन संरक्षण की आवश्यकता ज्यों-की-त्यों बनी हुई है।

आज जिस तेजी से वनों की कटाई कर नये-नये उद्योग, कल-कारखानों की स्थापना हो रही है नये-नये रसायन, गैस, अणु आदि का निर्माण और परीक्षण जारी है जैविक शस्त्रास्त्र बनाये जा रहे हैं इन सभी से धुआँ, गैस कचरा आदि के निरन्तर निस्सरण से मनुष्य तो क्या सभी तरह के जीव-जन्तुओं का पर्यावरण अत्यधिक प्रदूषित हो रहा है। ऐसे में केवल वन ही हैं जो सारे विषैले और मारक प्रभाव से प्राणी-जगत की रक्षा कर सकते हैं। वनो के कारण ही उचित मात्रा में वर्षा हो सकती है और धरती की हरियाली बनी रह सकती है। हमारी सिंचाई और पेयजल की समस्या का समाधान भी वन संरक्षण से ही सम्भव हो सकता है। वन है तभी नदियाँ भी अपनो अमृतधारा से ओतप्रोत हैं। जिस दिन वन नहीं रहेंगे, सारी धरती वीरान और बंजर रेगिस्तान हो जाएगी।

BiharboardQuestionpaper.com

वन संरक्षण जैसे महत्त्वपूर्ण कार्य, वृक्षारोपण जैसे सप्ताह मना लेने से सम्भव नहीं हो सकता। इसके लिए वास्तव में पंचवर्षीय योजनाओं की तरह आवश्यक योजनाएँ बना कर कार्य करने की जरूरत है। वह भी दो-चार वर्षों के लिए नहीं वरन् सतत एवं निरंतर तभी धरती एवं उसके पर्यावरण के जीवन एवं हरियाली की रक्षा संभव हो सकती है। इस दिशा में और देर करना घातक सिद्ध होगा। जीवन और वन एक-दूसरे के लिए अभिन्न हैं। अतः यह वन संरक्षण कार्य हमें आज ही आरम्भ कर देना चाहिए।

उत्तर 3. सेवामें,

प्रधानाध्यापक महोदय,

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, दानापुर

विषयः रुग्नावकाश हेतु आवेदन।

महाशय,

निवेदन है कि मैं पिछले एक सप्ताह से टायफायड ज्वर से पीड़ित हूँ। अस्वस्थ होने के कारण शारीरिक रूप से कमजोर भी हो गया हूँ तथा चिकित्सक ने दस दिनों के लिए पूर्णतः आराम करने का निर्देश दिया है।

अतः श्रीमान् से विनम्र निवेदन है कि मुझे रोगमुक्त होने एव स्वास्थ्य-लाभ के लिए दिनांक 02.12.16 से 12.12.16 तक, कुल ग्यारह दिनों का रुग्नावकाश प्रदान करने की कृपा करें।

दिनांक - 2 दिसम्बर, 2016

आपका विश्वासी छात्र

सुजीत कुमार

कक्षा X खण्ड 'अ'

क्रमांक-5

Biharboard Questionpaper.com

BiharboardQuestionpaper.com

प्रश्न-3 अथवा

सेवामें

विद्युत अभियंता,

आरा ।

महोदय,

मैं एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते अपनी बिजली-बिल से संबंधित समस्या आपके सामने रखते हुए उसका सही समाधान चाहता हूँ।

मैं दो कमरों के मकान में रहता हूँ। प्रत्येक माह के नियमित बिजली के बदले इस माह मेरा बिजली बिल चार गुणा अधिक आ गया है।

अतः आपसे प्रार्थना है कि कृपया सम्बन्धित मीटर रीडर से कहकर मेरा बिल दुरुस्त कराने की कृपा की जाय। इसके लिए मैं आपका आभारी रहूँगा।

विश्वासी

दिनांक- 16 फरवरी, 2014

सुजीत कुमार

चौड़ी गली, आरा

उत्तर-4

'अ' परंपरागत रूप से सज्ञा के पाँच भेद हैं-

(1) व्यक्तिवाचक संज्ञा जैसे- राम, पटना, रामायण, आदि

(2) जातिवाचक संज्ञा जैसे- लड़का, लड़की, पशु, पक्षी आदि

(3) समूहवाचक संज्ञा- गुच्छा, झुण्ड, मेरा, परिवार आदि।

(4) द्रव्यवाचक संज्ञा- सोना, चाँदी, दूध, तेल, घी, आदि।

(5) भाववाचक संज्ञा- अच्छाई, बुराई, घबड़ाहट, सुस्ती, फुतो

BiharboardQuestionpaper.com

4.अथवा:-अपनी बात को बोल कर या लिखकर दूसरों तक पहुँचाना और दूसरों की बात सुनकर या पढ़कर समझना ही भाषा है। दूसरे शब्दों में "भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने भावों और विचारों को दूसरे तक पहुँचाते हैं।

भाषा तीन प्रकार की होती हैं-(क) मौखिक भाषा (ख) लिखित भाषा

(क) **मौखिक भाषा**- जब कोई व्यक्ति बोलकर अपनी बात दसरों तक पहुँचाता है, और सुनकर दूसरों की बात समझता है तो भाषा का वह रूप 'मौखिक भाषा' कहलाता है। जैसे- कक्षा में शिक्षक का पढ़ाना, नेता का भाषण देना।

(ख) **लिखित भाषा**- जब कोई व्यक्ति लिखकर अपनी बात दूसरों तक पहुँचाता है तथा दूसरा, व्यक्ति पढकर उसकी बात समझता है तो भाषा का वह रूप 'लिखित भाषा' कहलाता है जैसे- परीक्षा में बच्चों द्वारा प्रश्नों का उत्तर लिखना, किसी को पत्र लिखकर अपनी बात कहना।

(ग) सांकेतिक भाषा- संकेतों के द्वारा या शारीरिक हाव-भाव के द्वारा अपनी बातों को दूसरों तक पहुँचाना।

उत्तर-5:-

(i) धनवान

(ii) पशुता

(iii) कमल

(iv) अथाह

(v) उत्

उत्तर-6:- (i) गाय से अधिक बकरी का दूध पौष्टिक है।

(ii) मनुष्य एक सामाजिक जीव है।

(iii) आज की सभा का संचालन आप करें।

(iv) उनकी माँ का देहान्त हो गया।

(v) इस घोषणा का प्रभाव नहीं हुआ।

BiharboardQuestionpaper.com

उत्तर-7:- (i) घ

(ii) ग

(iii) ख

(iv) क

(v) छ

(vi) ङ

उत्तर-8:- लखनऊ में बिरजू महाराज का जन्म हुआ था, जबकि रामपुर में बिरजूमहाराज की तीनों बहनों का जन्म हुआ था। इन जगहों पर बिरजू महाराज रहे थे तथा संगीत नृत्य की साधना की थी।

उत्तर-9:- आविन्यों के निकट एकांत में लेखक 19 दिनों तक रहे थे तथा कविताएँ लिखी थीं। वे वहाँ कम ही दिन रहे लेकिन, गद्य और पद्य में विपुल-साहित्य की रचना कर सके। अत: लेखक कहते हैं- आविन्यों में जो पाया उसके प्रति गहरी कृतज्ञता उनके मन में है और जो गँवाया उसकी गहरी पीड़ा भी उन्हें है। अत: वे उनके प्रति सम्मान प्रदर्शित करते हैं।

उत्तर-10:- 'खोखा' का जन्म सेन दम्पत्ति के बुढ़ापे की अवस्था में हुआ था इसलिए खोखा जीवन और घर दोनों के नियम का अपवाद था क्योंकि उसके द्वारा की जाने वाली गलतियाँ, गलतियाँ नहीं मानी जाती थी। उस पर कोई पाबन्दी नहीं थी अपितु खुली छूट थी।

उत्तर-11:- भारत में मानव-मस्तिष्क की बड़ी उपलब्धियाँ बड़ी समस्याओं के समाधान के मनन योग्य हैं। जो जीवन को परिपूर्ण, सर्वांगीण, विश्वव्यापी पूर्णतया मानवीय बनाती हैं जिससे शाश्वत जीवन भी सुधारा जा सकता है। अत: भारत में भूतल पर ही स्वर्ग की छटा निकल रही है।

उत्तर-12:- (i) बहादुर

(ii) अमरकांत

BiharboardQuestionpaper.com

(iii) लेखक के घर बहादुर की बहुत पिटाई होती है, लेखक की पत्नी निर्मला भी उसे मारती है, किशोर भी मारता है। ऐसी स्थिति में रोटी बनाने का आदेश देने पर भी बहादुर नहीं बनाता, उल्टे वह कहता है कि घर में मेरी माँ भी सारे घर की रोटियाँ मुझसे सेंकवाती थी, और वह रोने लगता है। यहाँ बहादुर का बाल-सुलभ दर्द देखने को मिलता है।

उत्तर-13:- कवि गुरुनानक देव सदैव राम नाम के जप की सीख देते हैं। कवि के अनुसार हम इस जगत में जन्म लेकर आते हैं और 'राम' नाम का जाप नहीं करते तो हमारा जीवन व्यर्थ हो जाता है।

उत्तर-14:- बेटे के लिए 'ङ' का एक नया और दूसरा ही अर्थ है, जो कोई सोंच नहीं सकता। जब उसे ककहरा पढ़ाया जाता है तब क ख ग घ से बनने वाला कबूतर खरगोश, गमला, घड़ा का चित्र दिखलाया जाता है। लेकिन 'ङ' वाला नहीं दिखाया जाता । ऐसी स्थिति में वह निकाल लेता है कि 'ङ' में 'ड' और (ं) अनुस्वार को। वह बताता है कि 'ड' माता है और (ं) माता की गोद का बच्चा। इस तरह 'ङ' का वह नया शब्द चित्र बनाकर सीखना चाहता है क्योंकि 'ङ' से बनने वाले शब्द के लिए उसे किसी ने भी दृष्टि नहीं दी।

उत्तर-15:- यह कथन गुरुनानक का है। वे कहते हैं- 'जिस वाणी में राम का नाम शामिल नहीं, अथवा जिस मुख से राम का नाम नहीं निकलता, उस मुख से निकलने वाली वाणी विष के समान हो जाती है।'

उत्तर-16:- कवि अपनी कविता में उस बंगाल में लौट कर आने की बात करता है जहाँ अनेक नदियाँ कल-कल करती हुई बहतीं है, जिसके किनारे धान की लहलहाती हुई फसलें हैं, छोटे-छोटे पंक्षी भ्रमण कर रहे हैं तथा सर्वत्र प्राकृतिक मोहक वातावरण हर किसी को आकर्षित करता रहता है।

BiharboardQuestionpaper.com

उत्तर-17:- (i) प्रस्तुत पंक्तियाँ मेरे बिना प्रभु शीर्षक 'कविता' ले ली गई है।

(ii) इस पाठ के रचनाकार 'रेनर मारिया रिल्के' हैं।

(iii) कवि के अनुसार आत्मा और परमात्मा अन्योनाश्रित है। व्यक्ति और विराट सत्य एक-दूसरे पर निर्भर है। भक्त और भगवान की सत्ता परपर सापेक्ष है। भक्त के बिना भगवान एकाकी और निरुपाय है।

उत्तर-18:- मंगम्मा इसलिए दु:खी थी कि उसके पति ने उसे छोड़ दिया था। अब वह अकेली थी और दही बेचा करती थी।

उत्तर-19:- लक्ष्मी ने अपने बड़े लड़के को, जो स्वेच्छा सेवक दल में शामिल था, बाँध बचाने के लिए भेजा था। क्योंकि सभी बच्चों की टोली बाढ़ से होने वाली क्षति से वाकिफ थी, अत: लक्ष्मी ने मदद के लिए बड़े लड़के को साथियों के पास भेजा जिससे बाढ़ रोकने में मदद मिल सके।

उत्तर-20:- मंगू की माँ का हृदय सम्पूर्ण नारीत्व से पूरित है जिसमें ममता, स्नेह, वात्सल्य और संवेदना है जबकि भाई पुरुष हृदय है- कठोर और रूखा। माँ उसे हमेशा अपने हृदय से लगाये रखना चाहती है। सेवा करके स्वस्थ रखना चाहती है, जबकि भाई अपने काम में लगा रहता है। अत: दोनों में बहुत बड़ा अन्तर है।

Biharboardquestionpaper.com

....

BiharboardQuestionpaper.com

मॉडल सेट-10

समय 3 घंटा 15 मिनट **पूर्णांक-100**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देशः-

(क) परीक्षार्थी यथासम्भव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

(ख) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(ग) उत्तर देते समय शब्द-सीमा का ध्यान रखें।

(घ) दाहिनी ओर अंक निर्दिष्ट किये गये हैं।

(च) प्रश्न-पत्र को ध्यान से पढ़ें। इसके लिए 15 मिनट का अतिरिक्त समय दिया जा रहा है।

प्रश्न 1. (अ) निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दें। 6 x 2 =12

हिन्दी-साहित्य के इतिहास में 'गीत विधा' काव्य के अंतर्गत आता है। गीतों की उत्पत्ति उसी समय से हुई होगी जब लोगों ने अपनी भावनाओं को व्यक्त करना शुरू किया होगा। समाज में मांगलिक कार्यों के समय महिलाएँ गीतों की मंगल-ध्वनि से वातावरण को आनंदपूर्ण बना देती हैं। मिथिला में विद्यापति के गीत आज भी प्रचलित हैं। उन्होंने शंकर, दुर्गा, भैरव, गंगा आदि पर असंख्य गीत लिखे जिनकी प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। गीतों में जो साहित्यिक पुट दिखाई पड़ती है वे न केवल काव्य रस से ओत-प्रोत हैं बल्कि हमारी संवेदना को भी झंकृत कर देते हैं। ये गीत हमारे मन में भक्ति क भाव भी पैदा करते हैं। आगे चलकर गीतों की एक सुदीर्घ परम्परा चली। अनेक कवियों ने भी गीत लिखे। सूर, तुलसी, मीरा, मैथिलीशरण गुप्त, महादेवी वर्मा, जयशंकर प्रसाद आदि की रचनाओं में गीतों की भरमार मिलती है। महादेवी वर्मा को 'आधुनिक मीरा' की संज्ञा दी गई है।

(क) 'गीत' किस विधा के अंतर्गत आता है?

(ख) गीतों की उत्पत्ति किस समय हुई?

(ग) विद्यापति ने किस पर गीत लिखे थे?

(घ) गीत लिखने वाले कवियों की परम्परा में कौन-कौन से कवि हैं?

(च) 'आधुनिक मीरा' की संज्ञा किसे दी गई है?

(छ) उपर्युक्त अवतरण का कोई उपयुक्त शीर्षक दें।

BiharboardQuestionpaper.com

ब. निम्नांकित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिये प्रश्नों के उत्तर दें। **4 x 2 = 8**

अमेरिका जैसे सुसम्पन्न देश में पुरुष महिलाओं को आदर-सम्मान की दृष्टि से देखते हैं और उनके साथ उत्तम व्यवहार करते हैं। इसी कारण वह देश प्रगति के शिखर पर है। हमारे देश के पतन का मुख्य कारण यह है कि हमने शक्ति की इन सजीव प्रतिमाओं के प्रति आदर-बुद्धि न रखी। स्त्रियों की अनेक समस्याएँ हैं लेकिन अशिक्षा के कारण किसी भी समस्या का समाधान न हो सका। इस बात की पहचान कर स्वामी दयानंद सरस्वती ने 'स्त्री-शिक्षा' पर बहुत बल दिया। स्त्रियों को केवल चूल्हा-चौका और संतानोत्पादन का यंत्र न समझा जाए। इसी बात को ध्यान में रखकर गांधीजी ने नारियों को स्वतंत्रता-संग्राम में योगदान देने के लिए ललकारा।

क. अमेरिका में महिलाओं की कैसी स्थिति है?

ख. भारत के विकास में सबसे बड़ी बाधा क्या है?

ग. स्वामी दयानंद सरस्वती ने किस बात पर बल दिया?

घ. गाँधीजी ने नारियों को स्वतंत्रता-संग्राम के लिए क्यों ललकारा?

प्रश्न-2 दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 250 शब्दों में निबंध लिखें।

10

अ. मेरे प्रिय कवि

1. भूमिका
2. कवि का जीवन
3. कवि की रचनाएँ एवं महत्त्व
4. कवि की देन
5. उपसंहार

ब. प्रदूषण की समस्या

1. भूमिका
2. प्रदूषण के प्रकार
3. प्रकृति और मानव पर कुप्रभाव
4. प्रदूषण के कारण और रोकथाम के उपाय
5. उपसंहार

स. नशाबंदी

BiharboardQuestionpaper.com

1. भूमिका
2. एक बुराई के रूप में
3. सामाजिक समस्या
4. हानि
5. उपसंहार

प्रश्न-3 आर्थिक सहायता हेतु प्रधानाध्यापक के पास एक पत्र लिखें। 5

अथवा

पुलिस अधीक्षक को चोरी की घटनाओं को रोकने के लिए एक पत्र लिखें।

प्रश्न-4 कारक को परिभाषित कर उसके भेदों का नाम विभक्ति-चिह्नों के साथ लिखें। 5

अथवा

बलाघात से क्या समझते हैं? स्पष्ट करें।

प्रश्न-5 रिक्त स्थानों की पूर्ति करें । 5 x 1=5

1. 'न' का उच्चारण स्थान.......................................है।
2. त्रिफला...........................समास है।
3. आप............................सर्वनाम है।
4. लौटा..................................शब्द है।
5. अज्ञ का विपरीतार्थक शब्द......................है।

प्रश्न-6 निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करें। 5 x 1=5

1. यह सौ रूपया का नोट है।
2. उसने एक फूल की माला बनायी।
3. मैने एक नाग को मारा।
4. विष्णु के अनेको नाम हैं।
5. हम तो अवश्य ही जायेंगे।

प्रश्न-7 स्तम्भ अ और ब का सही मिलान आमने-सामने करें। 6x 1=6

	स्तम्भ -अ		**स्तम्भ ब**
1.	वीरेन डंगवाल	क.	एक वृक्ष की हत्या
2.	अनामिका	ख.	विनोद कुमार शुक्ल

BiharboardQuestionpaper.com

3. कुँवर नारायण ग. अशोक वाजपेयी

4. मछली घ. महात्मा गाँधी

5. आविन्यों च. अक्षर ज्ञान

6. शिक्षा और संस्कृति छ. हमारी नींद

निर्देश: प्रश्न संख्या 8 से 20 तक के प्रत्यक प्रश्न के उत्तर 30 शब्दों में दें:-

प्रश्न-8 जातिवाद के पोषक उसके पक्ष में क्या तर्क देते हैं? 3

प्रश्न-9 लेखक की दृष्टि में सच्चे भारत के दर्शन कहाँ हो सकते हैं और क्यों? 3

प्रश्न-10. नागरी लिपि कब तक सार्वदेशिक लिपि थी? 3

प्रश्न-11. बिरजू महाराज अपना सबसे बड़ा जज किसको मानते थे? 3

प्रश्न-12. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दें।

काशु तैश में आ गया। वह इसी उम्र में नौकरों पर अपनी बहनों पर हाथ चला देता था और क्या मजाल की कोई उसे कुछ कर दे। उसने आव देखा न ताव, मदन को एक घूँसा रसीद कर दिया।

क. यह गद्यांश किस पाठ से लिया गया है? 1

ख. इस पाठ के लेखक कौन है? 1

ग. गद्यांश का भाव स्पष्ट करें। 3

प्रश्न-13. वाणी कब विष के समान हो जाती है? 3

प्रश्न-14. कवि को वृक्ष बूढ़ा चौकीदार क्यों लगता था? 3

प्रश्न-15. कवि ने डफाली किसे कहा है और क्यों? 3

प्रश्न-16. 'मेरे बिना तुम प्रभु' कविता का वण्य विषय क्या है? 3

प्रश्न-17. निम्नलिखित पद को पद का पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दें?

'बोलि सकत हिन्दी नहीं, अब मिली हिन्दू लोग।
अंगरेजी माखन करत, अंगरेजी उपभोग।।'

क. प्रस्तुत पंक्तियाँ किस कविता से अवतरित हैं ? 1

ख. इसके रचनाकर कौन है? 1

ग. उक्त पंक्तियों का भाव स्पष्ट करें। 3

प्रश्न-18. मंगू को अस्पताल ले जाने के समय माँ की स्थिति कैसी थी? 3

प्रश्न-19. बड़े अस्पताल का डॉक्टर कैसा आदमी था? 3

प्रश्न-20. मंगम्मा को अपनी बहू के साथ किस बात को लेकर विवाद था? 4

BiharboardQuestionpaper.com

उत्तर मॉडल सेट-10

उत्तर-1 (अ)

(क) 'गीत' काव्य विधा के अंतर्गत आता है।

(ख) गीतों की उत्पत्ति उसी समय से हुई होगी जब लोगों ने अपनी भावनाओं को व्यक्त करना शुरू किया होगा और वे गीत के रूप में प्रकट हुई होंगी।

(ग) विद्यापति भगवान शंकर, दुर्गा, भैरव, गंगा आदि के असंख्य गीत लिखे थे।

(घ) गीत लिखने वाले कवियों की परम्परा में सूर, तुलसी, मीरा, मैथिलीशरण गुप्त, महादेवी वर्मा, जयशंकर प्रसाद आदि कवि हैं।

(च) 'आधुनिक मीरा' की संज्ञा महादेवी वर्मा को दी गई हैं।

(छ) गीत विधा

उत्तर-1 (ब)

(क) अमेरिका में महिलाओं की स्थिति अच्छी है क्योंकि वहाँ उन्हें आदर-सम्मान मिलता है।

(ख) भारत के विकास में सबसे बड़ी बाधा महिलाओं के प्रति आदर-बुद्धि नहीं रखा जाना है। स्त्रियाँ समस्याग्रस्त हैं।

(ग) स्वामी दयानंद सरस्वती ने स्त्री-शिक्षा पर बल दिया था।

(घ) नारियों को केवल चूल्हा-चौका और संतान-उत्पादन का यंत्र न समझा जाए। गाँधीजी ने नारियों को स्वतंत्रता-संग्राम के लिए ललकारा।

उत्तर-2 (अ) मेरे प्रिय कवि

(1) भूमिका - मेरे प्रिय कवि 'गोस्वामी तुलसीदास' हैं। ये एक स्वनामधन्य प्रसिद्ध राम-भक्त कवि थे। ये भक्तिकाल के कवि हैं। तुलसीदास ने राम-भक्ति के माध्यम से मानव-जाति को नई राह दिखलाई तथा धर्म और कर्त्तव्य का पालन करना सिखलाया।

(2) कवि का जीवन- तुलसीदास के पिता का नाम आत्माराम दुबे तथा माता का नाम हुलसी था। इनका विवाह दीनबंधु पाठक की कन्या रत्नावली से हुआ था। इनका बाल्य काल बहुत ही गरीबी एवं निर्धनता में बीता। जन्मते ही माता-पिता चल बसे।

BiharboardQuestionpaper.com

पत्नी की भर्त्सना से आहत होकर ये राम-भक्ति की तरफ मुड़ गये और घूम-घूम कर देशाटन किया। गुरु की सेवा, भक्ति, सत्संगति, स्वाध्याय और मानव-सेवा इनके जीवन का लक्ष्य बन गया।

(3) कवि की रचनाएँ एवं महत्त्व- तुलसीदास की बारह प्रामाणिक रचनाएँ हं, वे हैं- रामचरितमानस, दोहावली, कवितावली, गीतावली, रामाज्ञा प्रश्न, विनय पत्रिका, रामलला नहछू, पार्वती मंडल, जानकी मंडल, बरवै रामायण, वैराग्य संदीपनी और श्रीकृष्ण-गीतावली। इनकी रचनाएँ रामभक्ति के माध्यम से समाज-सुधार करती है। इनके आराध्य राम है। राम का चरित्रादर्श हमें नई रोशनी देता है। राम मानवतावाद के प्रतीक हं।

(4) कवि की देन- प्रत्येक कवि अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज को कुछ-न-कुछ देता है। तुलसीदास की रचनाएं हमें सोते से जगाती हं। यह हमें जीवन में आगे बढ़ने, कर्म करने, धर्म का पालन करने के लिए प्रेरित करती हैं। तुलसीदास ऐसे समय में पैदा हुए थे, जब सारा समाज विश्रृंखलित हो गया था। अत: तुलसीदास की देन आज भी प्रासंगिक है।

(5) उपसंहार- तुलसीदास का जीवन और काव्य दोनों हमें प्रेरित करत हैं। उनकी रचनाएँ गेय हैं यानी गायी जानेवाली हं, जिनसे भक्ति-रस प्रवाहित होती है। ये ऐसी रचनाएँ हैं जिनसे भक्ति एवं ज्ञान, जीवन-संदेश और आनन्द सब-कुछ प्राप्त हो जाता है। वे हिन्दी के श्रेष्ठ कवि कहे जाते हैं।

उत्तर 2. (ब) प्रदूषण की समस्या

(i) भूमिका- यहाँ प्रदूषण कई स्तरों पर फला है- जल-प्रदूषण, वायु-प्रदूषण, ध्वनि-प्रदूषण आदि। हम जिस समाज एवं परिवेश में रह रहे हैं वहाँ कई प्रकार के प्रदूषणों का आक्रमण है। जहाँ भी जाइए वायु-प्रदूषण दिख जाएगा। सड़कों पर गाड़ियाँ दौड़ रही हैं, धूल उड़ रहे हैं आपकी आँखें लाल हो जाएँगी। तेज आवाजें आपके कान को कष्ट पहुँचाएँगी, आप परेशान हो जाएँगे। आपको अपने आस-पास विभिन्न प्रकार के प्रदूषण नजर आएँगे। वर्षा ऋतु में तो 'जल प्रदूषण' से मच्छर, मक्खी आदि पनपने लगते हैं, जो विभिन्न रोगों को आमंत्रण देते हैं।

BiharboardQuestionpaper.com

(ii) प्रदूषण के प्रकार – जैसा कि ऊपर बताया गया कि हमारे आस-पास विभिन्न प्रकार के प्रदूषण हैं, जैसे- जल-प्रदूषण, वायु-प्रदूषण, ध्वनि-प्रदूषण, मृदा प्रदूषण आदि। आज चारों ओर प्रदूषण से आम आदमी तबाह और परेशान है। वे मुक्ति के लिए यत्र-तत्र छटपटाते देखे जाते हैं।

(iii) प्रकृति और मानव पर कुप्रभाव – प्रदूषण के इस प्रकार फलने से मानव और प्रकृति दोनों को ही नुकसान है। प्रकृति यदि दूषित हो जाएगी तो उसका कुप्रभाव पशु-पक्षियों, मनुष्यों एवं वनस्पतियों पर पड़ेगा। आज खाँसी-सर्दी, नेत्र-रोग, पेट तथा विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ जल-प्रदूषण से फैलती हैं। वायु-प्रदूषण भी हमारे स्वास्थ को प्रभावित करता है।

(iv) प्रदूषण के कारण और रोकथाम के उपाय- प्रदूषण के बढ़ने का एक बड़ा कारण बढ़ते उद्योग-धंधे हैं, विभिन्न प्रकार की मशीनें भी हमारे वातावरण को प्रभावित करती हैं। मशीनों से निकलने वाली धुएँ हमारे वातावरण को विषाक्त बनाती हैं। फलतः एसी प्रदूषणयुक्त हवाएँ स्वच्छ नहीं रहतीं, वे हमें बीमार बनाती हैं। जल-प्रदूषण से भी अनेक प्रकार के रोग पनपते हैं। हैजा, पेचिश, उल्टी, पेट-संबंधी रोग, पानी से ही तो फलते हैं। आजकल हिपाटाइटिस 'बी' तथा लीवर की बीमारी भी जल-प्रदूषण के कारण ही फल रही हैं।

इनकी रोकथाम के लिए जरूरी है कि हम साफ तथा ताजे जल का उपयोग करें। पानी उबालकर पीयें, खाना ढँककर रखें तथा नदी, तालाब, कुएँ के जल का उपयोग पीने के लिए नहीं करें। यदि पीना ही पड़े तो अच्छी तरह उबालकर पीयें। वायु-प्रदूषण से बचने के लिए अधिक-से-अधिक पेड़ लगाए जाएँ। अधिक पुरानी गाड़ियाँ सड़कों पर नहीं चलायी जाएँ तथा जो भी गाड़ियाँ चलें उन्हें प्रदूषणमुक्त बनाकर चलाया जाए। दुर्गन्ध उगलती नालियों की साफ -सफाई की जाए तथा समय-समय पर दवाइयों का भी छिड़काव किया जाए। मृदा-प्रदूषण से बचने के लिए भी वैज्ञानिक तरीकों से खेती की जाए। ऐसा न हो कि खेती वाली भूमि में इतने अधिक कीटनाशक तत्व डाल दिए जाएँ कि वहाँ से गुजरने वालों को कष्ट होने लगे तथा मिट्टी भी जहरीली बन जाए।

BiharboardQuestionpaper.com

वस्तुतः ऐसा इस कारण कि प्रदूषण का असर हमारी भोजन-सामाग्री पर भी प्रत्यक्ष तौर से पड़ता है।

(v) उपसंहार - आज सर्वत्र प्रदूषण से बचाव के लिए विभिन्न प्रकार के उपाय किए जा रहे हैं । सरकारी एवं गैर सरकारी स्तर पर विभिन्न संगठनों के द्वारा जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है कि वे प्रदूषण से मुक्ति हेतु विभिन्न उपाय करें। विद्यालय-स्तर पर भी कई योजनाएँ चलायी जाती हैं, जैसे-जल-संरक्षण, पर्यावरण-संरक्षण आदि। इनका मूल उद्दश्य स्वस्थ जीवन जीने में मानव का सहयोग करना है। ये कार्य इसलिए भी प्रासंगिक हैं क्योंकि आज विकास के साथ-साथ ध्वंस की भी समस्याएँ आ गई हैं। प्रकृति के साथ छेड़छाड़ होने से प्रकृति प्रदूषित हो गई है। जंगल काटे जा रहे हैं, पहाड़ काटे जा रहे हैं, ये सब हमारे लिए खतरे की घंटी है।

उत्तर 2. (स)नशाबन्दी

(i) भूमिका- जब नशीली आँखें, बदबू भरा मुख, लड़खड़ाते कदम, कीचड़ से सना शरीर आर बहकती वाणी वाले व्यक्ति नजर आते हैं तब अच्छे मानव की आत्मा उसके हृदय को कचोटने लगती है। वह सोचने लगता है कि मद्य का सेवन मानव को मानव नहीं रहने देता। मद्य-सेवन मादकता तो प्रदान करता ही है इसी के साथ वह व्यक्तित्व का विनाश, निर्धनता की वृद्धि और मृत्यु के द्वार भी खोलता है। अतः इस आसुरी प्रवृत्ति को समाप्त करना परमावश्यक है।

(ii) एक बुराई के रूप में- मद्यपान से व्यक्ति कुछ क्षण को अपने को एवं इस संसार को भूल जाता है। मजदूर-वर्ग अधिकतर इसी प्रवृत्ति के कारण मद्यपान करता है। कुछ धार्मिक उत्सवों पर लोग विशेष रूप से मद्यपान करते हैं। जहाँ साधारण लोग निम्न श्रेणी के शराब का सेवन करते हैं वहीं धनवान लोग अँगरेजी शराब का पान शान-शौकत से करते हैं।

BiharboardQuestionpaper.com

(iii) सामाजिक समस्या- आज देशी-विदेशी शराब की कुल खपत गाँवों में तथा नगरों में अंधाधुंध बढ़ रही है। भारत में प्राचीन काल में सोमपान का प्रचलन था जो अब मद्यपान हो गया है। यूरोप तथा अमेरिका में मद्यपान सामाजिक समस्या के रूप में उभरा है। बिहार में सामाजिक समस्या को देखते हुए बिहार सरकार ने ऐतिहासिक निर्णय लेते हुए मद्य-निषेध कर दिया है।

(iv) हानि- मद्यपान शरीर का क्षय करता है। इसके पीने से पेट में आग-सी लग जाती है, आँखें जलने लगती हैं और धीरे-धीरे भूख समाप्त हो जाती है। इससे यकृत पर बुरा प्रभाव पड़ता है। जिससे लीवर सिरोसिस नामक बीमारी भी हो सकती है जो प्राण लेकर ही पीछा छोड़ती है। इससे चर्बी घटती है तथा त्वचा सख्त काली पड़ने लगती है और चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ने लगती हैं।

(v) उपसंहार- सौभाग्य से बिहार सरकार ने 5 अप्रैल 2016 से मद्य-निषेध कानून को पूर्णत: लागू कर दिया है। बिहार के मुख्यमंत्री माननीय नीतीश कुमार नशाबंदी के लिये पूर्णत: दृढ़ता से कटिबद्ध हैं। सरकार के इस नशाबन्दी अभियान में आज समाज भी पूर्णत: सहयोग दे रहा है। समाज की महिलाएँ भी इस पुनीत कार्य में सहयोग दे रही हैं।

उत्तर-3

सेवामें,

प्रधानाध्यापक
बी.पी. इंटर विद्यालय, बेगूसराय

द्वारा- वर्ग शिक्षक।

विषय-आर्थिक सहायता हेतु।

महोदय,

BiharboardQuestionpaper.com

निवेदन है कि मैं अत्यंत गरीब छात्र हूँ। मेरे पिताजी की आय बहुत कम है। इसके कारण मेरी पढ़ाई में परेशानी आ रही है। मुझे आर्थिक सहायता की आवश्यकता है।

अत: श्रीमान् से अनुरोध है कि मुझे आर्थिक सहायता प्रदान करने की कृपा करेंगे।

दिनांक- 09.12.2016 आपका आज्ञाकारी छात्र

गुंजन कुमार

क्रमांक- 03

वर्ग- दशम्

अनुभाग-3

उत्तर-3 अथवा,

सेवामें,

आरक्षी अधीक्षक

मधुबनी

विषय- चोरी की बढ़ती घटनाओं के सम्बन्ध में।

महाशय,

उपर्युक्त विषय के सम्बन्ध में कहना है कि इन दिनों चोरी की घटनाएँ काफी बढ़ गइ हैं। रात-रात भर जगे रहने के बावजूद चोरी की घटनाएँ हो जाती हैं। बड़े पैमाने पर अन्न, धन एवं वस्त्र चोर उठाकर ले जा रहे हैं। स्थानीय थाना कोई कारगर कदम नहीं उठा रहा है।

BiharboardQuestionpaper.com

अत: श्रीमान् से आग्रह है कि रात्रि में पुलिस गश्ती बढ़ाने हेतु थाने को आदेश देने की कृपा की जाए ताकि गाँव वालों को चोरी की घटनाओं से निजात मिल सके।

दिनांक–09.12.2016

विश्वासी
प्रशान्त कुमार
ग्राम+पो॰– हरिपुर
मधुबनी

उत्तर–4 संज्ञा अथवा सर्वनाम का वह रूप जो वाक्य के अन्य शब्दों, विशेषत: क्रिया से अपना सम्बन्ध प्रकट करता है, कारक कहा जाता है। जैसे–कृष्ण ने पाण्डवों से कौरवों का नाश करवा दिया।

कारक के भेद:– हिन्दी में आठ कारक हैं, इनके नाम, विभक्तियाँ और लक्षण निम्नांकित हैं–

क्रम	कारक	विभक्तियाँ
1.	कर्ता	ने, शून्य
2.	कर्म	को, शून्य
3.	करण	से (द्वारा)
4.	सम्प्रदान	को, के लिए
5.	अपादान	से (वियोग)
6.	सम्बन्ध	का, के, की
7.	अधिकरण	में, पर
8.	सम्बोधन	हे, अरे, रे

उत्तर–4.अथवा,

BiharboardQuestionpaper.com

शब्द बोलते समय अर्थ उच्चारण की स्पष्टता के लिए जब हम किसी अक्षर पर अधिक बल देते हैं तब इस क्रिया को 'स्वराघात' या 'बलाघात' कहते हैं। जैसे-इन्द्र, विष्णु। इनमें संयुक्त अक्षर से पहले इ और वि पर जोर दिया गया है।

उत्तर-5. (i) नासिका

(ii) द्विगु

(iii) निजवाचक

(iv) देशज

(v) विज्ञ

उत्तर-6. (i) यह सौ रुपये का नोट है।

(ii) उसने फूलों की एक माला बनायी।

(iii) मैंने एक नाग मारा।

(iv) विष्णु के अनेक नाम हैं।

(v) हम तो अवश्य जाएँगे।

उत्तर-7. (i) (छ)

(ii) (च)

(iii) (क)

(iv) (ख)

(v) (ग)

(vi) (घ)

उत्तर-8. जातिवाद के पक्ष में इसके पोषकों का तर्क है कि आधुनिक सभ्य समाज कार्य-कुशलता क लिए श्रम-विभाजन को आवश्यक मानता है और

BiharboardQuestionpaper.com

जाति-प्रथा भी श्रम-विभाजन का ही दूसरा रूप है इसलिए इसमें कोई बुराई नहीं है।

उत्तर-9. लेखक की दृष्टि में सच्चे भारत का दर्शन भारतीय ग्रामीण जीवन में हो सकता है। भारतीय ग्राम्य संस्कृति में सच्चा भारत निहित है क्योंकि सच्चाई, प्रेम, करुणा, सहयोग की भावना ग्रामीणों में कूट-कूट कर भरी होती है। इनके समीप होने से आनन्द एवं उत्साह का भाव जागृत होता है। इनमें भारत की वास्तविक छवि की झलक मिलती है।

उत्तर-10. ईसा की आठवीं-ग्यारहवीं सदियों में नागरी लिपि पूरे देश में व्याप्त थी। अत: उस समय यह एक सार्वदेशिक लिपि थी।

उत्तर-11. बिरजू महाराज अपना सबसे बड़ा जज अपनी अम्मा को मानते थे। जब वे नाचते थे और अम्मा देखती थीं तब वे अम्मा से अपनी कमी या अच्छाई के बारे में पूछा करते थे। उन्होंने बाबूजी से तुलना करके अपने नृत्य में निखार लाने का काम किया।

उत्तर-12. (क) विष के दाँत

(ख) नलिन विलोचन शर्मा

(ग) काशू मन का बहुत बढ़ा हुआ लड़का था जिसे अपनी बड़ी बहनों एवं घर के नौकरों पर हाथ छोड़ देने में कोई गुरेज नहीं थी। इसी मनोभाव से उसने घर के बाहर भी मदन पर हाथ छोड़ दिया जो मदन के लिए असहनीय था।

उत्तर-13. जिस वाणी से 'राम' नाम का उच्चारण नहीं होता है अर्थात् भगवत् नाम के बिना वाणी विष के समान हो जाती है।

उत्तर-14. कवि ने एक वृक्ष के बहाने प्राचीन सभ्यता, संस्कृति एवं पर्यावरण की रक्षा की चर्चा की है। वृक्ष मनुष्यता, पर्यावरण एवं सभ्यता का प्रहरी है। यह प्राचीन काल से मानव के लिए वरदान स्वरूप है, मानवता का

BiharboardQuestionpaper.com

पोषक एवं रक्षक है। इन्हीं बातों का चिंतन करते हुए कवि को वृक्ष बूढ़ा चौकीदार लगता है।

उत्तर-15. कवि ने 'डफाली' शब्द उन भारतीयों के लिए कहा है जो अँगरेजी की खुशामद किया करते थे, उनकी ही प्रशंसा में लगे रहते थे।

उत्तर-16. 'मेरे बिना तुम प्रभु' कविता का वर्ण्य विषय है- विराट सत्य और मनुष्य एक-दूसरे पर निर्भर हैं।

उत्तर-17. (क) स्वदेशी

(ख) बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमधन'

(ग) कवि चिंतित है कि भारतीय संस्कृति पर अब अँगरेजी संस्कृति हावी होने लगी है क्योंकि लोग हिन्दी बोली, हिन्दुस्तानी पहनावा आदि को छोड़कर अँगरेजों जैसा व्यवहार करने लगे हैं। अँगरेजी बोलते हैं और अँगरेजों के सामान का उपभोग करते हैं।

उत्तर-18. अस्पताल ले जाने के पूर्व की रात माँ को नींद नहीं आई। उसे लेकर घर से निकलने लगी तो लगा कि ब्रह्माण्ड का भार उसके ऊपर आ गया। आँखों से सावन-भादो शुरू हो गये।

उत्तर-19. बड़े अस्पताल का डॉक्टर पेशे से कुशल और भला आदमी था। वह पप्पाति को भर्ती कर उसका इलाज करना चाहता था, किन्तु; भ्रष्टाचारियों के आगे उसकी एक न चली।

उत्तर-20. मंगम्मा दही बेचने का कार्य करती थी। उसे एक पोता भी था जिसे वह अपने प्राण से भी ज्यादा प्यार करती थी। उसकी बहू नजम्मा एक दिन बेटे को किसी गलती पर पीट रही थी। इसी पर मंगम्मा ने कहा- क्यों रे! इस छोटे से बच्चे को क्यों पीट रहो है? इस पर नजम्मा, मंगम्मा को खूब सुनाई। बस, उसी दोपहर बहू नजम्मा ने मंगम्मा के बरतन-भांडे अलग कर दिये।

बिहार बोर्ड के नए और पुराने ऑफिसियल क्वेश्चन पेपर, मॉडल पेपर, आंसर-की, पाठ्यक्रम, नोट्स, मॉक टेस्ट, सेंट-अप और प्रैक्टिकल परीक्षा प्रश्न पत्र आदि के लिए...
BiharboardQuestionpaper.com
अभी विजिट करें..

BiharboardQuestionpaper.com